CMYK

दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

n वर्ष : 10 अंक : 122 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, गुरूवार 12 जून, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 1.5 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

jaipurtimes.org twitter.com/JaipurTimes2 facebook.com/dainikjaipurtimes youtube.com/c/JaipurTimes instagram.com/jaipurtimesjt

पाकिस्तान को लेकर कसा तंज

पश्चिमी देशों को भी आतंकवाद पहुंचाएगा नुकसान : जयशंकर

जयपुर टाइम्स

ब्रसेल्स(एजेंसी)। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच हाल ही में जो टकराव हुआ, वह केवल दो पड़ोसी देशों के बीच संघर्ष नहीं था, बल्कि यह आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई थी और यही आतंकवाद एक दिन पश्चिमी देशों को भी नुकसान पहुंचाएगा। यह बात उन्होंने एक यूरोपीय समाचार वेबसाइट को बुधवार को दिए इंटरव्यू में कही। उन्होंने भारत और यूरोपीय संघ के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) की भी पैरवी की और कहा कि भारत कुशल श्रमिक और चीन की तुलना में अधिक भरोसेमंद आर्थिक साझेदारी प्रदान करता है। पाकिस्तान में खुद को सुरक्षित महसूस करता रहा बिन लादेन जयशंकर ने कहा कि'मैं आपको कुछ याद दिलाना चाहता हूं, एक व्यक्ति था ओसामा बिन लादेन। सोचिए, वह आखिर क्यों पाकिस्तान के एक सैन्य कस्बे में उसकी सैन्य अकादमी के ठीक बगल में वर्षों तक खुद को महसूस करता रहा?' पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में भारत की ओर से शुरू किए गए ऑपरेशन सिंदूर के एक महीने के बाद जयशंकर यूरोप के दौरे पर हैं। उनसे भारत और पाकिस्तान के बीच हाल ही में चार दिन तक चले संघर्ष के बारे में पूछा गया

पश्चिमी मीडिया की भी आलोचना की

उन्होंने कहा कि मैं चाहता हूं कि दुनिया यह समझे कि यह केवल भारत-पाकिस्तान का मुद्दा नहीं है। यह आतंकवाद से जुड़ा मुद्दा है और वहीं आतंकवाद एख दिन आप लोगों (पश्चिमी देशों) के लिए भी समस्या बन जाएगा। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मीडिया की आलोचना करते हुए कहा कि मीडिया ने 'ऑपरेशन सिंदूर' को केवल दो परमाणु संपन्न पड़ोसियों की प्रतिक्रिया के रूप में दिखाया, जबकि यह असल में आतंकवाद के खिलाफ एक कार्रवाई थी।

जंग के मैदान से नहीं निकलेगा समाधान

जब जयशंकर से पूछा गया कि भारत रूस पर पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों में शामिल क्यों नहीं हुआ, तो उन्होंने कहा कि भारत युद्ध को किसी समस्या का हल नहीं मानता। उन्होंने कहा, हम नहीं मानते कि युद्ध के जरिए मतभेदों को सुलझाया जा सकता है। हमें नहीं लगता कि समाधान जंग के मैदान से आएगा। यह हमारा काम नहीं है कि हम किसी समाधान को थोपें। मैं बस इतना कहना चाहता हूं कि हम न तो किसी पर अपनी राय थोप रहे हैं, न ही किसी की निंदा कर रहे हैं। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि हम पूरी तरह अलग-थलग हैं।

पहलगाम आंतकी हमले में हुई थी 22 लोगों की मौत

दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को आतंकी हमला हुआ था, जिसमें 26 लोगों की नृशंस तरीके से हत्या कर दी गई थी। इसके बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया। इस हमले के जवाब में भारत ने सात मई को पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में आतकी ठिकानों पर सटीक हमले किए थे। यह सैन्य संघर्ष चार दिन तक चला था। 10 मई को भारत और पाकिस्तान के सैन्य महानिदेशकों (डीजीएमओ) के बीच बातचीत हुई, जिसके बाद सैन्य कार्रवाई रोकने पर सहमति बनी।

भारत के यूक्रेन के साथ भी मजबूत संबंध

उन्होंने कहा कि भारत के यूक्रेन के साथ भी मजबूत संबंध हैं। यह सिर्फ रूस तक सीमित नहीं हैं। लेकिन हर देश अपने अनुभव, इतिहास और हितों के आधार पर निर्णय करता है। उन्होंने आगे कहा, भारत की सबसे पुरानी शिकायत यही रही है कि हमारी सीमाओं का उल्लंघन (देश की) आजादी के कुछ ही महीनों बाद हुआ, जब पाकिस्तान ने कश्मीर में घुसपैठ करवाई और उस वक्त जो देश सबसे ज्यादा पाकिस्तान के साथ थे, वे पश्चिमी देश थे।

बारातियों की जीप ट्रक से टकराई, दुल्हन सहित 5 की मौत

जयपुर टाइम्स

सीकर(निसं)।। जयपुर के पास मनोहरपुर दौसा नेशनल हाईवे पर बुधवार सुबह एक भीषण सड़क हादसा हो गया। इस हादसे में बड़े ट्रक और जीप की आमने सामने टक्कर हुई। इस हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई जबकि 8 लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। सभी मृतक और घायल जीप में सवार थे। जीप में दूल्हा दुल्हन और बाराती सवार थे जो मध्य प्रदेश से मनोहरपुर की ओर जा रहे थे। सामने से आ रहे ट्रक से जीप टकरा जाने से यह हादसा हो गया। घायलों को चंदवाजी स्थित निम्स अस्पताल पहुंचाया गया है। यह हादसा रायसर थाने क्षेत्र के भटकाबास गांव के पास सुबह साढे 6 बजे हुआ। थाना प्रभारी रघुवीर सिंह ने बताया कि झुंझुनूं के उदयपुरवाटी निवासी विक्रम मीणा अपनी बारात लेकर मध्यप्रदेश गया था। एक दिन पहले 18 वर्षीय दुल्हन भारती के साथ विक्रम की शादी हुई। शादी के बाद दूल्हा दुल्हन सहित सभी बाराती जीप (तूफान) में सवार होकर वापस झुंझुनूं की तरफ जा रहे थे। रास्ते में मनोहरपुर दौसा नेशनल हाईवे संख्या 148 पर बारात की जीप सामने से आ रहे ट्रक से टकरा गई। इस

हादसे में दुल्हन भारती सहित पांच लोगों की मौत हो गई जबकि दूल्हा विक्रम मीणा गंभीर रूप से घायल है। बारात की इस जीप में कुल 13 लोग सवार थे। 8 घायलों को निम्स अस्पताल में भर्ती कराया गया है जिनमें तीन की हालत गंभीर बताई जा रही है। जयपुर ग्रामीण एडिशनल एसपी नारायण लाल तिवाड़ी ने बताया कि पांच मृतकों में से चार की पहचान हो गई है। इनमें मध्य प्रदेश के शहडोल जिला स्थित मंडोली निवासी 18 वर्षीय भारती भी शामिल हैं।

औद्योगिक विकास को गति देने के लिए राज्य सरकार का महत्वपूर्ण फैसला

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दी भूमि आवंटन की स्वीकृति, बूंदी में बनेगा स्टोन पार्क

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए बूंदी जिले की तालेड़ा तहसील के कछालिया ग्राम में स्टोन पार्क की स्थापना के लिए 47.07 हैक्टेयर भूमि राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास व विनियोग निगम लिमिटेड (रीको) को आवंटित करने की स्वीकृति प्रदान की है। बजट घोषणा वर्ष 2025-26 के क्रम में राज्य सरकार का यह निर्णय प्रदेश में औद्योगिक विकास को गति प्रदान करेगा। स्टोन पार्क की स्थापना से क्षेत्र में औद्योगिक निवेश को बढ़ावा मिलेगा, स्थानीय युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे तथा खनिज आधारित उद्योगों को एक संगठित मंच उपलब्ध होगा। राज्य सरकार की ओर से यह आवंटन राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 92 के अंतर्गत भूमि सेट-अपार्ट कर और राजस्थान भू-राजस्व (औद्योगिक क्षेत्र आवंटन) नियम 1959 के नियम 11ए के तहत किया गया है। स्टोन पार्क क्षेत्र

में केवल गैर प्रदूषणकारी औद्योगिक इकाइयों की स्थापना की जाएगी और ये इकाइयां आबादी से कम से कम 1.5 किलोमीटर की दूरी पर स्थापित होंगी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य में ईआरसीपी परियोजना (रामजल सेतु लिंक परियोजना) के अन्तर्गत वन भूमि के प्रत्यावर्तन के तहत बारां जिले की छबड़ा तहसील में 34.41 हैक्टेयर भूमि वन विभाग को आंवटित करने की स्वीकृति प्रदान की है।

शिलांग कोर्ट में हुई सोनम और अन्य की पेशी

राजा की हत्या के आरोपी आठ दिन के पुलिस रिमांड पर सौंपे

जयपुर टाइम्स

शिलांग(एजेंसी)। मेघालय के चर्चित हनीमून हत्याकांड में मृतक कारोबारी राजा रघुवंशी की पत्नी सोनम रघुवंशी और उसके चार साथियों को बुधवार को शिलॉन्ग की एक अदालत में पेश किया गया। जहां सुनवाई के बाद कोर्ट सभी आठ दिन के पुलिस कस्टडी में भेज दिया है। पुलिस के अनुसार, इन सभी पर राजा की हत्या की साजिश रचने और उसे अंजाम देने का आरोप है। मामले में पूर्वी खासी हिल्स जिले के एसपी विवेक सायम ने बताया, 'पुलिस ने सभी आरोपियों की 10 दिन की रिमांड मांगी थी। अदालत ने आठ दिन की पुलिस हिरासत मंजूर की।'

यूपी के गाजीपुर से गिरफ्तार की गई थी सोनम

बता दें कि, 24 वर्षीय सोनम को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर से गिरफ्तार किया गया, जबकि उसके चार साथियों को मध्य प्रदेश के इंदौर से पकड़ा गया। सोनम को मंगलवार देर रात मेघालय लाया गया, जबकि बाकी चारों को बुधवार को ट्रांजिट रिमांड पर शिलांग लाया गया।

क्राइम-सीन रीक्रिएट करेगी मेघालय पुलिस

पुलिस अधिकारी ने बताया कि विशेष जांच दल (एसआईटी) ने अदालत से इन सभी आरोपियों की हिरासत मांगी है, ताकि मेघालय के सोहरा इलाके में हत्या की जगह का पुनर्निर्माण (क्राइम सीन रीक्रिएशन) किया जा सके।

23 मई को मेघालय गया था जोड़ा

बता दें कि, इंदौर के रहने वाले व्यापारी राजा रघुवंशी अपनी पत्नी सोनम के साथ 23 मई को मेघालय के सोहरा क्षेत्र में छुट्टियां मनाने गए थे। उसी दिन दोनों लापता हो गए थे। कई दिनों की तलाश के बाद राजा का शव 2 जून को एक गहरे गड्ढे में मिला था। पुलिस इस मामले की गहराई से जांच कर रही है और इसे साजिशन हत्या का मामला मान रही है।

गुर्जर के बाद अब जाट समाज ने भरी आरक्षण को लेकर हुंकार!

जयपुर टाइम्स

जयपुर/भरतपुर(कासं)।। प्रदेश में गुर्जर के आरक्षण के मुद्दे को लेकर सियासत गर्म है। गुर्जर आरक्षण के मुद्दे के बाद फिर से भजनलाल सरकार के समक्ष बड़ी मुसीबत खड़ी होती हुई नजर आ रही है। इस बार आरक्षण के मुद्दे को लेकर भरतपुर, धौलपुर और डीग जिले के जाट समाज ने भी हुंकार भरी है। इसको लेकर जाट समाज भी अब गुर्जर समाज के बाद 11 जून को महा पंचायत करने जा रहा है। इसको लेकर समाज ने ऐलान किया है। इस महापंचायत में आरक्षण के मुद्दे को लेकर आगे रणनीति पर विचार किया जाएगा।

डीग में आयोजित होगी जाट समाज की महापंचायत

बीते दिनों गुर्जर आरक्षण के मुद्दे को लेकर प्रदेश में काफी हलचल रही। हालांकि इस मामले में भजनलाल सरकार ने गुर्जर समाज के मुद्दे को लेकर सकारात्मक रुख अपनाकर डैमेज कंट्रोल किया है, लेकिन अब जाट समाज में भी आरक्षण को लेकर चिंगारी फिर से सुलगने लगी है। इसको लेकर जाट समाज ने 11 जून को डीग जिले के कुम्हेर के पैंगोर स्थित चामड़ माता मंदिर में महापंचायत करने का ऐलान किया है। इस महापंचायत में जाट समाज के कई प्रमुख लोग शिरकत करेंगे, जहां आरक्षण के मुद्दे को लेकर एक समिति का गठन किया जाएगा। जो समाज के आरक्षण मुद्दे को लेकर आगे की रणनीति तैयार करेंगे।

भरतपुर-धौलपुर और डीग के जाटों को रखा गया है वंचित

इधर, आरक्षण संघर्ष समिति संयोजक नेम सिंह फौजदार के अनुसार 2000 से जाट आरक्षण की मांग के लिए आंदोलन किया जा रहा है, लेकिन समाज की बात को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। उनका कहना है कि पूरे राजस्थान के जाटों को केंद्र में आरक्षण है, केवल भरतपुर, धौलपुर, डीग तीन जिले के जाटों को इससे वंचित रखा है। बता दें कि इससे पहले लोकसभा चुनाव में भी जाट समाज ने आरक्षण का मुद्दा जोर शोर से उठाया था। बता दें कि पिछले साल लोकसभा चुनाव में भी यह मुद्दा काफी गहराया। इसको लेकर संघर्ष समिति और भजनलाल सरकार के बीच वार्ता हुई। प्रतिनिधि मंडल दिल्ली भी गया, लेकिन उसका कोई नतीजा नहीं निकाला। इसके बाद जाट समाज ने लोकसभा चुनाव में भरतपुर, धौलपुर और डीग समेत जाट बाहुल्य क्षेत्रों में ऑपरेशन गंगाजल चलाया।

राजस्थान में अब अज्ञात और अनाथ रोगियों को मिलेगा मुफ्त इलाज, सरकार ने किया यह नया प्रावधान

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल पर चिकित्सा शिक्षा विभाग ने असहाय, वंचित, मानसिक रूप से अक्षम, लावारिस और अज्ञात रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए संवेदनशील कदम उठाया है. अब इन रोगियों को राजस्थान मेडिकल रिलीफ सोसायटी के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएं निःशुल्क उपलब्ध करवाई जाएंगी. इसके लिए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग और चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा एक संयुक्त एमओयू किया गया. इसके तहत रजिस्टर्ड धर्मार्थ ट्रस्ट या एनजीओ के माध्यम से चिकित्सालयों में लाए जाने वाले रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाएगी. चिकित्सा शिक्षा सचिव ने बताया कि अकसर यह देखने में आता था कि रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, धार्मिक स्थल और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर असहाय, मानसिक रूप से अक्षम, लावारिस या अज्ञात रोगी बेसहारा स्थिति में पाए जाते थे और ऐसे व्यक्तियों को धर्मार्थ ट्रस्ट या एनजीओ द्वारा चिकित्सालयों में लाया जाता था, लेकिन पहचान पत्र (आधार/जन आधार/अन्य) के

अभाव में उन्हें मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना या अन्य योजनाओं में निःशुल्क इलाज, ऑपरेशन या इंप्लांट लगाया जाना संभव नहीं हो पाता था. इन योजनाओं का लाभ लेने के लिए राजस्थान का निवासी होना एवं कोई पहचान पत्र होना आवश्यक है. ऐसे लोगों की पहचान या पता नहीं होने अथवा राजस्थान के निवासी होने का पहचान पत्र नहीं होने के कारण उपचार नहीं मिल पाता था. मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए ऐसे रोगियों को निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए थे।. इसके बाद चिकित्सा शिक्षा विभाग तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग ने ऐसे रोगियों के समुचित उपचार के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं. इनके अनुसार सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग या देवस्थान विभाग में रजिस्टर्ड ट्रस्ट या एनजीओ द्वारा लाए गए रोगियों को चिकित्सा शिक्षा विभाग के चिकित्सालयों में मुफ्त इलाज मिलेगा।

कांग्रेस में कलह का तापमान पिघला, गहलोत के प्रेम-बाण से बढ़ी सियासी हलचल

जयपुर टाइम्स

जयपुर/ दौसा(कासं.)।। राजस्थान की सियासी रणभूमि में एक बार फिर तापमान में बदलाव आ गया है। मौका था राजेश पायलट की पुण्यतिथि का, लेकिन चर्चा का केंद्र बन गए पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और सचिन पायलट के बिगड़े रिश्ते, जो इस कार्यक्रम में सुलझते नजर आए।

सभा स्थल से बाहर आए पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के बयान ने सभी को चौंका दिया। दरअसल ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि जिस मंच से कभी गहलोत ने सचिन पायलट को पार्टी विरोधी करार दिया था, उसी मंच से उन्होंने अपने पुराने शिष्य के लिए प्रेम और सौहार्द का राग अलापा। गहलोत ने मीडिया की उन खबरों को सिरे से खारिज कर दिया, जिनमें उनकी और पायलट की अनबन की बातें कही जाती रही थीं। उन्होंने

बड़े नाटकीय अंदाज में कहा कि मैं और पायलट कब अलग थे? हम तो हमेशा से साथ हैं और दोनों में खूब मोहब्बत भी है, ये तो मीडिया ही अनबन की खबरें चलाता रहता है। गहलोत के इस बयान के बाद कार्यक्रम में मौजूद भीड़ में खुसर-पुसर शुरू हो गई। लोगों के चेहरे पर एक ही सवाल था कि क्या वाकई में दूरियां मिट गईं? या ये सिर्फ एक सियासी दांव है?जिन अशोक गहलोत ने पायलट को खुलेआम पार्टी विरोधी करार दिया था, वे अब मोहब्बत की बात कर रहे हैं। गहलोत का ये बयान एक तरफ जहां पायलट समर्थकों के लिए राहत भरा था, वहीं दूसरी तरफ सियासी दिग्गजों को सोचने पर मजबूर कर गया। पिछली कांग्रेस सरकार बनने के दौरान हुई खींचतान में जब सचिन पायलट अपने समर्थक विधायकों के साथ मानेसर चले गए थे तब अशोक गहलोत ने ही पायलट पर तीखे हमले करते हुए उन्हें पार्टी विरोधी तक कह दिया था। गहलोत के इन बयानों ने कांग्रेस के भीतर की दरार को और गहरा कर दिया था लेकिन दौसा में गहलोत के बदले हुए सुर ने सबको हैरान कर दिया। अब सियासी गलियारों में कयास लगाए जा रहे हैं कि क्या ये कांग्रेस आलाकमान के दबाव का नतीजा है? या आने वाले विधानसभा चुनावों को देखते हुए गहलोत ने पायलट के साथ सुलह का रास्ता अपनाया है? कुछ विश्लेषकों का मानना है कि गहलोत शायद ये संदेश देना चाहते हैं कि पार्टी में अब कोई मतभेद नहीं हैं और सभी एकजुट होकर आगे बढ़ रहे हैं। वहीं कुछ का मानना है कि ये सिर्फ एक पॉलिटिकल स्टंट है, ताकि सचिन के समर्थक वोटरों को अपनी तरफ खींचा जा सके। हालांकि इस पूरे घटनाक्रम पर सचिन पायलट की तरफ से कोई सीधी प्रतिक्रिया नहीं आई है लेकिन उनके खेमे में खुशी की लहर साफ देखी जा सकती है। गहलोत के इस बयान को पायलट के सम्मान के रूप में देखा जा रहा है। लंबे समय से जो तल्खी दोनों नेताओं के बीच बनी हुई थी, उसे कुछ हद तक कम करने का श्रेय गहलोत के इस बयान को दिया जा रहा है। अब सबसे बड़ा सवाल ये है कि क्या गहलोत और पायलट की ये 'नई मोहब्बत' राजस्थान की सियासत में कोई नया गुल खिलाएगी? क्या दोनों नेता आगामी चुनावों में साथ मिलकर काम करेंगे और कांग्रेस को सत्ता में वापस लाने के लिए एकजुट होकर लड़ेंगे? या ये सिर्फ एक अस्थायी विराम है, जिसके बाद फिर से टकराव की स्थिति देखने को मिल सकती है? दौसा से निकले गहलोत की इस 'प्रेम-बाण' ने राजस्थान की सियासत में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। आने वाले समय में ये देखना दिलचस्प होगा कि क्या ये मोहब्बत वाकई गहरी है या सिर्फ एक सियासी दांव, जिसका मकसद सिर्फ वोट बटोरना है। फिलहाल दौसा के इस पुण्यतिथि कार्यक्रम ने सियासी पंडितों को सोचने पर मजबूर कर दिया है और जनता के मन में भी कई सवाल छोड़ दिए हैं।

केंद्रीय मंत्री एवं अलवर सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री ने किया अलवर सांसद खेल उत्सव के तहत बालिका समर कैम्प का शुभारम्भ

विकसित भारत की संकल्पना में खेल व खिलाड़ियों को आगे बढ़ाना अहम - केंद्रीय मंत्री यादव

खेल जैसे प्रतियोगी आयोजन को उत्सव का रूप देना समाज को जोडने व महिला उत्थान का संदेश है - पूर्व केंद्रीय मंत्री ईरानी

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। केंद्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री एवं अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने बुधवार को चिकानी स्थित एलआईटी कॉलेज में अलवर सांसद खेल उत्सव के तहत आयोजित समर कैम्प के द्वितीय चरण के तहत बालिकाओं के समर कैम्प प्रशिक्षण का शुभारम्भ किया। केंद्रीय मंत्री यादव ने अलवर सांसद खेल उत्सव के अंतर्गत समर कैम्प के द्वितीय चरण के तहत लड़कियों के प्रशिक्षण हेतु समर कैम्प शुभारम्भ के अवसर पर पधारकर खिलाड़ियों की हौंसला अफजाई के लिए पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी का आभार जताते हुए कहा कि ईरानी महिला सशक्तिकरण के लिए एक मिसाल हैं। इनके प्रेरणादायी उद्बोधन से निःसंदेह बेटियां प्रेरित होंगी। उन्होंने अलवर सांसद खेल उत्सव के बारे में बताते हुए कहा कि इसका उद्देश्य अलवर में खेल कल्चर विकसित करना तथा खिलाडियों को उचित प्लेटफार्म प्रदान करना है। उन्होंने कहा कि खेल उत्सव के दौरान उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को देश के श्रेष्ठ कोचेज से इस समर कैम्प में प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है। साथ ही खेलों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम गौरवांवित कराने वाले खिलाड़ियों को भी यहां आमंत्रित किया गया है। उन्होंने कहा कि 18 जून को विश्व विख्यात एथलीट अंजू बॉबी जॉर्ज भी यहां आकर खिलाडियों को खेल के टिप्स देने के साथ मॉटिवेट भी करेंगी। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण लेने वाली खिलाडियों का माई भारत पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराकर उन्हें खेल व युवा मामलो मंत्रालय की विभिन्न गतिविधियों से जोडा जा रहा है। प्रशिक्षण लेने वाली खिलाडियों को खेल पर बनी उत्कृष्ट फिल्में भी दिखाई जाएगी तथा प्रकृति से जोडने के लिए नेचर वॉक भी कराई जाएगी। उन्होंने खिलाड़ियों से आह्वान किया कि इस कैम्प से जाने के उपरान्त अपने जीवन में एक अच्छी आदत आत्मसात करें। पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की खेल व खिलाडियों को बढावा देने की भावना को दूरदराज ग्रामीण अंचल के खिलाडियों को सांसद खेल उत्सव जैसे आयोजन में मौका देने का काम केंद्रीय मंत्री व अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव ने किया है। उन्होंने कहा कि अलवर सांसद खेल उत्सव के माध्यम से जिले की सुदूर ग्रामीण क्षेत्र की बेटियों को न केवल खेलने का मौका दिया गया बल्कि देश के श्रेष्ठ प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण का भी अवसर दिया जा रहा है। साथ ही इन खेलों में विभिन्न खेलों की स्पर्धाओं के साथ दिव्यांग खिलाडियों को भी मौका दिया गया यह हर वर्ग को मौका देने का श्रेष्ठ उदाहरण है। प्रशिक्षण में खिलाड़ियों के उत्साहवर्धन के लिए देश-दुनिया में नाम करने वाले प्रसिद्ध खिलाडी भी यहां आकर खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर रहे हैं। इन खेलों में ही अंतरराष्ट्रीय स्तर की मैराथन का आयोजन कराया जा रहा है यह भी सराहनीय कदम है।

खिलाड़ियों से किया संवाद

अलवर सांसद खेल उत्सव में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर बालिका समर कैम्प में प्रशिक्षण लेने वाली 300 खिलाड़ियों से पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने संवाद कर खेलों के दौरान रहे उनके अनुभवों को जाना। ईरानी ने खिलाडियों को पूर्ण मनोयोग से प्रशिक्षण लेने हेतु प्रोत्साहित कर बालिकाओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने खिलाड़ियों से कहा कि अनुशासन और निरन्तर मेहनत के बल पर अपने लक्ष्य को अर्जित किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि खेल व पढाई का तालमेल बनाएं। अलवर निवासी पूर्व क्रिकेट खिलाडी गगनदीप ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के फिट इंडिया के नारे को धरातल पर उतारने के लिए भूपेन्द्र यादव द्वारा अलवर सांसद खेल उत्सव का आयोजन कराने के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। इस दौरान जिला प्रमुख बलबीर सिंह छिल्लर, जिलाध्यक्ष अशोक गुप्ता व महासिंह चौधरी, रामहेत यादव, बनवारी लाल सिंघल, संजय नरूका, बन्नाराम मीणा, इन्द्र यादव, मोहित यादव सहित प्रबुद्ध व्यक्ति एवं बड़ी संख्या में खिलाडी मौजूद रहे।

राजकार्य में बाधा व तोड फोड करने वाले दो ईनामी आरोपी गिरिफ्तार

2 ट्रैक्टर ट्रोली कि जब्त

जयपुर टाइम्स

रैणी(निस.) थाना पुलिस ने राजकार्य में बाधा व सरकारी वाहन में तोड़फोड़ करने वाले दो ईनामी आरोपियों को 2 ट्रैक्टर मय ट्रोली के गिरफ्तार किया। रैणी थानाधिकारी रामजीलाल मीना ने बताया कि वनपाल को फहडावती में बजरी परिवहन की सूचना मिलने पर ग्राम खेडा मंगलसिह से फहडावती वाले रास्ते पर पहुंचे तो वहां पर तीन ट्रैक्टर मय ट्रोली अवैध बजरी से भरे हुये थे। उनको रुकवाकर लेकर आने लगे तो आरोपियों ने पथराव कर सरकारी गाडी के शीशे तोडकर जाप्ते के साथ मारपीट कर ट्रैक्टर मय ट्रोली को छुडाकर ले गये। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान आरम्भ किया गया। डॉ. प्रियंका, आरपीएस, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण अलवर व मनीषा मीना, आरपीएस, वृत्ताधिकारी, वृत राजगढ, के निकटतम सुपरविजन में रामजीलाल पु.नि. थानाधिकारी थाना रैणी के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा कार्यवाही करते हुए प्रकरण में करीब 18 माह से फरार चल रहे 5 हजार रुपये आरोपी हरकेश(37) पुत्र मुरारीलाल मीना निवासी झालाटाला पुलिस थाना लक्ष्मनगढ व प्रकाश चन्द(37) पुत्र मुरारीलाल मीना निवासी झालाटाला पुलिस थाना लक्ष्मनगढ को 2 ट्रैक्टर मय ट्रोली के के साथ गिरफ्तार किया।

पंचायतराज जनप्रतिनिधियों ने जताया सांसद का आभार

जयपुर टाइम्स

बहरोड(निस.)। सरोज बस्ती राम यादव प्रधान के नेतृत्व में पंचायत समिति बहरोड पंचायत राज के जन प्रतिनिधियो महेंद्र सिंह यादव जिला परिषद, सुनील यादव जिला परिषद, सुरेश चंद्र भेडी सरपंच, सोताज सरपंच, संदीप चौधरी, बाबूलाल यादव प्राचार्य, पंचायत समिति सदस्य अमर सिंह यादव, सुरेंद्र यादव, अमरसिंह पंच, पार्षद रोहतास मेघवाल, रोहताश गुर्जर, सतीश यादव इत्यादि जनप्रतिनिधियों, सांसद भूपेंद्र यादव व केंद्रीय कैबिनेट मंत्री का ग्राम सरबिंदपुरा को नगर परिषद सीमा क्षेत्र से पृथक करने पर आभार सहित धन्यवाद ज्ञापित किया और कहा कि सांसद के प्रयासों से ईआरसीपी परियोजना में संपूर्ण कोटपूतली, बहरोड एवं अलवर जिले को शामिल करवाने तथा ERCP का अलवर में कार्यालय खुलवाने को मंजूरी दिलाकर बहुत ही ऐतिहासिक काम किया है। तथा ग्राम शेरपुर में ढाणी बावरिया वाले रास्ते को BIDA भिवाड़ी द्वारा सीसी सड़क स्वीकृत करवाने पर जिसका शिलान्यास करने हेतु गांववासियों की तरफ से निमंत्रण दिया इस पर सांसद ने शीघ्र समय देने का आश्वासन दिया।

भगवान जगन्नाथ का हुआ 108 जल कलश से पंचामृत अभिषेक

जयपुर टाइम्स

राजगढ़(निसं.) कस्बे के चौपड़ बाजार स्थित जन जन के आराध्य देव भगवान जगन्नाथ जी महाराज का 108 जल कलशों और पंचामृत से अभिषेक कराया गया। मंदिर महंत पूर्णदास व एडवोकेट मदनमोहन शास्त्री ने बताया कि ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा जिसे देव पूर्णिमा कहते हैं। इस दिन भगवान श्री जगन्नाथ जी महाराज का प्रकटोत्सव और देव स्नान पर्व मनाया जाता है। उन्होंने बताया कि घंटे घड़ियालों के साथ व शंख के उद्घोषक से भगवान श्री जगन्नाथ जी महाराज को 108 जल कलशों और पंचामृत से अभिषेक कराया गया। अभिषेक के पश्चात भगवान जगन्नाथ 15 दिनों के लिए गर्भ गृह में प्रवेश करते हैं। भगवान जगन्नाथ स्नान करने के बाद ज्वर पीड़ा होती है। ज्वर पीड़ा से निजात दिलाने के लिए भगवान जगन्नाथ 15 दिनों तक उनका औषधि युक्त काढ़े आदि से उपचार किया जाता है। आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा 26 जून को भगवान जगन्नाथ पूर्ण रूप से स्वस्थ होकर गर्भ गृह से बाहर आते हैं इसी दिन प्रातःकाल भगवान जगन्नाथ जी का नेत्र उत्सव कार्यक्रम आयोजित होगा। उसी दिन सायंकाल माता जानकी की सवारी चौपड़ बाजार श्री जगदीश मंदिर से निकलकर मुख्य मार्गों से होती हुई गंगाबाग स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर पहुंचेगी, जहां मंदिर मार्जन और गणेश पूजन का कार्यक्रम आयोजित होगा। जिसमें मेला कमेटी के सदस्य उपस्थित रहेंगे। वहीं 27 जून को सायंकाल चौपड़ बाजार स्थित मंदिर से भगवान श्री जगन्नाथ जी की 171वीं ऐतिहासिक रथयात्रा निकलेगी। इस मौके पर मंदिर महंत पूर्णदास, एडवोकेट मदन मोहन शास्त्री, रोहित शर्मा, श्री जगन्नाथ मेला कमेटी के अध्यक्ष महेन्द्र तिवारी, सचिव हरिओम गुप्ता, उपाध्यक्ष कन्हैयालाल लखेरा, डॉ खेमसिंह आर्य, चिराग सैनी, गायत्री शर्मा, यादराम सैनी, मीनू, शीला खूटेंटा, गुड्डी गुप्ता आदि मौजूद रहे ।

धर्मगुरुओं ने वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान से जुड़ने का जिलावासियों से किया आह्वान

कुएं, बावड़ियों व तालाबों को स्वच्छ रखने और अधिकाधिक संख्या में पेड़ लगाने एवं उनका संरक्षण करने की अपील की

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' को लेकर जिले के धर्मगुरुओं ने सकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए अभियान से जुड़ने के लिए आमजन से भावपूर्ण अपील की है। सरिस्का स्थित श्री पाण्डुपोल हनुमानजी मंदिर के महंत बाबूलाल शर्मा ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा गंगा दशहरा के सुअवसर पर जल के संरक्षण एवं संचयन के उद्देश्य से प्रारंभ किए गए 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' के लिए मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा को तहेदिल से धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि भौगोलिक परिस्थितियों के मध्यनजर हमारे राजस्थान में जल संरक्षण की ऐतिहासिक विरासत रही है, यहां बावड़ियों, पोखर, तालाब, टांके एवं कुई के माध्यम से प्राचीन काल से ही जल संचयन का कार्य किया जाता रहा है। इस अभियान के माध्यम से वर्तमान पीढ़ी भी जल संरक्षण की महत्वता से अवगत होगी और जल के एक-एक बूंद संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने आमजन से जल संरक्षण हेतु इस अभियान से जुड़ने की अपील की। श्री भर्तृहरि धाम के मंहत पदम नाथ ने वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान की पुनीत पहल के लिए मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा का आभार जताया। उन्होंने प्रदेश के आमजन से इस जल संरक्षण के इस पुनीत अभियान से जुड़ने की अपील की। श्री अयोध्या धाम आश्रम अलवर के महंत श्री श्री 108 गंगा दास वेदांती जी महाराज ने कहा उन्होंने प्रदेश एवं क्षेत्र के लोगों से जल संरक्षण हेतु संचालित महत्वपूर्ण अभियान में कंधे से कंधा मिला कर सहयोग का आह्वान किया। श्री जगन्नाथ मंदिर के महंत पंडित धर्मेंद्र शर्मा ने वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान को जल संरक्षण हेतु मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सराहनीय पहल बताया। उन्होंने जल की महत्वता पर प्रकाश डालते हुए आमजन से अभियान में सहभागिता की अपील की। उन्होंने कहा कि अभियान के दौरान कुओं, बावड़ियों, तालाबों की साफ-सफाई एवं जीर्णोद्धार से क्षेत्र का भूजल स्तर बढ़ेगा। देवी धोलागढ़ मंदिर (कठूमर) के महंत श्री हर्ष पंडित ने राज्य सरकार द्वारा संचालित वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान को प्रशासनीय कार्य बताया। उन्होंने कहा कि अभियान के माध्यम से वर्षा जल का संरक्षण होने से क्षेत्र का भूजल स्तर बढ़ेगा, जिससे खुशहाली आएगी।

ओरेकल टैलेंट हंट अवार्ड सेरेमनी प्रोग्राम हुआ आयोजित

जयपुर टाइम्स

राजगढ(निस.) ओरेकल टैलेंट हंट अवार्ड सेरेमनी प्रोग्राम का भव्य आयोजन किया गया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजन शर्मा रहे जो कि राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता, मोटिवेशनल स्पीकर एवं करियर काउंसलर है जिन्होंने 20 वर्षों के अनुभव के आधार पर विद्यार्थियों को करियर निर्माण, लक्ष्य निर्धारण और आत्म-प्रेरणा के विषय में मार्गदर्शन दिया इस अवसर पर कक्षा 9वीं से 12वीं तक के ओरेकल टैलेंट हंट परीक्षा में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले प्रत्येक क्लास के तीन विद्यार्थियों को कैश प्राइज कुल 335 छात्रों को हाथ घड़ी देकर सम्मानित किया गया एवं सम्मानित स्टूडेंट्स को प्राइज के अतिरिक्त स्कॉलरशिप भी दी जाएगी कक्षा 9वीं मे प्रथम स्थान लोकेश कुमार 5100 रूपये के साथ स्कॉलरशिप वही द्वितीय स्थान पर जलज शर्मा को 2100 रूपये के साथ स्कॉलरशिप तृतीय स्थान पर गोरांश पटवा को 1100रूपये के साथ स्कॉलरशिप वही कक्षा 10वी मे प्रथम स्थान पर सृष्टि भंडारी को 11000 रूपये के साथ स्कॉलरशिप वही द्वितीय स्थान पर भावेश मीणा 5100 रूपये के साथ स्कॉलरशिप वही तृतीय स्थान पर गौरव सैनी 2100 रुपये के साथ स्कॉलरशिप वही कक्षा 11वी मे प्रथम स्थान पर दिव्या जांगिड़ 5100 रूपये साथ मे स्कॉलरशिप द्वितीय स्थान पर हर्षिता शर्मा 2100 रुपये एवं स्कॉलरशिप तृतीय स्थान पर मैथिली सैनी 1100रूपये साथ मे स्कॉलरशिप वही कक्षा 12वी मे प्रथम स्थान नव्या गुप्ता 11000 रूपये साथ मे स्कॉलरशिप द्वितीय स्थान पर हेमेश सिंह 5100 रुपये साथ मे स्कॉलरशिप तृतीय स्थान पर रवीना मीणा 2100 रूपये साथ मे स्कॉलरशिप दी गयी है वही कार्यक्रम में राजन शर्मा द्वारा विद्यार्थियों को प्रेरणादायक उद्बोधन दिया गया। उन्होंने कहा कि आज के युवा यदि सही दिशा में मेहनत करें तो किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। सफलता केवल अंक प्राप्त करने में नहीं, बल्कि अपने जीवन का उद्देश्य पहचानने और उसे पाने के लिए प्रयासरत रहने में है ओरेकल एकेडमी के निदेशक मनोज सैनी ने विजयी विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को बधाई दी और संस्था के प्रिंसिपल वीरेंद्र सिंह व कैरियर इंस्टिट्यूट के सेंटर हेड हिमांशु जोशी ने भी टैलेंटेड स्टूडेंट्स को मोटिवेट करते हुए कैरियर के ऑप्शन में बारे में बताया ओर इंस्टिट्यूट के फैकल्टी व फैसिलिटी के बारे में बताया इस अवसर पर ओरेकल इंस्टिट्यूट का स्टॉफ मौजूद रहा।

तिरंगा यात्रा व श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) निकटवर्ती ग्राम खेडक़ी मुक्कड़ में शहीद देशराज सराधना के शहीद दिवस पर समाजसेवी रतनलाल शर्मा द्वारा तिरंगा यात्रा व श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान आरएसी रिजर्व पुलिस के जवानों ने भाग लिया। शहीद स्मारक पर भारत माता जिंदाबाद, शहीद अमर रहे, इंकलाब जिंदाबाद के नारों से पूरा क्षेत्र देशभक्ति में रम गया। शर्मा ने कहा कि शहीद देशराज सराधना कूपवाड़ा ऑपरेशन रक्षक 03 में 10 जून 2006 को डोडा में आतंकवादियों से लोहा लेते हुये वीरगति को प्राप्त हुये थे। उन्होंने कहा कि जो मातृभूमि पर अपने प्राणों की आहुति देता है वह हमेशा-हमेशा के लिये अमर हो जाता है। इस दौरान मंगलराम हवलदार, हरिसिंह हवलदार, राजवीर सिंह हवलदार, सुन्दर सिंह, राजेंद्र सिंह, प्रभूदयाल डेलीगेट, उमराव प्रसाद सरपंच, पृथ्वी सिंह गौ सेवक, यादराम, पूरणमल भगत, अंकित समेत अन्य मौजूद रहे।

मिशन करुणामय शुरू, बेसहारा बुजुर्ग दंपति को दिया राशन सहित घरेलू सामान

अलवर(निसं.)। नेक कमाई फाउंडेशन की ओर से डॉक्टर गोपाल राय चौधरी ट्रस्ट के सहयोग से मिशन करुणामय बुधवार से शुरू हो गया। इस अभियान की शुरुआत हुई मिशन के प्रथम दिन रावण देवरा के जंगलों में रहने वाले बुजुर्ग दंपति को राशन, कपड़े सहित अन्य घरेलू सामग्री प्रदान करके की गई। इस दंपति की आजीविका का कोई साधन नहीं है जिनके युवा पुत्र की सांप काटने से मौत हो गई थी रावणदेवरा में नेक कमाई के संरक्षक दौलत राम हजरती और मुख्य कॉर्डिनेटर अभिषेक तनेजा के नेतृत्व में एक टीम इनके जंगल में बने झोपड़े पर पहुंची। इस अवसर पर समाज सेवी सौरभ कालरा, अशोक आहूजा, जार के जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र चौहान, शिक्षाविद और समाजसेवी राज कुमार शर्मा, स्वदेश कपिल, मानवेंद्र सिंह, मोहित जैन और लक्ष्मण सिंह नरूका थे इस दंपति का घर पहाड़ी पर है जिस का मालिकाना हक नहीं होने पर लाइट नहीं लग सकती। यहां सौर ऊर्जा की लाइट लगाने की घोषणा सौरभ कालरा ने की। संरक्षक दौलत राम हजरती ने कहा कि मिशन

करुणामय में गरीब और जरूरतमंद परिवारों की उनके घर जाकर ही सहायता की जाएगी। नारी शक्ति संस्थान की ओर से समाजसेवी अशोक आहूजा ने इस परिवार के लिए जिला कलेक्टर से मिलने की बात कही। इस अभियान में स्वामी सुदर्शनाचार्य, शिखा जैन सहित बहुत से लोगों का सहयोग रहा। इस अवसर पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता पूजा को उनकी बेहतर सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया।

स्वास्थ्य विभाग द्वारा अभियान चलाकर खाद्य सुरक्षा कि कार्रवाई

1278 सैम्पल मे से 55 सैम्पल मनको पर नहीं उतरे खरे

सीएमएचओ डॉ. अरविंद गेट के नेतृत्व मे चला अभियान

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस.) राजस्थान सरकार द्वारा नवसृजित जिलों में माह जनवरी से मुख्य मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला खैरथल तिजारा के अधीन खाद्य सुरक्षा विभाग पूर्ण रूप से सुचारु किया गया जिसके फल स्वरुप जिला कलेक्टर एवं मजिस्ट्रेट किशोर कुमार के दिशा निर्देश में माह जनवरी 2025 से माह मई 2025 तक खाद्य सुरक्षा विभाग खैरथल तिजारा ने 56 प्रतिष्ठानों का निरीक्षण, 77 एनफोर्समेंट सैंपल लीगल, एवं 158 सर्विलांस सैंपल विभिन्न फर्मों से लिए गए अभी तक लिए

गए सैंपलों में कुल 13 सैंपल सब स्टैंडर्ड और 6 सैंपल अनसेफ कैटेगरी में आए हैं जिस पर एफएसएसएआई 2006 अधिनियम के तहत 6 माह की सजा और 5 लाख तक का जुर्माना प्रस्तावित है मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ अरविंद गेट ने बताया कि माह जनवरी से माह मई तक खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा कुल तीन अभियान चलाए गए हैं। जिसमें होली अभियान, ग्रीष्मकालीन अभियान और फ्रूट्स एंड वेजिटेबल अभियान 2025 प्रमुख है इन अभियानों के तहत करीब 35 सैंपल एनफोर्समेंट एवं 55 सैंपल सर्विलांस में लिए गए प्रदेश भर में पहली बार फलों एवं सब्जियों का अभियान भी चलाया गया जिसमें विशेष रासायनिक पदार्थ से फलों को पकाने की रोकथाम पर जोर दिया गया और इस तरह के विशेष केमिकल से बने फलों को अभियान के तहत करीब डेढ़ सौ किलो की मात्रा में नष्ट भी करवाया गया विशेष अभियान में करीब 500 किलो घी ,110 किलो अचार को जब्त किया गया और करीब 400 किलो दूषित पनीर, 350 किलो घी एवं डेढ़ सौ किलो दूषित मिठाई नष्ट करवाई गई खाद्य सुरक्षा अधिकारी हेमंत कुमार यादव ने बताया कि राजस्थान सरकार द्वारा जिला खैरथल तिजारा के लिए मोबाइल फूड टेस्टिंग वैन भी संचालित की जा रही है जिसमें माह जनवरी 2025 से माह मई 2025 तक कुल 1278 सैंपल लिए गए जिसमें से 55 सैंपल मांनक को पर खरे नहीं उतरे और सब स्टैंडर्ड आए मोबाइल फूड टेस्टिंग वैन में आम जनता दूध,मसाले घी और मिठाइयों की निशुल्क जांच करवा कर घर में उपयोग होने वाले खाद्य पदार्थों की मिलावट की जानकारी प्राप्त कर सकती है। टेस्टिंग वैन संपूर्ण जिले में साप्ताहिक प्रोग्राम बनाकर खाद्य पदार्थों में होने वाली मिलावट एवं आम जनता को मिलावट से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां दी जाती हैं खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा जिला खैरथल तिजारा में खाद्य पदार्थ बेचने वाले एवं होटल व्यवसाययों से जुड़े लोगों के लिए भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे फोस्ट्रेक ट्रेनिंग प्रोग्राम में करीब 10 ट्रेनिंग करवा कर 500 से ज्यादा दूधियों, किराना व्यवसायी और होटल व्यवसाईयों को निशुल्क फोसटैक सुपरवाइजर का सर्टिफिकेट प्रदान किया जा चुका है। जो कि खाद्य व्यापारियों को व्यापार करने के लिए अनिवार्य दस्तावेज है मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ अरविंद गेट ने बताया कि वर्ष 2024 से 2025 तक खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा करीब 15 प्रतिष्ठानों पर 19,40,000 रुपए का जुर्माना माननीय एडीएम कोर्ट द्वारा लगाया जा चुका है डॉ गेट ने बताया कि खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा मिलावटखोरों के खिलाफ विभाग द्वारा विशेष अभियान एवं सख्त कार्रवाइयों जिले में इसी प्रकार जारी रहेंगी।

माण्डलगढ़ पौधा रोपण कर मनाया सहकारिता दिवस

जयपुर टाइम्स

मांडलगढ़(निसं.) अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के तहत माण्डलगढ़ ग्राम सेवा सहकारी समिति में जन प्रतिनिधियों एवं किसानों ने वृक्षारोपण किया गया । जिसमे समिति अध्यक्ष इंदा विनय झंवर उपाध्यक्ष मनोज कुमार आंचलिया सेंट्रल कॉपरेटिव बैंक मैनेजर गोविंद सिंह नरुकाक्रय विक्रय सहकारी समिति के पूर्व मैनेजर सुरेंद्र सिंह हाड़ा समिति के व्यवस्था पक कुलदीप ब्रह्मभट्ट कृषि विभाग के पर्यवेक्षक सुनील चौहान सुरेंद्र वैष्णव समिति के कर्मचारी अक्षत राव कन्हैया लाल धाकड़ सहित किसान उपस्थित थे

महाविद्यालय में नई किरण नशा मुक्ति केंद्र की स्थापना की गई, जागरूक किया

जयपुर टाईम्स

चाकसू(निसं.) राजकीय महाविद्यालय में नई किरण नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत नशा मुक्ति केंद्र की स्थापना की गई। प्राचार्या डा सुनीता मीणा ने उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं को नशे से दूर रहने के लिए जागरूक किया। और युवा वर्ग की इस मुहिम में भाग लेने का आह्वान किया। राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी डॉ प्रियंका चौहान ने बताया कि पांच स्वयंसेवकों व 5 स्वयं सेविकाओं को सखा एवं सखी बनाया गया है जिसका मुख्य उद्देश्य समाज में फैल रहे विभिन्न नशा उत्पादों के प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं में चेतना अभियान चलाकर इस प्रकार की बुराई में लिप्त विद्यार्थियों की पहचान करना और उन्हें नशे से मुक्ति दिलाना है कार्यक्रम के तहत वेलियन व्याख्यान चर्चा एवं प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से समाज में सकारात्मक संदेश प्रसारित किया जाएगा। इस दौरान उपस्थित समस्त छात्र-छात्राओं एवं महाविद्यालय कार्मिकों को शपथ दिलाकर नशे से दूर रहने एवं इसमें लिपत लोगों को समझकर नशा मुक्त करवाने में हर संभव प्रयास की अपील की गई। नशे के खतरे एवं इसके दुष्परिणामों को सभी को अवगत कराया गया। इस अवसर पर डॉ सुरेंद्र सैनी, डॉ गोकुलचंद मीणा एवं समस्त संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

जातिगत जनगणना में जाति शब्द कोष्ठक (कुम्हार) प्रजापत का शब्द प्रयोग करने के लिए हुई बैठक

जयपुर टाईम्स

सांगानेर(निसं.)। सभी कुम्हार समाज बंधुओं से अपील है कि 1931 जातिगत जनगणना में जाति अनुसार सिर्फ कुम्हार जाति का कोष्ठक बना हुआ था। उसी अनुसार हम सभी कुम्हार है। भारत सरकार द्वारा 2025 मे जातिगत जनगणना कराने का फैसला लिया है।जल्द ही इसके निर्देश जारी हो जाएंगे, हमारे सभी सर्वजातीय परिवार से निवेदन है जातिगत जनगणना मे जाति शब्द कोष्ठक सूचक सिर्फ कुम्हार शब्द प्रयोग किया जावे। समाज में समय के अनुसार प्रचलन के अनुसार समाज बंधुओं ने किसी ने गोत्र, प्रजापत, प्रजापति, कुमावत सरनेम लगाना शुरू कर दिया गया है, आप सभी से स्नेहपूर्ण निवेदन है आप सभी अपनी जाति का परम्परागत संस्कृति वर्चस्व को बनाकर आगे बढ़ाने के लिए सिर्फ जाति कोष्ठक मे (कुम्हार समाज) लिखाने का राष्टीय जनगणना रजिस्ट्रार मे लिखना जरूरी है।जिससे हमारे समाज की जनसँख्या सरकार को प्रदर्शित हो हमे एकता से सिर्फ कुम्हार प्रजापत शब्द को जातिगत जनगणना में जाति रजिस्टर करवानी है इसके अलावा और जाति कोष्ठक को कराना है। सभी संस्थाओ के पदाधिकारी अपने अपने स्तर पर पर जरूर कोशिश करे . निवेदन कर्ता----धर्मेन्द्र प्रजापति भाणा जयपुर, जयराम, शंकर, मुकेश, लक्ष्मीनारायण, अंकित, सत्यनारायण,बलवंत, नेमिचन्द्र, ज्योती प्रकाश, आदि अन्य सहित मौजूद रहै ।

नगर पालिका क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर प्लास्टिक जप्ती अभियान चलाया

जयपुर टाईम्स

चाकसू(निसं.)। नगर पालिका चाकसू द्वारा राज्य सरकार के निर्देशानुसार वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत नगर पालिका क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर प्लास्टिक जप्ती अभियान चलाया गया। वहीं अभियान के दौरान नगर पालिका क्षेत्र में विभिन्न स्थानों से कुल 30 किलोग्राम प्लास्टिक केरी बेग जप्त कर 04 व्यावसायियों के 5800 रूपये के चालान किये गए। तथा सभी व्यवसायियों को भविष्य में प्लास्टिक केरी बेग की बिक्री व उपयोग न करने हेतु पाबन्ध किया गया। तथा उक्त अभियान नगर पालिका क्षेत्र में निरन्तर चलता रहेगा। जिससे राज्य सरकार से प्राप्त निर्देशों की पालना की जा सकेगी। इस दौरान कार्यवाही अधिशाषी अधिकारी डॉ बनवारी लाल मीणा के निर्देशन में की गई। तथा उक्त कार्यवाही के दौरान मौके पर जप्ती टीम में स्वास्थ्य निरीक्षक कुलजीत सिंह, कार्यवाहक स्वास्थ्य निरीक्षक कैलाश चन्द्र, कार्यवाहक जमादार बबलू, अनिल, सफाई कर्मचारी नन्दलाल, लोकेश, गिर्राज जितेन्द्र आदि उपस्थित रहें।

मरीजों के साथ दुर्व्यवहार, इलाज के लिए तड़पा रहा अस्पताल स्टॉफ

सुमेरपुर के देवल पटेल अस्पताल में अव्यवस्थाओं की रेलमपेल

चिकित्सा विभाग की मेहरबानी बनी चर्चा का विषय

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। भले ही केंद्र व राज्य सरकार आमजन को अच्छा स्वास्थ्य देने के लिए ढेरों योजनाएं चला रही है और अच्छे स्वास्थ्य का दंभ भर रही है मगर अस्पताल की आड़ में मोटी कमाई करने वाले संचालक प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के मंसूबों पर पानी फेर रहे हैं। एक ऐसा ही सनसनीखेज मामला सामने आया है मारवाड़ के सुमेर पुर कस्बे में जहां कथित देवल पटेल अस्पताल मरीजों के लिए सुविधा की बजाय दुविधा बन रहा है। इस अस्पताल के प्रबंधन और स्टाफ पर इलाज के लिए मरीज को तेज गर्मी में तड़पाने और चक्कर लगाने का गंभीर आरोप लगा है। काबिले गौर है कि राजनेताओं के संरक्षण से सुमेरपुर में निजी अस्पताल फल फूल रहे हैं और मरीजों को लूटने में लगे हुए हैं। अस्पताल में आगे मेडिकल स्टोर, दो लाख डिपॉजिट, 2 करोड़ लैबोरेटरी की कमाई और ओपीडी में 200 से 300 रुपए तो मिनिमम है ही,अब मेडिकल की भी बड़ी कमाई का हब बन चुका है। बाहर के डॉ. हर क्लब संस्था में मेंबर बनकर समाज सेवा का चोला पहन कर अलग करते हैं। इनका भगवान ही मालिक हैं। मरीजों के लिए नेताओ की जुबान तक नहीं खुल रही है और विभाग अपनी मस्ती तथा मंथली में मस्त है। डॉक्टर और स्टाफ अब मरीज के साथ, बदसलूकी, दादागिरी, गुंडागिरी करते हैं। ऐसे में इलाज के नाम पर सुमेरपुर में लूट मची हुई है। ऐसा ही नजारा गत 7 जून रविवार को देवल पटेल अस्पताल में देखने को मिला। अस्पताल के मालिक और स्टाफ ने इंसानियत की सारी हदें पार कर दी। जब एक बीमार व्यक्ति का इलाज करना था, लेकिन इलाज नहीं हुआ उनको वहां यातनाएं मिली और उनके साथ बदसलूकी, गुंडागर्दी दादागिरी की गई। लापरवाह अस्पताल के खिलाफ पांचवें दिन भी प्रशासन ने कोई कार्रवाई नहीं की जिसके कारण चिकित्सा विभाग के अधिकारियों की मिली भगत से इंकार नहीं किया जा सकता।

मरीज के साथ स्टाफ की दादागिरी

मरीज पुखराज कुमावत गत 7 जून को अपने परिवार के साथ सिर दर्द होने के कारण निजी अस्पताल देवल पटेल में इलाज कराने के लिए गए थे जहां उन्होंने सर्वप्रथम डॉक्टर की ओपीडी, लेकर आशीष मोदी से चेकअप कराया जिस पर उन्होंने ड्रिप इंजेक्शन लगाने की सलाह दी। उक्त इलाज के लिए स्टाफ ने उनको परेशान ही नहीं इतना प्रताड़ित किया कि वह और अधिक बीमार हो गए। चक्कर आने पर जमीन पर जोर से गिर पड़े, तब जाकर तीन से चार घंटे बाद उनको इलाज मिला। इलाज में देरी होती तो उनकी जान को भी खतरा था।

अस्पताल संचालक सुस्ताता रहा, मरीज बाहर तड़पता रहा

अस्पताल में इतना बड़ा मामला होने के बाद भी अपने चेंबर से अस्पताल मालिक कुर्सी से हिला तक नहीं। द्य मरीज कुमावत बाहर तड़पता रहा, अचानक तबीयत बिगड़ने पर इलाज शुरू हुआ। दरअसल मामला यह था कि बेड खाली नहीं, स्टाफ नहीं, इसमें मरीज की क्या गलती है। मरीज की एक ही गलती है कि बड़ा हॉस्पिटल देखकर वहां इलाज कराने के लिए गए, लेकिन वहां अनियमिताओं का टोटा है। वहां इलाज का बहाना और मरीजों को परेशान करना ऐसी कार्य प्रणाली से मरीज परेशान है। बता दे कि रविवार को मरीज पुखराज अपने सिर दर्द का इलाज करवाने के लिए देवल पटेल अस्पताल गए थे, वहां सब कुछ ठीक था परंतु इलाज की बात आई तब स्टाफ बहाना ही बहाना बनाने लगे। किसी ने अस्पताल से भागने की बात कही तो किसी ने बेड खाली नहीं तो किसी ने स्टाफ की कमी बताई। ऐसे में मरीज व्यक्ति इधर-उधर घंटों तक भटकता रहा उनको समय पर इलाज नहीं मिला। अंत में गस खाकर जमीन पर गिर पड़ा तब जाकर इलाज मिला। अगर इलाज नहीं मिलता तो उनकी जान भी चली जा सकती थी क्योंकि यह पिछले 3 साल से बड़े-बड़े अस्पतालों के चक्कर खा रहे हैं। उनके सर में पिछले 7 दिन से ज्यादा दर्द हो रहा था। अस्पताल में इतना सब कुछ होने के बाद भी किसी स्टाफ ने डॉक्टर से मिलने तक नहीं दिया तो उन्होंने अस्पताल के बाहर बैठने का निर्णय लिया। तब दूसरा स्टाफ आया उनको अंदर ले गए। अस्पताल की लापरवाही पर चिकित्सा विभाग ने साधी चुप्पी। इधर अस्पताल में घोर लापरवाही है, इस पर चिकित्सा विभाग ने आंखे मूंद ली है। मरीज के स्वास्थ्य पर बड़ा सवाल उठ रहे हैं। आखिर लापरवाह अस्पतालों पर कार्रवाई क्यों नहीं हो रही है। इस बात पर राज्य सरकार व चिकित्सा व स्वास्थ्य विभाग पर कई सवाल खड़े हो रहे हैं। निजी अस्पताल में रविवार को एक मरीज के साथ देवल पटेल निजी अस्पताल में हुई घटना को लेकर सभी को झकझोर कर रख दिया है। स्टाफ की इंसानियत मर चुकी है, उनकी कार्यप्रणाली बदहाल हो गई है। स्टाफ ने मरीज को अस्पताल से भागने को कहा तो मामला खूब गर्माया और तूल पकड़ता गया। यह सब कुछ मीडिया में आने के बाद भी प्रशासन पांच दिन से तमाशा देख रहा है। अस्पताल के खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया जा रहा है। इससे प्रतीत होता है कि स्थानीय नेताओं और चिकित्सा विभाग की पूरी मेहरबानी है, और कहीं ना कहीं मिलीभगत का अंदेशा है। इधर इस घटनाक्रम को लेकर मरीज कुमावत ने जिला कलेक्टर, सीएमएचओ पाली, उपखण्ड अधिकारी, मुख्य ब्लॉक चिकित्सा अधिकारी, को पत्र लिखकर उचित कार्रवाई की मांग की है। यदि 10 दिन के भीतर कठोर से कठोर कार्यवाही नहीं की गई तो वे अपने परिवार सहित अस्पताल के बाहर अनिश्चितकालीन धरने पर बैठेंगे। जिसकी जिम्मेदारी जिला प्रशासन व अस्पताल प्रशासन की होगी।

अस्पताल स्टाफ की काली करतूत

मामला यह था कि इंजेक्शन और ड्रिप लगवाने के लिए बीमार व्यक्ति को ऊपर नीचे इधर-उधर भटकाते रहे। कभी स्टाफ नहीं तो कभी बेड खाली नहीं, का बहाना करते गए। इलाज के चक्कर में 4 घंटे मरीज अस्पताल में भटकता रहा। लेकिन मरीज की हालत को नहीं समझा। देवल पटेल अस्पताल की कार्यशैली को देखकर मरीज कुमावत ने चिल्लाते हुए दवाई रिटर्न की तब वहां खड़े दूसरे स्टाफ ने आकर पूछा तो मरीज ने अपनी पूरी कहानी बताई। उन्होंने कहा कि रुको मैं आपका इलाज करवाता हूं, तब उन्होंने मरीज को ड्रेसिंग रूम में खाली पड़े बेड पर लिटाया जहां प्रवीण कुमार नामक व्यक्ति आया तो मरीज को वहां से हटाने के लिए बोला तो उन्होंने मना कर दिया। जैसे ही मना किया तो प्रवीण कुमार ने आवेश में आकर मरीज को धक्का देकर बाहर निकलने को कहा तो मामला और बिगड़ गया। अस्पताल में लोग इकट्ठे हो गए। इस घटनाक्रम पर अस्पताल प्रशासन पर कई सवाल खड़े हो रहे हैं कि उनकी इतनी बड़ी स्टाफ की हिम्मत कैसे हुई। एक मरीज को इलाज करने की बजाय अस्पताल से भगाने की। क्या उन्होंने ओपीडी नहीं ली, दवाई का बिल नहीं चुकाया तो आखिर ऐसा क्या हुआ, इस पर पर कई सवाल उठ रहे हैं। इधर इस मामले को बुधवार को पांचवा दिन है लेकिन जिला प्रशासन और अस्पताल प्रशासन ने दोषी स्टाफ के ऊपर कोई कार्रवाई नहीं की है।

कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत के प्रयास रंग लाए

सुमेरपुर विधानसभा में चार चिकित्सालयों को मिलेंगे नए भवन

कुल 6.36 करोड़ स्वीकृत

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.) विधानसभा क्षेत्र के निवासियों के लिए बड़ी खुशखबरी है। कैबिनेट मंत्री श्री जोराराम कुमावत जी के प्रयासों से सुमेरपुर ब्लॉक के चार प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) - बामनेरा, बासांत, दुजाना और पावा - के लिए नए भवन स्वीकृत हुए हैं। इन चिकित्सालयों के वर्तमान भवन जर्जर हो चुके थे ।मरीजों एवं चिकित्साकर्मियों को असुविधाओं का सामना करना पड़ रहा था। स्थानीय निवासियों और जनप्रतिनिधियों द्वारा नए भवनों की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। इस आवश्यकता को गंभीरता से लेते हुए, कैबिनेट मंत्री कुमावत ने इस मामले को सरकार के समक्ष पुरजोर तरीके से रखा।इसी के परिणाम स्वरूप नए भवनों के निर्माण के लिए आवश्यक स्वीकृति प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन नवीन भवनों के निर्माण से क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं में महत्वपूर्ण सुधार आएगा। आधुनिक सुविधाओं से युक्त ये भवन मरीजों को बेहतर और आरामदायक वातावरण प्रदान करेंगे,एम। साथ ही चिकित्साकर्मियों को भी अधिक कुशलता से कार्य करने में सहायक होंगे। प्रत्येक भवन के निर्माण के लिए ?159.00 लाख की राशि स्वीकृत की गई है, (कुल 6.36 करोड़)जिससे यह सुनिश्चित होगा कि गुणवत्तापूर्ण निर्माण कार्य समय पर पूरा हो सके। इस पर जोराराम जी कुमावत ने कहा कि "क्षेत्र के लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता है। इन नए भवनों के बनने से सुमेरपुर ब्लॉक के दूर-दराज के गांवों के लोगों को भी आधुनिक चिकित्सा सेवाओं का लाभ मिल सकेगा।" उन्होंने इसके लिए मुख्यमंत्री और राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया और कहा कि वे क्षेत्र के विकास के लिए लगातार प्रयासरत रहेंगे। स्थानीय निवासियों ने भी इस पहल का स्वागत किया है और कैबिनेट मंत्री कुमावत के प्रति आभार व्यक्त किया है। उनका मानना है कि नए भवनों के निर्माण से क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं को एक नई दिशा मिलेगी और लोगों को इलाज के लिए दूर शहरों की ओर रुख नहीं करना पड़ेगा। इन नवीन भवनों का निर्माण वर्ष 2025-26 में पूरा होने की संभावना है।जिससे क्षेत्र के लोगों को जल्द ही आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ मिल सकेगा। यह विकास सुमेरपुर ब्लॉक के स्वास्थ्य क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

योग महोत्सव-2025

नगर निगम ग्रेटर मुख्यालय पर अधिकारियों, कर्मचारियों ने किया योगाभ्यास

12 जून 2025 को स्मृति वन सीकर रोड़ पर आयोजित किया जायेगा तीसरा योग शिविर

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। नगर निगम ग्रेटर द्वारा जयपुर योग महोत्सव-2025 के तहत लग रहे योग शिविरों के आयोजनों की श्रृखंला के अन्तर्गत बुधवार को नगर निगम ग्रेटर मुख्यालय पर अधिकारियों, कर्मचारियों द्वारा योगाभ्यास किया गया। योगाचार्य ढाकाराम द्वारा योग मंत्रों के उच्चारण के साथ भस्त्रिका प्रणायाम, ताड़ासन, हास्य योग करवाये गये साथ ही योग करने के फायदे भी बताये। उन्होंने बताया कि योग करने से मानसिक एवं शारीरिक रूप से ऊर्जा का स्तर बढ़ता है। इसलिये प्रतिदिन 15 मिनट योग के लिये निकाले। महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने बताया कि नगर निगम ग्रेटर में गतवर्षो से लगातार 9.30 बजे से 9.45 बजे तक योग मंत्रों के साथ योगाभ्यास किया जाता है। अब यह योगाभ्यास 9.45 बजे से 10.00 बजे तक किया जायेगा। इससे कार्मिकों के कार्यो में कुशलता आती है शारीरिक एवं मानसिक ऊर्जा का स्तर बढ़ता है। इस वर्ष योग दिवस की थीम "Yoga of One Earth, One Health" है। इसीलिये योग शिविरों में पौधारोपण किया जा रहा है यज्ञ भी किया जा रहा है। जिससे मन की शुद्धि के साथ-साथ पर्यावरण की भी शुद्धि हो सके। गौरतलब है कि नगर निगम ग्रेटर द्वारा 8 जून से प्रातः 6.00 बजे से विभिन्न स्थानों पर योग शिविर लगाये जा रहे है प्रथम शिविर झोटवाड़ा के बायोडायवर्सिटी पार्क में लगाया गया। दूसरा शिविर नगर निगम ग्रेटर मुख्यालय पर लगाया गया एवं आगामी शिविर 12 जून को स्मृति वन सीकर रोड़ पर आयोजित किया जायेगा। इसके बाद 13 जून को सिटी पार्क मानसरोवर में शिविर लगाया जायेगा। 14 एवं 15 जून को 30 घंटे अखंड योग का आयोजन श्री हरिशचंद तोतुका भवन नारायण सिंह सर्किल किया जायेगा जिसमें 100 से अधिक संस्था भाग लेगी जिसमें योग के साथ अनवरत यज्ञ भी किया जायेगा जिससे पर्यावरण शुद्ध होगी।

ईआरसीपी से लालसोट को मिलेगा चम्बल, काली सिंध और पार्वती का जलः जल संसाधन मंत्री

लालसोट में 40 करोड़ की लागत से निर्मित एनिकटों का हुआ लोकार्पण, जल संरक्षण पर दिया जोर

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने कहा कि पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) के माध्यम से चम्बल, काली सिंध और पार्वती नदियों का पानी अब लालसोट तक पहुंचेगा, जिससे क्षेत्र की जनता और खेतों की प्यास बुझेगी। वे बुधवार को लालसोट के पास समेल गांव में करीब 20-20 करोड़ की लागत से निर्मित दो एनिकटों के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की प्राथमिकता में जल संकट से जूझ रहे पूर्वी राजस्थान को राहत दिलाना है। इसी सोच के तहत उन्होंने ईआरसीपी को धरातल पर उतारने का निर्णय लिया, जिससे पूर्वी राजस्थान के 17 जिले जुड़ेंगे। परियोजना का टेंडर हो चुका है और कार्य प्रारंभ हो गया है। लालसोट क्षेत्र का मोरेल बांध भी इस योजना से जोड़ा गया है तथा अन्य बांधों को जोड़ने पर विचार चल रहा है। मंत्री ने कहा कि योजना पूर्ण होने पर व्यर्थ बहने वाला बरसाती पानी संरक्षित होकर पेयजल, सिंचाई और उद्योग-धंधों के काम आएगा। इससे क्षेत्र में खुशहाली आएगी। जल संरक्षण अभियान 'वंदे गंगा' का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि जल ही जीवन है और इसे हम पैदा नहीं कर सकते, केवल संरक्षित ही कर सकते हैं। उन्होंने पारंपरिक जल स्रोतों जैसे बावड़ियों, कुओं और तालाबों के संरक्षण की आवश्यकता बताई। मुख्यमंत्री द्वारा शुरू किए गए दो सप्ताह के जल संरक्षण अभियान की सराहना करते हुए उन्होंने आमजन से अपील की कि बरसात के अमृततुल्य जल को बचाने के लिए सभी लोग तालाबों, नदियों और जल स्रोतों के किनारे जनजागरण करें और इस पुनीत कार्य से जुड़ें।

जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री ने ली उदयपुर में संभाग स्तरीय बैठक, जल योजनाओं की प्रगति की समीक्षा

जयपुर टाइम्स

जयपुर/उदयपुर(कासं.)। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं भू-जल विभाग मंत्री कन्हैयालाल बुधवार को उदयपुर पहुंचे और पटेल सर्किल स्थित पीएचईडी अतिरिक्त मुख्य अभियंता कार्यालय सभागार में संभाग स्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में उदयपुर एवं बांसवाड़ा संभाग के अधिकारियों से जल जीवन मिशन, समर कंटीजेंसी, बजट घोषणाएं और अन्य जल परियोजनाओं की प्रगति की विस्तृत जानकारी ली गई। मंत्री कन्हैयालाल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि प्रगतिरत हैंडपंप और ट्यूबवेल निर्माण कार्यों को जून माह में हर हाल में पूर्ण करें। उन्होंने निर्माण कार्यों की गुणवत्ता और समयबद्धता पर जोर देते हुए कहा कि सरकारी धन का सदुपयोग सुनिश्चित हो। साथ ही बीएसआर दरों के अनुसार निविदाएं आमंत्रित करने तथा पुरानी रेट कॉन्ट्रैक्ट पर कार्य नहीं कराने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रतिस्पर्धात्मक दरों पर गुणवत्तापूर्ण कार्य करने वाले संवेदकों को अवसर देने की बात कही जिससे सरकारी खजाने पर बोझ भी कम हो और कार्य की गुणवत्ता भी बनी रहे। अमृत 2.0 योजना की समीक्षा करते हुए उन्होंने इसे महत्वपूर्ण परियोजना बताया और तकनीकी स्वीकृतियों की स्थिति की जानकारी ली। जल जीवन मिशन पर चर्चा करते हुए मंत्री ने कहा कि पेयजल आमजन की बुनियादी आवश्यकता है और यह सुनिश्चित करना अधिकारियों की जिम्मेदारी है कि किसी को परेशानी ना हो। उन्होंने ठेकेदारों से नियमित संवाद और अधिकारियों द्वारा हर माह कम से कम 5 परियोजनाओं के औचक निरीक्षण की आवश्यकता बताई। उन्होंने निर्देश दिए कि जब तक जल टंकी में पानी नहीं पहुंचता, तब तक नल कनेक्शन नहीं दिए जाएं। लापरवाह संवेदकों पर सख्त कार्रवाई करने और बेहतर काम करने वालों को प्रोत्साहन देने के निर्देश भी दिए। मंत्री ने बजट की कोई कमी नहीं होने और ओटीएमपी के लंबित भुगतान इसी माह में निपटाने का आश्वासन भी दिया।

संसार की सत्ता परमात्मा ही संचालित करते है- वैष्णव

मांडलगढ़(निसं.)। हजारों मटकिया रख सभी में जल भर ले और उन्हें देखने पर सभी में सूर्य का प्रति बिम्भ दिखाई देता हमें सूर्य एक ही रहता है उसी तरह हजारों करोड़ों जीवों में भी वही एक परमपिता परमेश्वर भी एक ही है । संपूर्ण संसार की सत्ता वही एक परमात्मा संचालित करता है। यह विवार मंगलवार को आखरिया बस स्टैण्ड के समीप सारस्वत मंगल कार्यालय पर आयोजित सप्त दिवसीय संगीतमय शिव महापुराण की कथा के प्रवचन करते हुए कथा वाचक घनश्याम वैष्णव ने प्रकट किए।

ट्रंप पर भरोसा करने से बचे भारत

संजीव ठाकुर
स्तंभकार, चिंतक, लेखक, रायपुर छत्तीसगढ़

राष्ट्रपति चुनाव जीतने के बाद ट्रंप ने जनवरी में अपने भरोसेमंद और अरबपति व्यापारी जेंट्री बीच को निवेशकों के एक दल के साथ पाकिस्तान भेजा। उन्होंने वहां जाकर खनिज संबंधी कुछ समझौते किए और पीएम शाहबाज शरीफ से भी मिले। जेंट्री को ट्रंप का अघोषित विशेष दूत माना जाता है। जेंट्री जब अमेरिका लौटे तो उन्होंने पाकिस्तान की इस कदर तारीफ की कि शायद पाकिस्तानी भी हैरत में बोल पड़े हों कि हमारा देश इतना अच्छा है और हमें ही पता नहीं। लगता है जेंट्री के इस्लामाबाद दौरे के बाद ही ट्रंप को पाकिस्तान को लेकर नई दृष्टि प्राप्त हुई। इसका प्रमाण यह है कि इसी आठ जून को उन्होंने अमेरिका को सुरक्षित रखने के लिए 12 देशों के लोगों पर पूर्ण और सात देशों के नागरिकों पर आंशिक प्रतिबंध लगाया। इन देशों की सूची में अफगानिस्तान, ईरान, लीबिया, सोमालिया, सूडान, यमन, म्यांमार, चाड, कांगो, क्यूबा, वेनेजुएला, तुर्कमेनिस्तान आदि का नाम तो है,

अमेरिका को फिर से महान बनाने के नारे के साथ राष्ट्रपति बने डोनाल्ड ट्रंप फिलहाल लास एंजिलिस को हिंसा से बचाने के लिए जूझ रहे हैं। यह हिंसा इसलिए भड़की, क्योंकि ट्रंप अवैध आप्रवासियों के खिलाफ सख्त अभियान छेड़े हुए हैं। लास एंजिलिस में अवैध आप्रवासी और उनके हमदर्द संगठन ट्रंप के खिलाफ सड़कों पर उतर आए और उन्होंने इमिग्रेशन एंड कस्टम्स इनफोर्समेंट (आइसीई) को निशाना बनाना शुरू कर दिया।

नतीजा बेकाबू हिंसा के रूप में सामने आया। ट्रंप अवैध आप्रवासियों के खिलाफ इसलिए सख्ती बरत रहे हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि इससे ही मागा (मेक अमेरिका ग्रेट अगेन) समर्थक खुश होंगे। अवैध आप्रवासियों को निकालने में हर्ज नहीं, लेकिन उस तरह नहीं, जैसे ट्रंप निकाल रहे हैं, क्योंकि भारतीय छात्रों समेत वैध तरीके से अमेरिका गए अन्य देशों के लोग भी आइसीई की की सख्ती की चपेट में आ रहे हैं। पता नहीं ट्रंप अवैध आप्रवासियों को निकाल कर अमेरिका को महान बना पाएंगे या नहीं, लेकिन भारत को उनसे सतर्क हो जाना चाहिए। केवल इसलिए नहीं, क्योंकि वह वैध आप्रवासियों को भी तंग कर रहे हैं। भारत को इसलिए भी चिंतित होना चाहिए कि ट्रंप ने पाकिस्तान को एक तरह से गोद ले लिया है। इसकी पुष्टि पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान के विरुद्ध भारत की सैन्य कार्रवाई पर उनके अजीब रवैये से हुई थी। वह व्यापार का लालच देकर इस सैन्य संघर्ष को थामने का श्रेय लेने से बाज नहीं आ रहे हैं। ऐसा करते हुए वह पाकिस्तान का गुणगान करना भी नहीं भूल रहे हैं।

ट्रंप की मानें तो पाकिस्तान ग्रेट नेशन है और वहां के लोगों ने कुछ शानदार चीजें बनाई हैं। दुनिया तो यही मानती है कि पाकिस्तान आतंकियों की फैक्ट्री है। अपने पहले कार्यकाल में ट्रंप भी ऐसा ही मानते थे और उसे धोखेबाज, अमेरिका को मूर्ख बनाकर पैसे ऐंठने एवं आतंकियों को पालने वाला कहते थे, लेकिन दूसरे कार्यकाल में वह उसके मुरीद बन गए। उनकी ओर से पाकिस्तान की तारीफ के पुल बांधने के पीछे उनके बेटों के स्वामित्व वाली क्रिप्टो कंपनी वर्ल्ड लिबर्टी फाइनेंशियल (डब्लूएलएफ) और पाकिस्तान क्रिप्टो काउंसिल (पीसीसी) के बीच हुए समझौते को माना जा रहा है। यह समझौता पहलगाम हमले के पांच दिन बाद 27 अप्रैल को हुआ था, लेकिन इस समझौते के पहले भी कुछ संदेहास्पद हुआ था।

राष्ट्रपति चुनाव जीतने के बाद ट्रंप ने जनवरी में अपने भरोसेमंद और अरबपति व्यापारी जेंट्री बीच को निवेशकों के एक दल के साथ पाकिस्तान भेजा। उन्होंने वहां जाकर खनिज संबंधी कुछ समझौते किए और पीएम शाहबाज शरीफ से भी मिले। जेंट्री को ट्रंप का अघोषित विशेष दूत माना जाता है। जेंट्री जब अमेरिका लौटे तो उन्होंने पाकिस्तान की इस कदर तारीफ की कि शायद पाकिस्तानी भी हैरत में बोल पड़े हों कि हमारा देश इतना अच्छा है और हमें ही पता नहीं। लगता है जेंट्री के इस्लामाबाद दौरे के बाद ही ट्रंप को पाकिस्तान को लेकर नई दृष्टि प्राप्त हुई। इसका प्रमाण यह है कि इसी आठ जून को उन्होंने अमेरिका को

सुरक्षित रखने के लिए 12 देशों के लोगों पर पूर्ण और सात देशों के नागरिकों पर आंशिक प्रतिबंध लगाया। इन देशों की सूची में अफगानिस्तान, ईरान, लीबिया, सोमालिया, सूडान, यमन, म्यांमार, चाड, कांगो, क्यूबा, वेनेजुएला, तुर्कमेनिस्तान आदि का नाम तो है, लेकिन पाकिस्तान का नहीं। क्यों नहीं है, इसका जवाब ट्रंप या उनके करीबी ही दे सकते हैं। माना जाता है कि कुछ रिपब्लिकन सांसदों समेत ट्रंप के करीबियों को रिझाने और उनमें से एक जेंट्री बीच को पाकिस्तान ले जाने और डब्लूएलएफ एवं पीसीसी में आनन-फानन समझौता कराने के पीछे वाशिंगटन स्थित पाकिस्तानी दूतावास और उसके लिए लाबिंग करने वालों का हाथ है। यह ध्यान रहे कि ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद जब प्रधानमंत्री मोदी अमेरिका गए थे, तब दोनों देशों की ओर से जारी साझा बयान में आतंकवाद की निंदा की गई थी और मुंबई एवं पठानकोट हमलों के गुनहगारों को न्याय के कठघरे में खड़ा करने तथा इस्लामाबाद से यह सुनिश्चित करने को कहा गया था कि उसकी जमीन का इस्तेमाल किसी तरह की आतंकी गतिविधियों के लिए न होने पाए।

क्या यह विचित्र नहीं कि यही पाकिस्तान अब ट्रंप को अचानक ग्रेट नेशन नजर आने लगा? हम इसकी भी अनदेखी नहीं कर सकते कि ट्रंप ने अवैध तरीके से अमेरिका गए भारतीयों को किस तरह हथकड़ी-बेड़ी लगाकर भेजा और टैरिफ के मामले में कैसा रवैया अपनाया। उन्होंने भारत में आइफोन बनाने वाली कंपनी एपल को भी चेताया कि वह ऐसा करेगी तो 25 प्रतिशत टैरिफ लगाएंगे। इसके पहले वे हार्ले डेविडसन मोटरसाइकिल पर अधिक टैरिफ का रोना रोते हुए भारत को टैरिफ किंग कह चुके हैं। यह भारत के कथित मित्र देश के शासनाध्यक्ष जैसा व्यवहार तो कतई नहीं है। ट्रंप के दोबारा व्हाइट हाउस पहुंचने के बाद दोनों देशों के रिश्ते और मजबूत होने की जो उम्मीद की जा रही थी, वह अब दरकती दिख रही है। इसे लेकर मतभेद हैं कि अमेरिका के विदेश मंत्री रहे हेनरी किसिंजर ने वास्तव में कभी ऐसा कहा था- "अमेरिका का दुश्मन होना खतरनाक हो सकता है, लेकिन दोस्त होना जानलेवा होता है", लेकिन यह सही साबित होता दिख रहा है। दोस्तों को दगा देना अमेरिका की पुरानी आदत है।

बात केवल इतनी ही नहीं कि पाकिस्तान किसी तरह ट्रंप और उनके करीबियों को रिझाने में सफल हो गया। यही काम ट्रंप और उनके करीबी भी कर रहे हैं। पाकिस्तान में अमेरिका की कार्यवाहक राजदूत नताली ए बेकर पीएसएल का फाइनल मुकाबला देखने पहुंचीं। वह लाहौर कलंदर को सपोर्ट कर रही थीं और उसकी शर्ट भी पहने थीं। मैच के पहले भारत के खिलाफ पाकिस्तान सेना की बहादुरी" बयान करने के लिए एक कार्यक्रम रखा गया। इसमें पाकिस्तानी सेना के शीर्ष अधिकारी भी थे और नताली बेकर भी। क्या नताली भी यह जताना चाहती थीं कि पाकिस्ताना सेना ने वाकई भारत पर जीत हासिल की? जो भी हो, इसमें संदेह नहीं कि ट्रंप पाकिस्तान को यह संदेश देने में लगे हुए हैं कि अब उसके प्रति उनका रवैया बदल गया है। यह तो सबको पता ही है कि हाल में ट्रंप जब पश्चिम एशिया गए तो उन्होंने सीरिया के अंतरिम राष्ट्रपति अहमद अल-शरा से मुलाकात की। यह वही अल शरा है, जो अलकायदा एवं इस्लामिक स्टेट में रह चुका है और जिस पर अमेरिका ने इनाम रखा था। इसे सुरक्षा परिषद ने वैश्विक आतंकी घोषित किया था। अल शरा उर्फ अबू मोहम्मद अल-जुलानी ने अल-नुसरा फ्रंट नाम से अपना अलग आतंकी गुट बनाया था। फिर इसका नाम हयात तहरीर अल-शाम रखा और कुछ समय पहले राष्ट्रपति बशर अल असद को बेदखल कर सीरिया पर कब्जा करने में सफल रहा।

ट्रंप ने भारत की चिंता बढ़ाने वाला एक और काम किया है। उन्होंने 16 मई को अमेरिकी धार्मिक स्वतंत्रता आयोग के तीन सलाहकार बोर्डों में से एक में दो ऐसे सदस्य बनाए, जिन्हें लेकर विवाद छिड़ा है। ये हैं शेख हमजा यूसुफ और इस्माइल रोयर। दोनों को जिहादी सोच वाला कहा जा रहा है। दोनों मतांतरित मुस्लिम हैं। एक समय एफबीआइ ने हमजा से पूछताछ भी की थी। हमजा से ज्यादा गंभीर मामला रैंडल टाड रोयर उर्फ इस्माइल रोयर का है। उसने 1992 में इस्लाम अपनाया और फिर पाकिस्तान जाकर लश्कर के ट्रेनिंग कैंपों में जिहाद का प्रशिक्षण लिया। इस दौरान उसने सीमा पार से कश्मीर में सुरक्षा चौकियों पर गोलीबारी भी की।

सम्पादकीय

दुनिया में खसरे की वापसी, बच्चों की सेहत पर मंडरा रहा बड़ा खतरा

खसरे का संक्रमण एक बार फिर अपने पांव तेजी से पसार रहा है। यह किसी एक देश की बात नहीं, बल्कि दुनिया भर में खसरे के मामले बढ़ रहे हैं। इससे संबंधित एक हालिया रपट ने विश्व भर के स्वास्थ्य विशेषज्ञों को चिंता में डाल दिया है। इसके मुताबिक, वर्ष 2023 में पूरी दुनिया में खसरे के एक करोड़ तीन लाख मामले सामने आए, जो 2022 की तुलना में 20 फीसद अधिक हैं। इसे अमेरिका, यूरोप, भारत और आस्ट्रेलिया सहित कई देशों के लिए नई चुनौती के रूप में देखा जा रहा है। खसरा सबसे ज्यादा बच्चों को प्रभावित करता है और इसे टीकाकरण से रोका जा सकता है। मगर सवाल यह है कि जब दुनिया भर में इस संक्रमण का टीका वर्षों से उपलब्ध है, तो इसकी चाल फिर तेज क्यों हो रही है? इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं, जिनमें वैश्विक स्तर पर खसरे से निपटने के उपायों में ढिलाई से भी इनकार नहीं किया जा सकता है। गौर करने वाली बात है कि खसरे से बचने के लिए तैयार किया गया टीका वर्ष 1963 से ही दुनिया भर में उपलब्ध है और इसके प्रभावशाली नतीजे भी सामने आए हैं। मगर पिछले कुछ वर्षों में इसके संक्रमण के मामले बढ़ना भारत समेत दुनिया के तमाम देशों के लिए एक चेतावनी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और अमेरिका की स्वास्थ्य संस्था सेंटर फार डिजीज कंट्रोल (सीडीसीसी) की रपट के अनुसार, भारत उन 57 देशों में से एक है, जहां वर्ष 2023 में खसरे के मामले बढ़े हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि वैश्विक स्तर पर इस संक्रमण के फैलने की घटनाएं 20 फीसद बढ़ी हैं। अमेरिका में तो वर्ष 2000 में खसरे के उन्मूलन की घोषणा कर दी गई थी, लेकिन पच्चीस साल बाद वहां की स्वास्थ्य संस्था सीडीसी ने इस साल जनवरी से मई तक देश में खसरे के 900 मामले सामने आने की पुष्टि की है। आस्ट्रेलिया में इस साल के शुरुआती पांच महीनों में खसरे के 77 मामले दर्ज किए गए हैं, जबकि 2024 में यहां कुल 57 मामले सामने आए थे। यूरोप में पिछले 25 वर्षों की तुलना में खसरे के सबसे अधिक मामले वर्ष 2024 में दर्ज किए गए। मौजूदा स्थिति को देखते हुए ऐसा लगता है कि दुनिया भर में खसरे के टीकाकरण कार्यक्रम की समीक्षा करने का वक्त आ गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रपट में कहा गया है कि कोरोना महामारी भी खसरे का संक्रमण बढ़ने की एक वजह बनी है। उस दौरान लोगों का ध्यान कोरोना के टीके लगवा कर इससे बचने पर था। इससे खसरे का टीकाकरण प्रभावित हुआ। मगर, यह भी सच है कि कोरोना काल के बाद सरकारी स्तर पर खसरे के संक्रमण को रोकने को लेकर जो सक्रियता दिखाई जानी चाहिए थी, उसका अभाव रहा। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के मुताबिक, खसरे से संक्रामित व्यक्ति कई लोगों में संक्रमण फैला सकता है। लिहाजा दुनिया के लिए यह सावधान होने की घड़ी है। व्यापक स्तर पर टीकाकरण के बिना इस बीमारी से सुरक्षा पाना मुश्किल है। इस रपट के सामने आने के बाद विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी सलाह दी है कि सभी देशों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चों को टीके की दो-खुराक अवश्य मिले।

पृथ्वी की उष्णता और जटिल समाधान

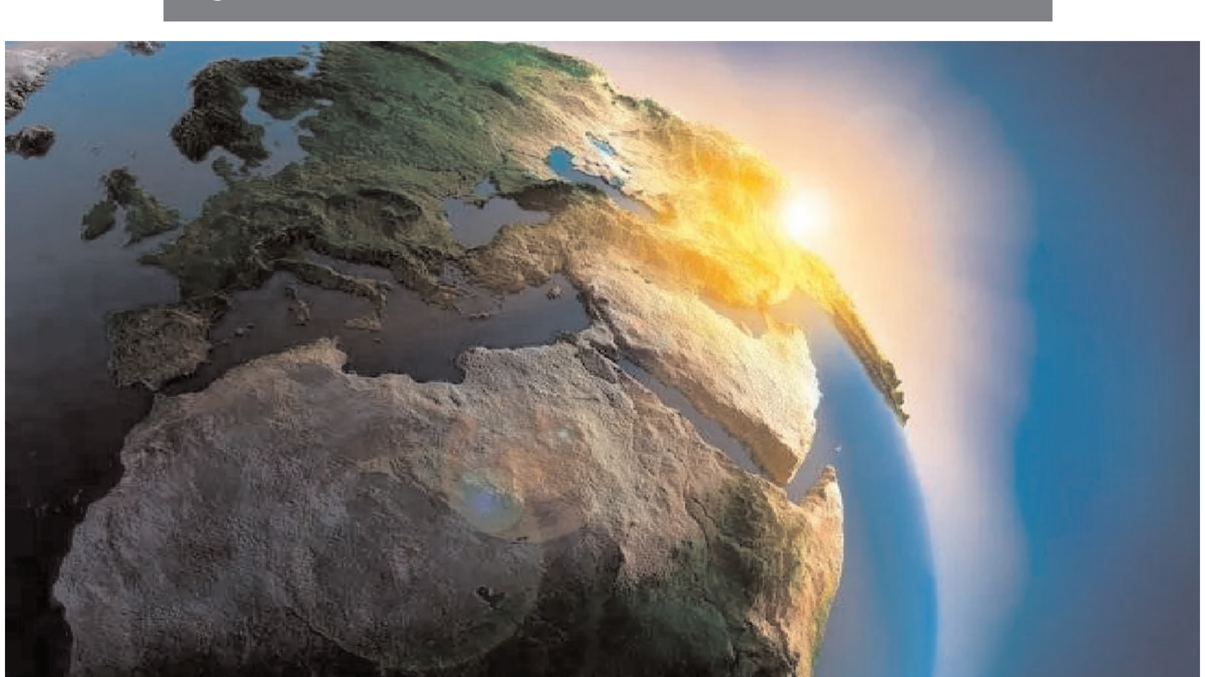

आजादी हमें मिली है यानी कि मानव को परंतु प्रकृति आजादी से अछूती रही है। अमूमन हमारी जरूरत रोटी, कपड़ा, मकान और जल की थी कि हमको उद्योग धंधे का विकास तीव्र गति से करना पड़ा। मशीनें जितनी बड़ी से बड़ी होती गई आदमी उतना ही बौना होता गया।जब हम अपने विकास का इतिहास देखते हैं तो ब्रिटिश सत्ता के दौरान हमारे संसाधनों का प्रकृति का अंधाधुंध दोहन होता रहा है। कृषि में नई नई तकनीक ट्रैक्टर, रसायनिक उर्वरक, कीटनाशकों के प्रयोग से भूमि बंजर होकर कराहाने लगी। विकास का सही मायने माननीय शक्तियों के साथ ऊर्जा और उसकी शक्ति तथा सामर्थ्य का सही उपयोग ही होगा। जब से हमने विकास के पथ पर उड़ान भरी है उद्योगों की चिमनी यों को ऊपर उठाया मोबाइल क्रांति का बटन दबाया ई-मेल पर सवार होकर विश्व संदेश को सुना तब से हमारे झरनों का कल कल स्वर और संगीत बंद हो गया, पक्षियों का कलरव बंद हो गया पक्षी अब चीत्कार कर रहे हैं।

नदी नाले सूखकर मृतप्राय हो गए हैं। समुद्र की लहरों की झंकार विलुप्त हो गई है और पानी खारा और खारा हो गया है। अब हमें यह सोचना है कि विकास के नाम पर हमें ग्रीन इंडिया चाहिए या इंटरनेट की सवारी कर डिजिटल इंडिया चाहिए। बच्चों की झोली में इंटरनेट को डालकर डिजिटल जेनरेशन का सपना देखना चाहिए या प्रकृति की गोद में सुगंधित वायु की लहरों में खो जाना चाहिए। झरनों में बैठकर नौका विहार का आनंद लेना चाहिए या कंप्यूटर में बैठकर नेट खोल कर नन्हे मुन्ने की आंखों पर जोर डालकर उन्हें चश्मा वाला बनाना चाहिए। हरा भरा हिंदुस्तान यानी कि ग्रीन इंडिया और डिजिटल इंडिया का सपना नदी के दो कभी ना मिलने वाले किनारे हैं। विकास के नाम पर असीमित उद्योग धंधों की बाढ़ आ गई है। भूमि समाप्त

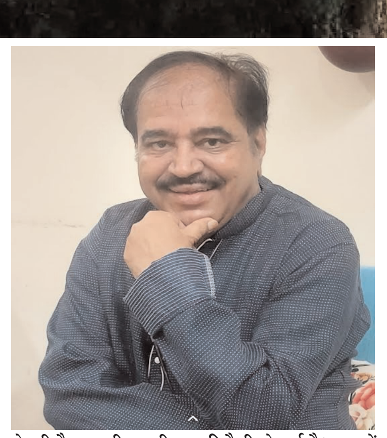

हो रही है साथ ही हमारी वायु विषैली हो गई है। रात में शहरी मकानों मैं बिजली के झालरों के सामने आकाश में रात्रि के तारों की चमक फीकी पड़ गई है। जंगलों को हम ऐसे साफ करते गए जैसे सड़क पर रोड रोलर चला रहे हैं। नगर बने ,महानगर बने ,मकान बने किंतु अब घर गायब होते गए, हमें तब सुध आई जब चिड़िया चुग गई खेत, हमें विकास के नाम पर मानव सभ्यता से जुड़ी जमीन पानी, हरियाली,पक्षी जानवर सब चाहिए केवल अंधाधुन्ध कंक्रीट का विकास या इंटरनेट की रफ्तार नहीं चाहिए। इसके लिए हमें संसाधनों के अंधाधुंध प्रयोग पर अंकुश लगाना होगा। संसाधनों का इस्तेमाल अतिरेक में नहीं होना चाहिए । महात्मा गांधी ने खुद कहा है कि पृथ्वी पर सभी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधन है, किंतु मानव की लालच को पूरा करने का कोई साधन नहीं है। हम प्राकृतिक परियोजना तथा परिस्थितिकी की परियोजनाओं का स्वागत करना होगा सम्मान करना होगा। हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सौर, पवन, बायोगैस, ज्वार तरंग लहरों को ऊर्जा का आधार बनाना होगा।

भारत में परिस्थितियां बड़ी विषम है एक तरफ सोडियम लाइट से नहाती दिल्ली ,मुंबई ,बेंगलुरु की रंगीन सड़कें हैं, ऊंची ऊंची इमारतें हैं, तेज गति की मेट्रो है,वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग का लुफ्त उठाते हुए युवक युवतियां है, दूसरी तरफ पसीने से भीगा हुआ किसान हैं। कैरोसिन की चिमनी में बच्चों को कहानी सुनाती माताएं हैं। यानी कि इतनी डिजिटल विषम बताएं भारत के अलावा विश्व के किसी भी कोने में नहीं है। भारत में विकास के नाम पर डिजिटलाइजेशन करने की आवश्यकता जरूर है पर गांव जंगलों नदियों और प्राकृतिक संसाधनों के निरस्तीकरण और विनाश की कीमत पर नहीं। हमें यह साबित करना होगा कि भारत के विकास की हरित क्रांति के साथ-साथ डिजिटल इंडिया भी विकास की गति को बढ़ा रहे हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत कि हरित क्रांति का विकास ही डिजिटल इंडिया का स्वप्न को भी पूरा करेगा। इसके लिए स्वच्छ साफ-सुथरे संसाधन जैसे जल, खनिज, यूरेनियम ,थोरियम नहीं होगा तब तक नाभिकीय रिएक्टर की भट्टीयां कैसे चलेंगी। किसी कवि ने कहा है,

जो घर बनाओ तो एक पेड़ भी लगा लेना,
पंछी सारे उपवन के चहचहा उठेंगे।

विकास का जो भी रास्ता या नक्शा हम तैयार करेंगे निश्चित तौर पर वह मार्ग हरित क्रांति या हरित विकास से होकर गुजरेगा, जिससे हम अपनी 141 करोड़ जनसंख्या को स्वच्छ वातावरण दे पाएंगे और एक नए भारत की कल्पना को साकार कर पाएंगे।

संजीव ठाकुर, स्तंभकार, चिंतक, लेखक, रायपुर छत्तीसगढ़, 9009 415 415,

आह ताज!

यह बात अभी हाल ही में पर्यटन मंत्रालय की एक रिपोर्ट में भी सामने आई है। जिसके मुताबिक देश में विदेशी पर्यटकों की संख्या में इतनी बढ़ोतरी हुई कि उपेक्षित हो रहे पर्यटन की हौसलाआफजाई हुई है। लेकिन ताजमहल का दीदार करने आने वालों की संख्या में 8.4 फीसद की कमी दर्ज की गई है। क्या यह सोचने की बात नहीं कि मुहब्बत की इस नूरानी निशानी को देखने को तरसने वालों ने इससे मुंह क्यों मोड़ा? यहां आने वालों को यहां की बदइंतजामी का सहज ही अंदाजा हो जाता है।

सत्रहवीं शताब्दी में निर्मित वास्तुशिल्प के इस हैरतअंगेज शाहकार को लेकर कवियों-शायरों की कलम ने खुल कर अपना इजहारे-खयाल किया। लेकिन लगता है कि अपराध और मुनाफाखोरी के इस दौर में ताज को देखने के ख्वाहिशमंदों ने साहिर लुधियानवी के ताजमहल के प्रति जज्बात को कुछ ज्यादा ही संजीदगी से ले लिया। यह दीगर है कि ताजमहल से मुंह मोड़ने के कारण अलग हैं। साहिर ने बेपनाह मुहब्बत के इस नमूने को अपनी मुफलिसी का मजाक समझा और अपनी प्रेयसी से इसरार किया कि वह उसे शानो-शौकत और शाही दंभ की इस मिसाल से परे कहीं दूर मिले, लेकिन ताज पर पिछले वर्ष दाखिल पदचापों की कमी के कारण को अगर जानने की कोशिश की जाए तो जाहिर है कि उसका बायस साहिर की शायराना सोच से इतर है।

शहर में दाखिल होते ही इस बात का साफ इशारा मिला कि बाहुबल के लिए मशहूर उत्तर प्रदेश की सरकार को शायद ही अपनी अप्रतिम विरासत का कोई खास अहसास है। चमकते नीले रंग के होर्डिंग्स को अगर छोड़ दें तो आगरा की हद में दाखिल होते ही शहर अव्यवस्था व कमजोर आंतरिक ढांचे की लगभग दुहाई देता महसूस होता है। यह बदकिस्मती नहीं तो क्या है कि पंद्रहवीं शताब्दी से लेकर मुगल सल्तनत के एक अहमतरीन वक्फे तक देश की राजधानी रहे इस शहर पर अब प्रशासनिक नजरअंदाजी का काला साया है। जिन लोगों ने पिछले दो दशक तक अलग-अलग समय पर ताजमहल को देखा है, उनको यहां पर विदेशी पर्यटकों की कमी सहज ही खलती है। यहां अब विदेशी सैलानियों की वैसी हलचल नहीं, जैसी अतीत में रहती रही है।

यह बात अभी हाल ही में पर्यटन मंत्रालय की एक रिपोर्ट में भी सामने आई है। जिसके मुताबिक देश में विदेशी पर्यटकों की संख्या में इतनी बढ़ोतरी हुई कि उपेक्षित हो रहे पर्यटन की हौसलाआफजाई हुई है। लेकिन ताजमहल का दीदार करने आने वालों की संख्या में 8.4 फीसद की कमी दर्ज की गई है। क्या यह सोचने की बात नहीं कि मुहब्बत की इस नूरानी निशानी को देखने को तरसने वालों ने इससे मुंह क्यों मोड़ा? यहां आने वालों को यहां की बदइंतजामी का सहज ही अंदाजा हो जाता है। ताज की सुरक्षा में लगे जवानों से लेकर यहां खुद पैदा हुए गाइडों की बेरुखी भी ताज के दीदार में बाधक बनती है। हालांकि उस गाइड की बेरुखी तब गायब हो जाती है जब आप मुहब्बत की इस निशानी को देखने के लिए उसे अपना मार्गदर्शक बनाते हैं। बाकी आपको तिरस्कार से ही देखते हैं। ताज की सुरक्षा की जरूरत से किसी को इनकार नहीं, लेकिन उसके कारण अदब से नाता तोड़ना कोई समझदारी की बात नहीं। खासतौर पर तब जबकि ऐसे ही कारणों से पर्यटक अतीत की इस नूरानी निशानी से दूर हो रहे हैं। ताज को नजरों के जरिए अपनी रूह में बसा लेने वाले विदेशी पर्यटकों में यह कमी कोई अचानक नहीं आई है। सर्वेक्षण की मानें तो यह कमी पिछले तीन-चार सालों में बढ़ती चली जा रही है। लिहाजा इस पर अफसोस से अलग और क्या हो सकता है कि केंद्र या राज्य सरकार किसी को भी इस बात की चिंता नहीं कि इस पर रोक लगाई जाए। ताज के आसपास मुनाफाखोरों पर भी सरकार का कोई अंकुश नहीं और न ही इसे व्यवस्थित करने की कोई कोशिश। आगरा में अपराधी भी बेरोकटोक हैं। पिछले साल ताज के पर्यटन केंद्र पर विदेशियों की ओर से छह और कुल डेढ़ दर्जन एफआइआर दर्ज की गई। यहां होने वाली छोटी-मोटी चोरियों व ठगी का तो शायद ही कोई हिसाब हो। यही वजह है कि लोग अब यहां का रुख करने से कतराने लगे हैं। इतने सालों से सरकार यहां वाहनों की पार्किंग के लिए भी कोई व्यावहारिक ढांचा खड़ा नहीं कर पाई। यही वजह है कि यहां की सड़कों पर अराजकता का आलम है। देश-विदेश में ऐसे आकर्षणों पर पर्यटन का विस्तार इश्तहारों से ज्यादा मुंहजबानी प्रचार पर चलता है। बदइंतजामी के कारण अब ताज का बार-बार दीदार करने की तमन्ना का लोग खुद ही गला घोंटने लगे हैं। इस पर शायद ही कोई दूसरा बयान हो कि देश को विदेश में मकबूलियत दिलाने में ताजमहल का अपना बड़ा योगदान है, लेकिन किसी ने भी इसके समुचित रख-रखाव पर जोर नहीं दिया।

कुनिका ने बताया कंगना को क्यों पसंद नहीं करती इंडस्ट्री?

अभिनेत्री कंगना रनौत अपने बेबाक अंदाज के लिए जानी जाती है, जो एक बार फिर से सुर्खियों में आ गई हैं। हालांकि, इस बार उनपर टीवी और बॉलीवुड एक्ट्रेस कुनिका सदानंद ने कटाक्ष करते हुए कहा कि वो सिर्फ बकवास करती हैं। साथ ही उन्होंने कंगना रनौत को ना पंसद करने की वजहें भी बताई हैं।

वे हमेशा नकारात्मक रहती हैं

कई फिल्मों और टीवी शो में काम कर चुकीं अभिनेत्री कुनिका सदानंद हाल ही में मेरी सहेली पॉडकास्ट में पहुंची। बातचीत के दौरान एक्ट्रेस ने अभिनेत्री कंगना रनौत के बारे में अपने विचार रखे। उन्होंने कहा, 'उनके मुंह से कोई मीठी बात निकलती है क्या? जब देखो बकवास। वह हमेशा नकारात्मक रहती हैं और जिस थाली में खाती हैं, उसी थाली में छेद करती हैं। इंडस्ट्री ने उन्हें उठाया और हीरोइन बनाया। आप एक बाहरी व्यक्ति थे, लेकिन फिर भी आपको मौका मिला, है ना? क्या शाहरुख खान, नवाजुद्दीन सिद्दीकी और इरफान खान बाहरी नहीं थे?'

ना जाने कहां से मिलती है उन्हें फंडिंग

आगे बातचीत में उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं पता कि उन्हें अपनी फिल्मों के लिए फंडिंग कहां से मिलती है और उनकी हर फिल्म फ्लॉप हो जाती है। मेरा मतलब है कि मैं वास्तव में चाहती हूं कि उनकी फिल्में सफल हों, क्योंकि मैं वास्तव में एक एक्टर के रूप में उनकी प्रशंसा करती हूं। आपको मणिकर्णिका के लिए फंडिंग मिली, फिर आपने एक निर्देशक को काम पर रखा, लेकिन बाद में आप असुरक्षित होने के कारण उनकी भूमिकाएं काट देती हैं।'

कुनिका सदानंद के बारे में

कुनिका सदानंद एक टीवी अभिनेत्री होने के साथ-साथ बॉलीवुड की भी हीरोइन रह चुकी हैं। एक्ट्रेस ने 'दाग- द फायर', 'प्यार किया तो डरना क्या', 'हम साथ-साथ हैं', 'राजा को रानी से प्यार हो गया', 'पेज 3' और 'शादी करके फंस गया यार' जैसी फिल्मों में नजर आ चुकी हैं।

पांच साल पहले समझ आया कि एक्टिंग क्या है

वामिका गब्बी सिर्फ अभिनेत्री नहीं, एक खोज हैं। अपने किरदारों में, अपने भीतर और ज़िंदगी की परतों में। एक ओर जहां उन्होंने विशाल भारद्वाज जैसे दिग्गज फिल्मकार के साथ चार-चार प्रोजेक्ट्स में काम करके अपनी ऐक्टिंग को नया आकार दिया, वहीं दूसरी ओर ओशो की शिक्षाओं से आत्म-बोध की राह भी पकड़ी। वामिका खुद कहती हैं कि अभिनय की असली समझ उन्हें सिर्फ़ पांच साल पहले आई, जब विशाल सर की वर्कशॉप ने उनके भीतर की खिड़कियां खोल दीं। 'भूल चूक माफ' नाम की अपनी नई फिल्म में उन्होंने पहली बार कॉमिडी की और इस चुनौती को भी आत्मविश्वास से पार किया। वामिका मानती हैं कि एक अच्छा कलाकार बनने के लिए सिर्फ तकनीक नहीं बल्कि संतुलित निजी जीवन, रिश्तों की गहराई और मानसिक शांति भी जरूरी है। उनकी बातों में न सिर्फ एक कलाकार की परिपक्वता झलकती है बल्कि एक जागरूक इंसान की सोच भी।

विशाल भारद्वाज सर ने मेरी ऐक्टिंग को संवारा है

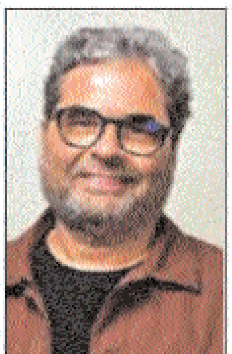

मैं इतनी खुशकिस्मत हूं कि विशाल भारद्वाज जैसे इतने बड़े डायरेक्टर ने मुझे लिया। मैं, डैड और भाई उनके इतने बड़े फैन हैं कि क्या बताएं। उनके साथ काम करना मेरे लिए सपने की तरह था। उन्होंने मुझे खुद अपनी फिल्मों के लिए सिलेक्ट किया। दूसरी बार जब उन्होंने फिर से काम करने को कहा तो मैं खुद शॉक्ड रह गई। यकीन नहीं हो रहा था लेकिन बाद में समझ आया कि ऐसा उन्होंने पहले भी तब्बू जी और प्रियंका चोपड़ा के साथ किया था। उन्हें किसी के साथ लगे कि ये अच्छा काम करती है तो वह उसके साथ फिर से काम करते हैं। मैंने उनके साथ चार प्रोजेक्ट किए हैं। उनसे जो सीखने को मिला, उस अनुभव ने कहीं ना कहीं मेरी थिंकिंग को शेप दिया। अब समझ आ गया कि कैसे प्रोजेक्ट्स को हां करना और किसको ना करना है। उनके साथ ने मेरी ऐक्टिंग को बहुत संवार है। मेरे ऐक्टिंग करियर में उनका बड़ा योगदान है।

पहले मैं टिपिकल हीरोइन टाइप ऐक्टिंग करती थी

मैंने विशाल भारद्वाज जी की वर्कशॉप में सीखा कि किसी सीन को किस तरह बेहतर किया जा सकता है। दरअसल, मैंने कहीं से ऐक्टिंग सीखी नहीं है। उससे पहले तक लगता था कि मैं बहुत टिपिकल हिरोइन टाइप ऐक्टिंग करती थी। जहां रोना, जहां हंसना, जहां गुस्सा करना है, सब एक जैसे हो जाते थे। उसमें कोई एडिशन नहीं था और ना वैरायटी। वर्कशॉप के बाद ऐसा लगा कि किसी ने मेरे दिमाग की खिड़कियां खोल दी हैं। फिर समझ आया कि यह तो समुंदर है। इसमें हरेक कैरेक्टर का रोना-हंसना अलग हो सकता है। मुझे समझ आया कि ये चीज ही बहुत अलग है। देखा जाए तो मुझे पांच साल पहले समझ आया था कि ऐक्टिंग होती क्या है और कितनी कठिन है। उसके बाद से मेरे करियर का ग्राफ जो बदला है, उसे मैं बता नहीं सकती।

पहली बार कॉमिडी करने से पहले नर्वस थी

फिल्म करते समय बहुत सी चुनौतियां थीं। मैं पहली बार कॉमिडी कर रही थी। इससे पहले, विशाल भारद्वाज, विक्रम मोटवानी जी, रंजन चंदेल के साथ काम किया। उन सबमें ड्रामा, सीरियसनेस, रोमांस था लेकिन मैंने कॉमिडी नहीं की थी। सच में, मैं बहुत नर्वस थी। कॉमिडी में सबसे बड़ा चैलेंज यह था कि मैं इसे कर सकती हू या नहीं लेकिन इस फिल्म के बाद मुझे कॉन्फिडेंस आ गया कि कर सकती हूं। अब मैंने आगे जो फिल्में साइन की हैं, वो कॉमिडी ही हैं। मैं बहुत उत्साहित हूं कि आगे मैं कुछ और नया सीखूंगी।

समझ गए थे कि हम सही रास्ते पर हैं

फिल्म में टाइम लूप का कॉन्सेप्ट है। जैसे हॉलिवुड की मूवी है ग्राउंड हॉग डे। बेसिकली, इसमें हॉलिवुड की तरह टाइम लूप का कॉन्सेप्ट सेम है लेकिन वही अगर बनारस की गलियों में कर रहे हैं तो वो कैसे एक जैसा लगेगा। यहां के किरदार बहुत कलरफुल हैं। इन सबने फिल्म में जान डाल दी। आगे जाकर अगर कोई ऐसी फिल्म बॉलिवुड में बनाएगा तो हमारा ही उदाहरण लिया जाएगा। इंडिया में यह कॉन्सेप्ट इतना इस्तेमाल नहीं हुआ है। मुझे लगता है कि यह बड़े गर्व की बात है कि इस टाइम लूप को हम हिंदी फिल्मों में इस्तेमाल कर रहे हैं। हम जब स्क्रिप्ट पढ़ते थे तो वो मजेदार लगती थी लेकिन पता नहीं था कि शूट करते वक्त इतना ज्यादा मजा आएगा। आपको पता चल जाता है कि क्या बन रहा है और वो कहां तक जाएगा। हम जब शूट कर रहे थे, तभी समझ में आ गया था कि हम सही रास्ते पर हैं

हम अच्छी फिल्में बनाना चाहते हैं लेकिन...

अनुराग कश्यप अपनी बेबाकी के लिए मशहूर हैं। वो अक्सर अपने बयानों के चलते कई बार मुश्किलों में भी घिर चुके हैं। कुछ दिनों पहले ही अनुराग ने मुंबई छोड़ने और इंडस्ट्री के खत्म होने की बात कही थी। अब अनुराग ने फिल्म मेकर्स की क्रिएटिविटी को लेकर निराशा और मनचाही फिल्में न बना पाने व अपनी अब तक रिलीज नहीं होने वाली फिल्मों को लेकर बात की है। बातचीत में अनुराग ने फिल्म मेकर्स की क्रिएटिव हताशा को लेकर बात की। उन्होंने कहा, हम सभी को क्रिएटिविटी के मामले में निराश होना पड़ता है। हम अच्छी फिल्में बनाना चाहते हैं, लेकिन लोग उन्हें नहीं समझते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि जितनी अधिक अच्छी फिल्में रिलीज होंगी, उतना ही उन्हें एहसास होगा कि उन्हें एल्गोरिदम या बॉक्स ऑफिस के आधार पर फिल्में देखने का फैसला नहीं लेना करना चाहिए।

अनुराग की अब तक पांच फिल्में नहीं हुई रिलीज

इस दौरान अपनी उन फिल्मों के बारे में भी अनुराग कश्यप ने बात की, जो बनने के बाद भी किन्हीं कारणों से रिलीज नहीं हो सकीं। निर्देशक ने कहा, मेरी पहली फिल्म 'पांच' रिलीज नहीं हुई थी। यही नहीं मेरी पांच फिल्में अभी रिलीज नहीं हुई हैं, 'पांच' उनमें से एक है। अब इन पांच में से दो फिल्में रिलीज हो रही हैं और उम्मीद है कि तीसरी फिल्म भी रिलीज होगी।

'स्टोलेन' के प्रमोशन में लगे हैं अनुराग

अनुराग कश्यप इन दिनों अभिषेक बनर्जी की हालिया रिलीज 'स्टोलेन' के प्रमोशन में बिजी हैं। ओटीटी पर रिलीज हुई इस फिल्म से अनुराग एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर के तौर पर जुड़े हैं। अनुराग के साथ किरण राव, निखिल आडवाणी और विक्रमादित्य मोटवानी इस प्रोजेक्ट के एग्जीक्यूटिव प्रोड्यूसर हैं। इस सस्पेंस-थ्रिलर फिल्म का फिल्म का निर्देशन करण तेजपाल ने किया है।

अल्लू अर्जुन की हीरोइन बनेंगी दीपिका पादुकोण

दीपिका पादुकोण इन दिनों अपनी प्रोफेशनल लाइफ को लेकर खूब चर्चा में हैं। उन्हें फिल्म स्पिरिट से बाहर कर दिया गया था। इसी बीच कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि एक्ट्रेस को कल्कि 2 से भी हटाया जा सकता है। दरअसल, फिल्म 'स्पिरिट' के दौरान दीपिका ने आठ घंटे की शिफ्ट और 35 दिनों की शूटिंग के लिए 25 करोड़ रुपए की मांग की थी। इतना ही नहीं, उन्होंने प्रॉफिट में 10 प्रतिशत हिस्सा भी मांगा था। यह बात मेकर्स को पसंद नहीं आई और उन्होंने दीपिका को फिल्म से बाहर कर दिया। तेलुगु वेबसाइट के मुताबिक, दीपिका ने 'कल्कि 2' के मेकर्स के सामने भी वही शिफ्ट और शर्तें रख दी हैं, जिससे निर्माता अश्विनी दत्त और स्वप्ना दत्त परेशान हैं। भले ही दीपिका के हाथ से एक और फिल्म निकल सकती थी, लेकिन उन्हें अल्लू अर्जुन और एटली कुमार की अपकमिंग फिल्म में कास्ट कर लिया गया है। यह एक बड़ा प्रोजेक्ट माना जा रहा है।

2 जुलाई को ओटीटी पर आएगी प्रियंका की हेड्स ऑफ स्टेट

बालीवुड और हॉलीवुड फिल्म में अपनी खास पहचान बना चुकीं एक्ट्रेस प्रियंका चोपड़ी जल्द ही हेड्स ऑफ स्टेट में दिखाई देंगी। इस फिल्म को लेकर एक अपडेट उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया है। प्रियंका ने कैप्शन में लिखा...शांत रहें और आगे बढ़ते रहें। 2 जुलाई को प्राइम वीडियो पर आ रही है हेड्स ऑफ स्टेट।

बता दें कि जॉन सीना के जन्मदिन पर फिल्म मेकर्स ने हेड्स ऑफ स्टेट का ट्रेलर रिलीज किया था। इसमें प्रियंका, जॉन और इदरीस एल्बा का लुक हर किसी को पसंद आया। यह एक एक्शन-कॉमेडी फिल्म है। फिल्म में अमेरिकी राष्ट्रपति विल डेरिंगर की भूमिका में जॉन और यूके के प्रधानमंत्री सैम क्लार्क की भूमिका में इदरीस एल्बा नजर आएंगे। इसमें कार्ला गुगिनो, जैक क्वैड, स्टीफन रूट, सारा नाइल्स और पैडी कॉन्सिडाइन जैसे सितारे भी हैं। यह फिल्म अंग्रेजी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम और कन्नड़ में आएगी।

1971 के भारत-पाक युद्ध पर बेस्ड है अगस्त्य स्टारर 21

निर्माता दिनेश विजन के निमंत्रक दिवसबका हालिया समय काफी सफल रहा है। खासकर पिछले साल की हिट फिल्म स्त्री 2 और इस साल छावा के शानदार प्रदर्शन के बाद। अब बैनर का पूरा ध्यान अपनी वॉर ड्रामा फिल्म 21 पर केंद्रित है, जिसमें अमिताभबच्चन के नाती अगस्त्य नंदा मुख्य भूमिका में हैं। अगस्त्य ने पिछले साल जोया अख्तर की द आर्चीज से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। 21 एक वॉर फिल्म है और मैडॉक इसके लिए स्काईफोर्स की तरह बड़े पैमाने पर बज क्रिएट करने की तैयारी में है। फिल्म में दिखेगी अरुण खेत्रपाल की अनसुनी गाथा सूत्रों के मुताबिक, 21 में अगस्त्य नंदा की भूमिका उनके करियर के लिए एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है, क्योंकि यह वीर सैनिक सेकेंड लेफ्टिनेंट अरुण खेत्रपाल की सच्ची कहानी पर आधारित है। लिएकी सच्ची कहानी पर आधारित है। युद्ध में उनकी असाधारण वीरता के लिए मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। फिल्म की शूटिंग पिछले साल जून से जारी है और मुंबई, अमृतसर व पटियाला के विभिन्न स्थानों पर इसे फिल्माया गया है। मौजूदा समय तक फिल्म लगभग पूरी शूट हो चुकी है। इस वॉर ड्रामा का निर्देशन नेशनल अवॉर्ड विजेता श्रीराम राघवन कर रहे हैं, जो पहली बार इस जॉनर में कदम रख रहे हैं। यह फिल्म इसी साल 2 अक्टूबर को रिलीज होगी।

पाकिस्तानी आर्मी अफसर का रोल जयदीप निभा रहे हैं...

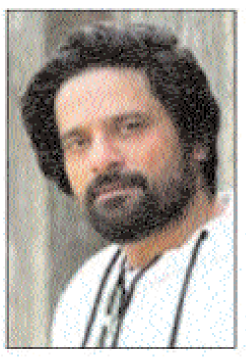

यह फिल्म 1971 के भारत-पाक युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है। पाकिस्तानी आर्मी अफसर का रोल जयदीप अहलावत निभा रहे हैं। फिल्म में अमृतपाल सिंह का एक्शन है, जिनकी एक और फिल्म निशानची है।

मेकर्स ने फिल्म के कुछ एक्शन सीक्वेंस फिर से शूट किए हैं...

फिल्म के मेकर्स वॉर सीक्वेंस को बेहतरीन बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे। इसके लिए सिनेमैटोग्राफर अनिल मेहता को हायर किया गया है। शूटिंग मार्च में पूरी हो गई थी लेकिन टीम लगातार पोस्ट-प्रोडक्शन में जुटी है। गुणवत्ता बनाए रखने के लिए कुछ सीन री-शूट किए गए। मई में टीम आखिरी शेड्यूल के लिए पंजाब गई, जहां कुछ सीन फिर से लाइव लोकेशनों पर शूट किए गए, जिन्हें पहले मुंबई के स्टूडियो में शूट किया गया था लेकिन गुणवत्ता न मिलने के कारण दोबारा फिल्माना पड़ा।

कार्तिक आर्यन की फिल्म में अनन्या पांडे की भी एंट्री

कार्तिक आर्यन इन दिनों का फिल्म तू मेरी मैं तेरा मैं तेरा तू मेरी की शूटिंग में बिजी हैं। इस फिल्म के निर्देशन की कमान समीर विद्वांस ने संभाली है, वहीं करण जौहर इसके निर्माता हैं। अब इस फिल्म में अनन्या पांडे की भी एंट्री हो गई है। इसकी जानकारी खुद करण ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर एक तस्वीर शेयर कर दी है। उन्होंने कैप्शन में लिखा... हमारे रे की रूमी। करण ने जो पोस्टर साझा किया है, उसमें कार्तिक और अनन्या ही रोमांटिक अंदाज में नजर आ रहे हैं। तू मेरी मैं तेरा मैं तेरा तू मेरी अगले साल वैलेंटाइन डे से पहले रिलीज होगी। इसकी रिलीज की तारीख भी करण जौहर ने पोस्ट में शेयर की है।

स्वास्थ्य जयपुर टाइम्स

गुरूवार
12 जून, 2025

बाहर से सफाईकर्मियों ने शुरू की नालों की सफाई

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां। सफाईकर्मियों की 27 दिन से जारी हड़ताल के चलते बदहाल हुई सफाई व्यवस्था को पटरी पर लाने व मानसून को देखते हुए नगरपालिका द्वारा देर आयद-दुरुस्त आयद की तर्ज पर बाहर से बुलवाए गए सफाईकर्मियों द्वारा कस्बे के नाले-नालियों की सफाई करवाई जा रही हैं।आमजन में चर्चा हैं कि नगरपालिका द्वारा की जा रही सफाई की कवायद सिर्फ नाले-नालियों तक ही सीमित रहेगी या गली-मोहल्ले और आम रास्तों पर एक माह से लगे कचरे के ढेर भी साफ किए जाएंगे।क्योंकि चौतरफा फैली गन्दगी और कूड़े करकट से कस्बेवासी पिछले एक महीने से परेशान हैं।हालांकि नगरपालिका द्वारा शुरू से ही वाहनों के जरिए घर-घर से कचरा संग्रह कर व्यवस्था बनाए रखने का प्रयास किया जा रहा हैं।हड़ताल को लेकर सफाईकर्मियों से दो तीन बार वार्ता भी की गई लेकिन गतिरोध बरकरार हैं।

तालाब में मिला युवक का शव,मौत के कारणों का नहीं हुआ खुलासा

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां। कस्बे के विजयसागर तालाब में एक युवक का शव मिलने से सनसनी फैल गई।लोगों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची।सिविल डिफेंस टीम व एफएसएल टीम को भी बुलवाया गया। शव को बाहर निकालने पर मृतक की पहचान कस्बे के ओड मोहल्ला निवासी महावीर ओड के रूप में हुई।महावीर रविवार रात्रि से ही घर से निकला था।परिजनों द्वारा कस्बे में तलाश की गई लेकिन पता नहीं लग पाया।महावीर कारीगरी का काम करता था।पुलिस ने शव को उपजिला चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवाया जहां मेडिकल बोर्ड द्वारा पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों के सुपुर्द किया।पुलिस मामले की जांच कर रही हैं।

मारपीट मामले में कार्यवाही की मांग

जयपुर टाइम्स

बिजौलियां। खटीक समाज ने उपखण्ड अधिकारी को ज्ञापन सौंप कर कस्बा निवासी बख्तावर खटीक के साथ 6 जून को ग्राम खडीपुर में हुई मारपीट के मामले में कार्रवाई किए जाने की मांग की ।ज्ञापन में बताया कि चन्द्र प्रकाश धाकड, मथुरालाल उर्फ घनश्याम ,अंकित बंजारा व अन्य व्यक्तियों द्वारा बख्तावर के साथ मारपीट करने के साथ ही जातिगत गाली-गलौच कर अपमानित किया गया।जिसकी पुलिस थाना बिजौलियां में प्रकरण भी दर्ज करवा रखा हैं। लेकिन अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई।

बायतु विधायक हरीश चौधरी ने बाड़मेर विधानसभा में सामाजिक कार्यक्रमों में लिया भाग

बाडमेर विधानसभा क्षेत्र में चौधरी की सक्रियता बनी चर्चा का विषय

जयपुर टाइम्स

रावतसर कांग्रेस मध्यप्रदेश प्रभारी एवं बायतु विधायक हरीश चौधरी ने सोमवार को बाड़मेर विधानसभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत रावतसर,चवा का दौरा कर सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लिया। हरीश चौधरी की बाड़मेर विधानसभा क्षेत्र में बढ़ती सक्रियता चर्चा का विषय बनी हुई है। इस दौरान जिला प्रमुख महेंद्र चौधरी, बायतु प्रधान सिमरथाराम, बाड़मेर ग्रामीण प्रधान प्रतिनिधि खरथाराम गोदारा सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

हरित योग कार्यक्रम 12 को

बीकानेर अंतराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रमों की श्रृंखला में 10 सिग्नेचर इवेंट के तहत हरित योग कार्यक्रम का आयोजन 12 जून को प्रातः 6.30 बजे से धरणीधर मंदिर परिसर में किया जाएगा। आयोजन प्रभारी योग प्रशिक्षक भुवनेश पुरोहित ने बताया कि केन्द्रीय योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान परिषद, आयुष मंत्रालय तथा योग संगठन प्रवीर योगासना स्पोर्ट्स अकादमी एवं संस्कृति विकास फाउंडेशन और ध्यान केन्द्र एवं क्रीड़ा भारती के संयुक्त तत्वावधान में इसका आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, क्रीड़ा भारती, प्रवीर योगासन, एकलव्य तीरंदाजी संस्थान के खिलाड़ियों सहित लगभग अन्य लोगों की भागीदारी रहेगी। कार्यक्रम में कॉमन योग प्रोटोकॉल के अभ्यास के बाद पौधरोपण किया जाएगा। प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए जाएंगे।

कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य जरूरतमंद लोगों के आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाना है : श्रीहर्षवर्द्धन

कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य जरूरतमंद लोगों के आर्थिक स्तर को ऊंचा उठाना है- श्रीहर्षवर्द्धन

जयपुर टाइम्स

बीकानेर जन शिक्षण संस्थान द्वारा समाज के जिन जरूरतमंद लोगों को कौशल प्रशिक्षण दिया जा रहा है उनका मूल उद्देश्य यह है कि वे अपने कौशल के आधार पर आत्मनिर्भरता की राह में आगे बढ़े और समाज का आर्थिक स्तर ऊँचा उठ सके। ये उद्बोधन प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र के मुख्यअतिथि के रूप में श्री हर्षवर्द्धनजी, डिप्टी डायरेक्टर, निदेशालय जन शिक्षण संस्थान, कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अपने वर्चुअल माध्यम से अभिव्यक्त किए। उल्लेखनीय है कि जन शिक्षण संस्थान, बीकानेर द्वारा वार्षिक कार्ययोजना 2025-26 के तहत आज दिनांक 10 जून, 2025 को संस्थान सभागार में आयोजित जिला स्तरीय संदर्भ व्यक्ति कार्यक्षमता संवर्द्धन प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में बीकानेर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के संदर्भ व्यक्तियों ने भाग लिया। अपने वर्चुअल संवाद में श्रीहर्षवर्द्धन ने कहा हमें कौशल प्रशिक्षणों की समाप्ति के बाद भी प्रशिक्षणार्थी से लगातार जुड़कर, उसका फीडबैक लेते हुए रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़ने के लिए उनका निरंतर मार्गदर्शन करते रहना है। हमें भी अपने कौशल प्रशिक्षणों को भी समय एवं बाजार की मांग के अनुसार अपडेट और अपग्रेड करना होगा। इसके साथ ही उन्होंने विभिन्न ब्लॉक से आए संदर्भ व्यक्तियों के साथ बातचीत करके उनके काम की जानकारी ली और उनका उत्साह बढ़ाया। अध्यक्षीय उद्बोधन में बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति की सचिव श्रीमती सुशीला ओझा ने कहा कि महिलाओं को हुनर सीखने के साथ मन में हौसला भी बनाना होगा। हुनर के साथ जब हौसले का मेल होता है तब ही आत्मनिर्भरता प्राप्त होती है। इसके साथ ही उन्होंने पारंपरिक हुनर और पारंपरिक उत्पाद को पुनर्विकसित करने का सुझाव भी दिया। सान्निध्य उद्बोधन में बीकानेर प्रौढ़ शिक्षण समिति की उपाध्यक्ष डॉ. विभा बंसल ने कहा कि प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के साथ-साथ जीवन-व्यवहार कौशल भी सीखाएं ताकि वे सामाजिक संस्कारों के प्रति भी सक्रिय एवं सजग बन सकें। प्रशिक्षण के विभिन्न सत्रों में राजकीय महिला पोलीटेक्निक कॉलेज की वरिष्ठ प्रवक्ता श्रीमती मंजु सुथार बाजार की मांग के अनुसार तैयार उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ाने एवं वैल्युएडिसन करने की जानकारी दीं। इस क्रम में लीडबैंक अधिकारी कार्यालय से श्रीकिशन श्रीमाली एवं पुष्पेन्द्र सिंह ने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना एवं साईबर फ्रॉड से बचाव के साथ वित्तीय साक्षरता की और राजीविका के जिला प्रबंधक श्री मणिशंकर हर्ष एवं मुकुंद बिहारी ने स्वयं सहायता समूह, लखपति दीदी, ग्राम संगठन, सोलर दीदी, द्रोण दीदी आदि की जानकारी दी। इसके साथ ही संस्थान के निदेशक ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए बताया कि जन शिक्षण संस्थान, बीकानेर द्वारा आयोजित इस एक दिवसीय संदर्भ व्यक्ति कार्यक्षमता संवर्द्धन प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान द्वारा कौशल प्रशिक्षणों के बेहतर संचालन के साथ मुख्यतः लाईवलीहुड सेल के माध्यम से रोजगार एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में मजबूत एवं सार्थक कार्य करने की कार्यक्षमता का विकास का प्रयास किया जाएगा। संस्थान के कार्यक्रम अधिकारी ने प्रशिक्षण का संयोजन करते हुए आदर्श संदर्भ व्यक्ति, आदर्श प्रशिक्षण केन्द्र, सहायक कार्यक्रम अधिकारी श्री तलत रियाज एवं उमाशंकर आचार्य ने सिद्ध पोर्टल पर प्रशिक्षणार्थियों रजिस्ट्रेशन, आवश्यक प्रपत्र संधारण एवं दस्तावेजीकरण करने और लेखाकार लक्ष्मीनारायण चूरा ने सहायक शिक्षण सामग्री के उपयोग एवं प्रशिक्षण शुल्क के बारे में जानकारी दी और विष्णुदत मारू और श्रीमोहन आचार्य की इस एक दिवसीय प्रशिक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण व्यवस्थापन कार्य में सक्रिय सहभागिता रही।

नुक्कड़ नाटक धीरे-धीरे मौत.. का हुआ मंचन

एनसीडी क्लीनिक और मरुधरा स्कूल ऑफ़ नर्सिंग के तत्वावधान में हुआ आयोजन

जयपुर टाइम्स

सूरतगढ़। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जिला श्रीगंगानगर के आदेश अनुसार 17 मई विश्व उच्च रक्तचाप दिवस पर एनसीडी क्लीनिक सूरतगढ़ द्वारा शुरू किए गए जागरूकता कैंपेन के अंतर्गत आज नुक्कड़ नाटक का मंचन राजीव गांधी खेल मैदान में किया गया। नुक्कड़ नाटक का आयोजन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के एनसीडी क्लीनिक और मरुधरा स्कूल ऑफ़ नर्सिंग के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से आमजन को यह संदेश देने का प्रयास किया गया कि उच्च रक्तचाप का अगर समय पर इलाज नहीं लिया जाए तो यह हमारे जीवन के लिए हानिकारक हो सकता है। इस अवसर पर एनसीडी काउंसलर दीपक शर्मा ने उपस्थित दर्शकों को उच्च रक्तचाप के प्रति जागरूक करते हुए कहा कि जीवन अनमोल है जीवन से किसी प्रकार की लापरवाही अच्छी नहीं होती इसलिए हमें इसके महत्व को समझते हुए अपनी दिनचर्या और खान-पान में बदलाव करना चाहिए। इस अवसर पर मरुधरा स्कूल ऑफ़ नर्सिंग के निदेशक रवि कुमार ने बताया कि धीरे-धीरे मौत.. नुक्कड़ नाटक का मंचन करने का उद्देश्य यही है कि लोग उच्च रक्तचाप के प्रति जागरूक हो और समय रहते इलाज शुरू करें ताकि सुरक्षित जीवन जी सकें। धीरे-धीरे मौत.. नुक्कड़ नाटक में शहीद भगत सिंह डिफेंस एकेडमी के कोच सलीम अली ने कहा कि इस तरह के नुक्कड़ नाटक और भी बीमारियों पर होने चाहिए ताकि लोग स्वास्थ्य को लेकर गंभीर हो। आज अधिकतर लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत नहीं है जिस कारण से ऐसी बीमारियां बढ़ रही है अगर ऐसे नुक्कड़ नाटक समय-समय पर आयोजित किए जाएंगे तो निश्चित रूप से लोगों में जागरुकता आएगी।

दूध, दही, घी, मावा, रिफाइंड कोकोनट ऑयल और मूंग पापड़ सब स्टैंडर्ड और मिस ब्रांड मिलने पर 07 लाख 75 हजार का लगाया जुर्माना

एडीएम प्रशासन ने खाद्य सुरक्षा मानकों की अनदेखी पर लगाया जुर्माना

जयपुर टाइम्स

बीकानेर खाद्य सुरक्षा मानकों की अनदेखी करने वाली फर्मों पर जिला प्रशासन ने एक बार फिर सख्त कार्रवाई की है। दूध, दही,घी, मावा और रिफाइंड कोकोनट ऑयल के सैंपल निम्न मानक (सब स्टैंडर्ड) पाए जाने और मूंग पापड़ मिस ब्रांड पाए जाने पर एडीएम प्रशासन श्री रामावतार कुमावत की कोर्ट ने संबंधित फर्मों पर कुल 07 लाख 75 हजार का जुर्माना लगाया है। एडीएम प्रशासन श्री रामावतार कुमावत ने बताया कि रिफाइंड कोकोनट ऑयल निम्न मानक (सब स्टैंडर्ड) पाए जाने पर बीछवाल इंडस्ट्रियल एरिया स्थित फर्म मैसर्स मोहन लाल आशीष कुमार पर 4 लाख का जुर्माना, दही सब स्टैंडर्ड पाए जाने पर लक्ष्मीनाथ घाटी बड़ा बाजार स्थित फर्म मैसर्स लालजी दूध भंडार पर 01 लाख और लक्ष्मीनाथ मंदिर रोड़ स्थित फर्म मैसर्स श्री गायत्री दूध भंडार पर 25 हजार का जुर्माना, गाय का दूध सब स्टैंडर्ड पाए जाने पर गंगाशहर के चोपड़ा बाड़ी रास्ता स्थित मैसर्स वकील मावा भंडार (बॉयलर) पर 50 हजार का जुर्माना, मावा सब स्टैंडर्ड पाए जाने पर नोखा में नवली गेट के पास बागड़ी कॉम्प्लेक्स में स्थित फर्म मैसर्स बीकानेर मावा भंडार पर 25 हजार का, घी सब स्टैंडर्ड पाए जाने पर नोखा में बंधन बैंक के सामने स्थित फर्म मैसर्स जसनाथ मिल्क भंडार पर 25 हजार का जुर्माना लगाया गया है। श्री कुमावत ने बताया कि इसी प्रकार जेबीबीबी ब्रांड के मूंग पापड़ मिस ब्रांड पाए जाने पर मॉर्डन मार्केट स्थित फर्म मैसर्स रामचंद्र एंड संस और आचार्यों की घाटी के नीचे स्थित फर्म जैन बड़ी भुजिया भंडार पर डेढ़ लाख का जुर्माना लगाया गया है। एडीएम प्रशासन ने बताया कि उपरोक्त सभी फर्मों पर शास्ति लगाने से पूर्व सुनवाई की गई एवं अपना पक्ष रखने का मौका दिया गया। संबंधित फर्मों को एक माह के भीतर सीएमएचओ कार्यालय के माध्यम से चालान जमा करवाने होंगे। चालान जमा नहीं करवाने पर संबंधित फर्म का लाइसेंस सस्पेंड किया जाएगा एवं राजस्थान भू राजस्व अधिनियम 1956 के तहत वसूली हेतु कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी।

दिव्यांगजनों को निःशुल्क कृत्रिम अंग, सहायक उपकरण वितरण पूर्व चिन्हीकरण शिविर मंगलवार से

जयपुर टाइम्स

बीकानेर वित्तीय वर्ष 2025-26 की बजट घोषणा संख्या 68 (1) में उपमुख्यमंत्री द्वारा 'राज्य में विशेष योग्यजनों को और अधिक सुविधा एवं संबल प्रदान करने कि दृष्टि से 1 लाख दिव्यांगजनों को आवश्यकता एवं पात्रता अनुसार कृत्रिम अंग/सहायता उपकरण चिन्हित कर उपलब्ध करवाये जाने की घोषणा की गई हैं।' राज्य सरकार की बजट घोषणा अनुसार राज्य में विशेष योग्यजनों के सशक्तिकरण एवं कल्याण के लिए उनकी आवश्यकता एवं पात्रता अनुसार कृत्रिम अंग, सहायता उपकरण उपलब्ध करवाने के लिए दिव्यांगजनों को चिन्हित कर विशेष अभियान चलाकर उन्हें लाभान्वित करने के लिए विशेष योग्यजन शिविरों का आयोजन 11 से 30 जून तक होगा। शिविर सभी उपजिला चिकित्सालय, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर प्रातः 9.30 बजे से दोपहर 3.00 बजे तक आयोजित होंगे। जिसके अन्तर्गत दिव्यांगजनों को आधार कार्ड, दिव्यांग प्रमाण पत्र, पेंशन पीपीओ/आय प्रमाण पत्र, एक पासपोर्ट साईज फोटो लेकर उपस्थित होना है। ग्यारह जून को बीकानेर ब्लॉक में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, देशनोक, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, बरसिंहसर, श्रीडूंगरगढ़ ब्लॉक में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मोमासर, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गुसाईसर बड़ा, कोलायत ब्लॉक में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गजनेर, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गडियाला, बज्जू ब्लॉक में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गोडू, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बीकमपूर, खाजूवाला में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र दंतौर, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र 8 केवाईडी, पुगल ब्लॉक में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र छतरगढ़, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अमरपुरा, नोखा ब्लॉक में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र जसरासर, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मुकाम, पांचु ब्लॉक में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पांचू, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कक्कू, लूणकरणसर ब्लॉक में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र महाजन, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कालू में शिविर का शुभारंभ होगा।

हरियालो राजस्थान के तहत वृक्षारोपण और पौधशाला तकनीकी तैयारी कार्यशाला आयोजित

जयपुर टाइम्स

बीकानेर मुख्यमंत्री की बजट घोषणा की बिंदु संख्या 45(1) के तहत हरियालो राजस्थान को साकार करने हेतु वन मंडल छतरगढ़ में पौधारोपण एवं पौधशाला में पौध तैयारी पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन मंगलवार को किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता उप वन संरक्षक श्री दिलीप सिंह राठौड़ ने की, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ लेखाधिकारी श्री देवेंद्र सिंह राठौड़ उपस्थित रहे। क्षेत्रीय वन अधिकारी बेरियावली श्रीमती विजय लक्ष्मी ने पौधशाला में पौध तैयारी पर तकनीकी जानकारी साझा की। साथ ही क्षेत्रीय वन अधिकारी श्री योगेंद्र सिंह राठौड़ ने फॉरेस्ट में फील्ड स्टाफ के कर्तव्यों पर व्याख्यान दिया एवं 11 जून को होने वाली वन्यजीव गणना पर ध्यान देने योग्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला। रेंजर भरवेन्द्र सिंह द्वारा प्लस ट्री की पहचान कर उनके चयन में बरती जानी तकनीक की जानकारी दी गई। फॉरेस्टर अनिल बिश्नोई ने खींप तथा फोग की झाड़ियों में खेजड़ी के बीज की बुवाई कर खेजड़ी के पौधे तैयार करने के नवाचार के बारे मे प्रतिभागियों को जानकारी दी। प्रवीण बिश्नोई द्वारा सीड बॉल बनाने की विधि तथा उन्हें किस प्रकार वन क्षेत्रों में लगाया जाएगा के बारे मे विस्तार से बताया गया। वन भूमि के रिकॉर्ड संधारण में वनखंडों की फाइल तैयार करने में बरती जाने वाली सावधानियों के संबंध में वन रक्षक प्रियंका द्वारा बताया गया। पौधशाला में पौधों को होने वाली बीमारियों व उसके समाधान के बारे क्षेत्रीय वन अधिकारी छत्तरगढ़ द्वारा विस्तार से जानकारी दी गई। पौधशाला में गुणवत्ता के पौधे तैयार करने के लिए अपनाई जाने वाली तकनीक के बारे में जानकारी दी गई। कार्यशाला की आवश्यकता पर क्षेत्रीय वन अधिकारी सत्तासर श्री बाबू लाल और क्षेत्रीय वन अधिकारी छतरगढ़ ने श्री प्यारे लाल ने भी विचार रखे। कार्यक्रम के अंत में उप वन संरक्षक ने वृक्षारोपण की सही विधि का लाइव डेमो प्रस्तुत किया और इस वर्ष के वृक्षारोपण को सफल बनाने के लिए सभी प्रतिभागियों को अग्रिम बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन सहायक लेखाधिकारी श्री मदन मेघवाल ने किया। कार्यशाला का उद्देश्य हरियालो राजस्थान अभियान को सफल बनाने के लिए वन कर्मचारियों को वृक्षारोपण एवं पौधशाला की तकनीकी जानकारी प्रदान करना था, ताकि आगामी वृक्षारोपण में सफलता प्राप्त की जा सके।

राजस्थान राज्य अनुसूचित जाति विश्र एवं विकास आयोग के अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार नायक ने अनुजा निगम की योजनाओं की समीक्षा की

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर राजस्थान राज्य अनुसूचित जाति विश्र एवं विकास आयोग के माननीय अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार नायक मंगलवार को सवाई माधोपुर जिले के दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने जिला कलक्टर शुभम चौधरी से शिष्टाचार भेंट कर अनुजा निगम की विभिन्न योजनाओं के संबंध में विभागीय अधिकारियों के साथ कलक्टर कक्ष बैठक आयोजित की। इस दौरान अध्यक्ष राजेन्द्र कुमार नायक ने अनुजा निगम के माध्यम से अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति व दिव्यांगजनों सहित आर्थिक व कमजोर वर्ग के परिवारों के लिए स्वरोजगार, व्यवसायिक शिक्षा, ऋण उपलब्धता के संबंध में जानकारी लेते हुए लाभार्थियों को जागरूक कर सरकार की योजनाओं का अधिकाधिक लाभ प्रदान करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी विभाग आपसी समन्वय से कार्य करते हुए लोगों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने का प्रयास करें। बैठक के पश्चात परियोजना प्रबंधक अनुजा निगम सवाई माधोपुर की योजनाओं के संबंध में जानकारी प्रदान करने हेतु कलेक्ट्रेट सभागार में प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। प्रेस वार्ता को सम्बोधित करते हुए आयोग अध्यक्ष ने बताया कि अनुजा निगम की योजनाओं में अनुसूचित जाति के लोग एवं विकलांग विभाग के पोर्टल पर आवेदन कर ऋण से लेकर अनुदान ले सकते है। टेक्सी, ई-रिक्शा भी ऋण पर खरीद सकते है। जिस पर अनुदान दिया जा रहा है। कृषि, पशुपालन कार्यों पर 50 प्रतिशत तक अनुदान मिल रहा है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन के स्मृति स्थलों के भ्रमण हेतु पंच तीर्थ बस सेवा प्रारम्भ की गई है। ताकि उनके द्वारा समाज में दिए गए अमूल्य योगदान से आमजन को अवगत कराया जा सके। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार का उद्देश्य आयोग की योजनाओं की जानकारी देना और अनुसूचित जाति के लोगों की समस्याओं का समाधान कर समाज की कुरीतियों को दूर करना है। उन्होंने कहा कि आयोग के वार्षिक प्रतिवेदन के शत-प्रतिशत लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया गया है। इस दौरान अतिरिक्त जिला कलक्टर संजय शर्मा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी गौरव बुड़ानिया, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ओमप्रकाश मीना, सीओं एससी एसटी मनीष शर्मा, उप निदेशक मीना आर्य सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

अवैध शराब के मामले में फरार आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। जिले की सोने का गुर्जा थाना पुलिस ने कार्यवाही करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। सोने का गुर्जा थानाधिकारी महेश चंद शर्मा ने बताया कि 31 मई 2025 को दोपहर हेड कांस्टेबल नरेंद्र कुमार के द्वारा अवैध देशी शराब 1584 पव्वों को जब्त किया था। जिसके बाद अज्ञात आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। मामला दर्ज होने के बाद जिला पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरड़ा के निर्देश पर मामले में फरार चल रहे भूपसिंह उर्फ पिन्टू पुत्र मानसिंह जाति ठाकुर निवासी गांव गोपालपुरा थाना सोने का गुर्जा को मुखबिर की सूचना के आधार पर गांव गुनराईच से गिरफ्तार किया है। उक्त शराब को लेकर आरोपी से पुलिस पूछताछ कर रही है।

विटामिन ए अभियान, एसीएमएचओ ने किया अस्पतालों और आंगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने तथा रतौंधी सहित अन्य आँखों की बीमारियों से बचाव के लिए से विटामिन ए की दवा पिलाने का विशेष अभियान जिले भर में चलाया जा रहा है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ धर्मसिंह मीणा ने बताया कि इस अभियान के दौरान 9 माह से 5 वर्ष तक के बच्चों को विटामिन ए की खुराक आंगनबाड़ी केंद्रों सहित जिले के सभी उप स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, जिला अस्पताल पर पिलाई जा रही है। इसके लिए सभी चिकित्सा अधिकारी प्रभारियों तथा एएनएम को दिशा निर्देश जारी कर दिए गए है। इसी क्रम में एसीएमएचओ डॉ. गौरव मीणा ने फील्ड में जाकर अभियान के क्रियान्वयन की समीक्षा की उन्होंने राजाखेड़ा, मरैना में चिकित्सा संस्थानों और आंगनबाड़ी केंद्रों का निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि विटामिन ए की खुराक हर छः माह के अंतराल पर पिलाई जाती हैं उन्होंने बताया कि विटामिन ए आंखों की बीमारियों जैसे रतौंधी व अंधता के साथ साथ बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करने के लिए भी आवश्यक है। विटामिन ए से बच्चों में दस्त एवं निमोनिया जैसी बीमारियों के घातक प्रभाव में कमी लाई जा सकती है।

चिकित्सा विभाग ने सोजत में तीन लैब पर कसा शिंकजा

बड़ी कार्यवाही में गंभीर अनियमितता पर दो लैब को सील किया

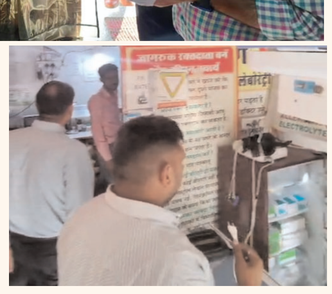

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निसं.) चिकित्सा विभाग की टीम ने बुधवार को पाली जिले के सोजत सिटी में कार्यवाही को अंजाम दिया। आमजन के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करने के मामले में तीन लैब पर कार्यवाही की है, और उस पर शिकंजा कसा । सीएमएचओ डॉ.विकास मारवाल के नेतृत्व मे कार्यवाही की गई, जिसमें भारी अनियमितता पाए जाने पर दो लैब को सील किया गया। वहीं एक लैब को सात दिवस में पाई गई कमियों को सुधारने के निर्देश दिए है। सीएमएचओ डॉ. मारवाल ने बताया कि चिकित्सा विभाग को लंबे समय पाली शहर सहित जिले में संचालित हो रही लैबों में अनियमितता की शिकायतें मिल रही थी। इस पर बुधवार को चिकित्सा विभाग की टीम ने सोजतसिटी कस्बे में संचालित लाइफ क्योर डायग्नोस्टिक सेंटर का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान टीम को लैब में कई तरह की अनियमितताएं मिली। मारवाल के नेतृत्व में की गई इस कार्यवाही में इस लैब पर सीएमएचओ कार्यालय से जारी लाईसेंस भी नहीं पाया गया। इसी लैब में बायो मेडिकल वेस्ट मेनेजमेंट सिस्टम सही तरीके से निस्तारित नहीं पाया गया। पोल्यूसन कंट्रोल संबंधी,स्टॉफ भी योग्यताधारी नहीं मिला। साथ ही इसी लैब में एक्स-रे मशीन में एक्स-रे करने वाले रेडियोग्राफर भी नहीं मिला। खिड़की दरवाजों पर लीड शील्ड नहीं पाई गई। इसी तरह पूरण डायग्नोस्टिक सेंटर का भी निरीक्षण किया गया। इसी लैब में भी लैब में एक्स-रे मशीन में एक्स-रे करने वाले रेडियोग्राफर भी नहीं मिला। खिड़की दरवाजों पर लीड शील्ड नहीं मिली साथ ही कई तरह की अनियमितताएं मिली। चिकित्सा विभाग की टीम ने गंभीरता से लेते हुए इन दोनों लैब को सील कर दिया। साथ ही तीसरी लैब शिवाय एक्स-रे लैब में कम अनियमितताएं मिलने पर सात दिवस में व्यवस्थाएं सुधारने के निर्देश दिए।

बाबा रामदेव मेले में लगेगा नेत्रकुम्भ, 1 लाख से अधिक लोगों को मिलेगा निःशुल्क नेत्र उपचार

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। सक्षम, राजस्थान की ओर से आगामी बाबा रामदेव मेले में नेत्रकुम्भ के आयोजन को लेकर प्रेसवार्ता का आयोजन किया गया। स्थानीय सेवा सदन में आयोजित प्रेसवार्ता को सम्बोधित करते हुए सक्षम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री चन्द्रशेखर ने कहा आंखों के प्रति जागरूकता कम होती जा रही हैं, स्क्रीन टाईम सभी का, विशेष रूप से बच्चों का बढ़ता जा रहा है। ऐसी युवा पीढ़ी, आने वाले अपने देश का भविष्य है उसे हम कैसे सुरक्षित रखें, एक चुनौती बनता जा रहा है। इन्हीं बातों को लेकर सक्षम का प्रयास है, पश्येम शरदः शतम् अर्थात् सौ वषो तक भगवान की बनाई इस सुन्दर सृष्टि को हम देख पाए। प्रेसवार्ता में सक्षम राजस्थान की सदस्या नेत्ररोग विशेषज्ञ डॉ. मधु गोयल एवं प्रदेशाध्यक्ष डॉ.क्षमाशील गुप्त उपस्थित रहें। प्रेसवार्ता में संगठन मंत्री द्वारा सक्षम का उद्देश्य और गतिविधियों की जानकारी पत्रकारों से साझा करते हुए बताया सक्षम संस्था जयपुर द्वारा पिछले तीन कुम्भ के मेलों में नेत्रकुम्भ महाशिविर का आयोजन किया गया था, जिसमें 4.86 लाख लोगों की नेत्र जॉच, 3.56 लाख लोगों को चश्मा वितरण एवं 40 हजार लोगों के ऑखों का ऑपरेशन किया गया था। संगठन मंत्री ने इस दौरान बाबा रामदेव समाधी स्थल पर आयोजित होने वाले नेत्रकुम्भ में नेत्र जांच एवं उपचार शिविर व्यवस्थाओं की रूपरेखा से अवगत कराते हुए बताया बाबा रामदेव ने 33 वर्ष की उम्र में जीवीत समाधी ली थी, इसलिए रूणीचा, पोकरण में दिनांक 01 अगस्त, 2025 से 02 सितम्ब्र, 2025 तक 33 दिवसीय नेत्र जॉच एवं उपचार शिविर का आयोजन किया जाएगा। इसमें सक्षम संस्था जयपुर, राजस्थान सरकार एवं अन्य सहयोगी संस्थाओं का सहयोग रहेगा। लगभग 6 एकड़ भूमि पर सात जर्मन हैंगर बनाये जाएगें। इनमें 50 ओ.पी.डी., चश्माघर, स्वागत पाण्ड़ाल, चिकित्सक एवं अन्य स्टॉफ आवास, भोजन आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था रहेगी।

आंखों की जॉच,चश्मा और दवा मिलेगी निःशुल्क

नेत्रकुम्भ में प्रतिदिन 4 से 5 हजार श्रद्धालुओं की नेत्र जॉच, दवा वितरण तथा चश्मा बनाकर हाथों हाथ देने की व्यवस्था की गई है। इस शिविर में लगभग 1.25 लाख लोगों की जॉच एवं उपचार का लक्ष्य रखा। इसके अतिरिक्त ऐसे श्रद्धालु जिनकी आंखों में मोतिया बिंद या अन्य ऑपरेशन की आवश्यकता होगी, उन्हे उनके निवास जिले में सरकारी या निजी चिकित्सालयों में निःशुल्क ऑपरेशन की व्यवस्था की जाएगी। रावदेवरा नेत्रकुम्भ में प्रतिदिन 20 नेत्ररोग विशेषज्ञ, 50 ऑप्टोमेट्रिस्ट तथा लगभग 300 कार्यकर्ता उपस्थित रहेंगे। सक्षम संस्था इस शिविर में आमजन से नेत्रदान के लिए आव्हान करेगा। इस शिविर में नेत्रदान की प्रवृति आमजन में बढ़े इस दृष्टि संतों का प्रवास रहेगा।

इन संस्थाओं का भी रहेगा सहयोग

स्थानीय बाबा रामदेव मंदिर ट्रस्ट, सीमा जन कल्याण समिति, राष्ट्रीय सेवा भारती, विद्या भारतीय विश्व हिन्दू परिषद, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कॉलेज विद्यार्थी एवं मेडिकल छात्र, नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन, भारत विकास परिषद, राजस्थान शिक्षक संघ, जैसलमेर की जन सेवा समिति का विशेष सहयोग रहेगा। प्रेसवार्ता के अंत में सक्षम की ओर से सभी का आभार व्यक्त किया गया साथ ही नेत्रकुम्भ में आने का विशेष आग्रह किया।

जिला समन्वय समिति एवं पुस्तकालय सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

जयपुर टाइम्स

धौलपुर(निसं.)। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् उदयपुर के वार्षिक पंचांग 2025-26 के निर्देशन में जिला समन्वय समिति एवं पुस्तकालय सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी महेश कुमार मंगल की अध्यक्षता में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाइट के कॉन्फ्रेंस हॉल में किया गया। बैठक में प्रमुख बिन्दुओं भारतीय भाषा ग्रीष्मकालीन षिविर 10 जून से 16 जून तक नीरज मित्तल, शाला दर्पण रैंकिग एवं जिला रैंकिग सीडीईओ धौलपुर महेष कुमार मंगल, एपीएआर अभियान द्वारा एपीसी समसा विषाल गुप्ता, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, विष्व योग दिवस एवं विद्यालयों में जल भराव की समस्या तथा मरम्मत योग्य विद्यालयों का चिन्हीकरण करने हेतु जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक मुख्यालय सुक्खोदेवी रावत ने अवगत कराया, शाला सम्बलन, टिक्टस समाधान एवं प्रवेषोत्सव एवं नवीन नामांकन की तैयारी द्वारा सीबीईओ दामोदर मीना, शाला स्वास्थ्य कार्यक्रम एसएचपी कृष्णगोपाल गौड, आधार जनआधार प्रमाणीकरण समीक्षा, ट्रांजेक्षन रेट नीति आयोग, अनुपयोगी सामग्री की समीक्षा एवं स्टाॅफिग पैटर्न पर चर्चा द्वारा एडीपीसी समसा जितेन्द्र सिंह जादौन, पुस्तकालय पर चर्चा द्वारा राजवीर सिंह क्रांति पुस्तकालयाध्यक्ष राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तसीमों, हरियालों राजस्थान द्वारा सीबीईओ सैपऊ रामप्रसाद राघव द्वारा चर्चा की गई। बैठक का संचालन अलका शर्मा वरिष्ठ व्याख्याता डाइट धौलपुर के द्वारा किया गया। बैठक में कल्याण मीना सीबीईओं बाड़ी, धर्मसिंह आरपी सीबीईओं सरमथुरा, सविता सिंह एसीबीईओं धौलपुर, चरन सिंह आरपी सीबीईओं राजाखेडा, बबीता पाराषर एपीसी समसा धौलपुर, इन्दुषेखर शर्मा उपप्रधानाचार्य, नीरज मित्तल, रनवीर सिंह छौंकर, रनवीर सिंह रावत प्रधानाचार्य डण्डौली, दुष्यन्त कुमार, पंकज कुमार, अभय पाराषर, दयाराम, प्रीति आदि उपस्थित रहें।

द्वितीय पाटोतस्व पूर्णाहूति के साथ हुआ सम्पन्न

मांडलगढ़(निसं.) मेवाड़ के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल जोगणियां माता शक्तिपीठ के मन्दिर पर स्वर्ण कलश प्रतिष्ठा के द्वितीय पाटोत्सव के अवसर पर आयोजित 11 कुण्डीय सप्त दिवसीय शिवशक्ति महायज्ञ वैदिक मंत्रोच्चारों और हजारों श्रद्धालुओं के मध्य मंगलवार को पूर्णाहूति के साथ सम्पन्न हो गया। श्वेत संगमरमर के पत्थरों से निर्मित भव्य मन्दिर के शिखर पर स्वर्ण कलश का सहस्त्र धारा अभिषेक हुआ। प्रातः09-15 बजे जोगणियां माताजी के छप्पन भोग चढ़ाया गया वहीं प्रातः 10-15 पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ मंदिर शिखर स्वर्ण कलश पर सहस्र धारा अभिषेक किया गया । दोपहर 12-15 बजे अभिजीत मुहूर्त में शिवशक्ति महायज्ञ कलश प्रतिष्ठा वार्षिक महोत्सव की पूर्णाहुति की गई । जोगणिया माता शक्तिपीठ प्रबंधन एवं विकास संस्थान के अध्यक्ष सत्यनारायण जोशी ने बताया कि 11 कुंडिया शिवशक्ति महायज्ञ में सैकड़ों साधु संतों का आगमन हुआ। धार्मिक कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक गांव से प्रभात फेरियों के श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया । राकेश मिश्रा ने शिव पुराण कथा का वाचन भी किया। सोमवार की रात्रि आयोजित विशाल भजन संध्या सांस्कृतिक कार्यक्रम भारत माता को समर्पित जोगणिया माता के दरबार मे मुंबई से आए कलाकारों आशीष केल्विन डांस ग्रुप मुंबई की ओर से नवदुर्गा डांस की प्रस्तुति दी गई प्रियांशी की ओर से अनोखा भारत पर आकर्षक प्रस्तुति दी गई। जोगणियां माता शक्तिपीठ वेद विद्यालय के छात्रों ने मंत्रोच्चार कर सभी को आनंदित किया। जोगणियां माता शक्तिपीठ मंदिर परिसर में नवदुर्गा के नौ स्वरूपों की 5 वर्ष से लेकर 9 वर्ष की कन्याओं का पूजन किया गया। रात्रि में भजन संध्या के दौरान उपस्थित विशाल जन समूह को संबोधित करते हुए संस्थान के अध्यक्ष सत्यनारायण जोशी ने शक्तिपीठ संस्थान की ओर से कराए जा रहे विकास कार्य, धार्मिक कार्यक्रम गौशाला, वेद विद्यालय, मंदिर निर्माण सौंदर्य करण की जानकारी दी।अध्यक्ष सत्यनारायण जोशी ने भारत माता को समर्पित कार्यक्रम में संबोधित करते हुए ऑपरेशन सिन्दूर की प्रशंसा की। मध्य रात्रि में आकर्षक आतिशबाजी की गई। शिवशक्ति महायज्ञ के आचार्य पंडित सांवरमल शर्मा और पंडित अनिल कुमार जोशी के नेतृत्व में सैकड़ो यजमानों ने आहुति देकर उज्वल भविष्य की कामना की । वेद विद्यालय के प्रधानाचार्य नारायण लाल शर्मा वेद विद्यालय के अध्यापक व बटुक आदि मौजूद रहे । इस अवसर पर नूण का गणेश जी के महंत राम रंगीला दास , मेंड़केश्वर महादेव के महंत नंदकिशोर महाराज , सावलेश्वर महादेव के महंत राम मुनि महाराज सहित क्षेत्र भर के हजारों श्रद्धालु उपस्थित रहे। प्रधान यजमान का सौभाग्य सीताराम धाकड़ को प्रोत हुआ। शक्तिपीठ संस्थान के भंवरलाल त्रिपाठी, शिवकुमार त्रिपाठी, महेंद्र कुमार भट्ट, सरपंच राजकुमार सेन, नवल राम गुर्जर डॉक्टर सतीश शर्मा, बख्तावर सिंह शक्तावत, देवी लाल धाकड़, सूरजमल गुर्जर , मनोज कुमार मलिक ,भंवर सिंह चुंडावत, कन्हैयालाल मेवाड़ा , बालू लाल सुथार, लक्ष्मण लाल धाकड़ ,रामनारायण मेवाड़ा, तुलसीराम धाकड़, रतन लाल कच्छावा, महावीर सिंह , कन्हैयालाल धाकड़, लेखाकार धनराज छीपा, व्यवस्थापक शंकर लाल धाबाई सहायक व्यवस्थापक महेंद्र सिंह सोलंकी आदि उपस्थित रहे।

कृषक जागरूकता अभियान आयोजित

बिजौलियां(निसं.) । राज्य सरकार द्वारा आयोजित विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत ग्राम पंचायत बिजौलियां खुर्द और थड़ोदा में कृषक जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। नोडल सहायक कृषि अधिकारी उदयलाल कोली द्वारा कृषि विभाग की अनुदान योजना की विस्तृत जानकारी देते हुए तारबंदी ,फार्म पॉन्ड, कृषि यंत्र, पाइपलाइन ,फव्वारा, ड्रिप और उद्यान विभाग की योजना के साथ कृषि तकनीकी पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। कृषि विज्ञान केंद्र भीलवाड़ा के संजय बिश्नोई और अनीता यादव ने कृषकों को विभिन्न योजनाओं और मृदा स्वास्थ्य नमूना लेने की तकनीक का प्रशिक्षण दिया ।

पायलट की पुण्यतिथि पर मरीजों को बांटे फल

जयपुर टाइम्स

बिजौलिया(निसं.) । पूर्व केंद्रीय दूरसंचार एवं प्रौद्योगिकी मंत्री राजेश पायलट की 25 वीं पुण्यतिथि पर कांग्रेस पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने राजकीय उप जिला चिकित्सालय में मरीजों को फल वितरण किया गया। इस मौके पर जिला परिषद सदस्य अंकित तिवारी, डॉ.अंसार खान, डॉ. मुकेश धाकड़,नगर मंडल अध्यक्ष अनिल राव, रामफूल धाकड़ एनएसयूआई अध्यक्ष कपिल मेवाड़ा सेवादल जिला महासचिव, रणजीत सिंह कानावत, विशाल तिवारी, दिनेश पालीवाल, किशन खटीक, राहुल सेठिया, मनीष टाक व महेंद्र सिंह समेत कई कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कार्यालय नगरपालिका मण्डल राजलदेसर जिला चूरू (राज.)

Email-raj.churu.bika@gmail.com Phone number 01567-294504

क्रमांकः- न.पा.रा./2025-26/2002 दिनांक- 11.06.25

आपत्ति विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान नगरीय क्षेत्र (कृषि भूमि को गैर कृषि प्रयोजन उपयोग के लिए उपयोग की अनुज्ञा और आंवटन) नियम 2012 के तहत कृषि भूमि रूपान्तरण उपरान्त कृषि भूमि के पट्टे के तहत स्वामित्व पट्टे आवंटन व नीचे वर्णित भूमि मे अपने अधिकार राजस्थान नगरपालिका अधिनियम 2009 की धारा 69-क के तहत आवासीय प्रयोजन हेतु व तामिर स्वीकृति हेतु पत्रावलीया प्राप्त हुई है। उक्त वर्णित पत्रावलीयो के पट्टे आवंटन के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति मय दस्तावेजो के अन्दर मियाद 7 दिवस मे इस कार्यालय मे प्रस्तुत करे। अन्यथा बाद गुजर मियाद प्रस्तुत आपत्तियो पर कोई विचार नही किया जायेगा ।

क्र.सं	नाम आवेदनकर्ता	पता	क्षेत्रफल	प्रयोजन
01	श्री भीमसेन बाफना पुत्र ओमप्रकाश बाफना	वार्डन 34 राजलदेसर	441.98 वर्गमीटर	69-क / निर्माण स्वीकृति

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका राजलदेसर

नगर परिषद सुजानगढ (चूरू) राजस्थान

E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/स्टोर शाखा/2025/2164 दिनांक :– 09.06.2025

निविदा सूचना – 2025

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मस से निविदा दिनांक 17.06.2025 को दोपहर 3:00 बजे तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रतियां दिनांक 17.06.2025 को दोपहर 1:00 बजे तक विक्रय की जावेगी प्राप्त निविदायें उसी दिन उपस्थित ठेकेदारों के समक्ष सायं 4:00 बजे खोली जावेगी। उक्त निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड क्रमांक–(DLB2526GSOB07314), (DLB2526GSOB07315) कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

आयुक्त
नगर परिषद सुजानगढ

राज.संवाद/सी/25/4038

नगर परिषद सुजानगढ (चूरू) राजस्थान

E-mail id:- nps222419@gmail.com Phone no. 01568-222419

क्रमांक :–न.प.सु/स्टोर शाखा/2025/2146 दिनांक :– 06.06.2025

–: ई–निविदा सूचना–2025–26 :–

नगर परिषद सुजानगढ़ द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिये उपयुक्त सक्षम श्रेणी के राज्य सरकार के विभागों में प्रजीकृत ठेकेदारों/फर्मों से निविदा दिनांक 25.06.2025 तक आमन्त्रित की जाती है। निविदा प्रपत्रों को वेबसाईट https://eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड कि जा सकता है एवं निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.sppp.raj.gov.in पर प्राप्त की जा सकती है। निविदा का बीड क्रमांक (DLB2526GLOB07382), (DLB2526GLOB07384), (DLB2526GLOB07386) है। कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगर परिषद सुजानगढ के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकती है।

आयुक्त
नगर परिषद सुजानगढ

राज.संवाद/सी/25/4037

कार्यालय नगर पालिका राजगढ (चूरू)

क्रमांक :– 1489–1491 दिनांक :–04.06.2025

Notice Inviting Bid

Bids for NGO/FIRM/CON. are invited from interested bidders upto 05:00 PM (time) 07.06.2025 (date). Other particulars of the bid may be procurement portal (upto visited on http://sppp.raj.nic.in) of the state website. The approximate value of the procurement in Rs 12.94 LAC

NIB Code	UBN Code
DLB2526A2205	DLB2526GSOB07172
	DLB2526GSOB07173
	DLB2526GSOB07174
	DLB2526GSOB07175

राज.संवाद/सी/25/4003 Executive Officer

राजस्थान - सरकार

कार्यालय उपनिदेशक आयुर्वेद विभाग, जिला चूरू

Email- dao.chu.ayu@rajasthan.gov.in Conact No 01562-250146

क्रमांक- स्टोर / निविदा / योग दिवस / 2025-26 / 2559-62 दिनांक- 10.6.25

योग दिवस 2025 मे प्रचार-प्रसार हेतु सामग्री मुद्रण के लिये निविदा सूचना 04 / 2025-26

राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 एंव नियम 2013 के प्रावधानों के अनुसार सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि निदेशालय आयुर्वेद विभाग राजस्थान अजमेर के पत्र क्रमांक प. 5/ सांख्यिकी - 1 / अ. यो. दि. / 2025 / 105 पार्ट-4 / 2024-101078 / राजकाज रेफरेंस नं. 15775706 दिनांक 09.06.2025 के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 के आयोजन हेतु प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्राप्त हुई है। जिसके क्रम में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 के प्रचार-प्रसार हेतु (बैनर / तख्ती विनायल / बैनर +पेस्टिंग/पम्पलेट/आमंत्रण पत्र) का मुद्रण करवाया जाना है। इस हेतु निविदा प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते है ।

क्र.स	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (रूपये में)	निविदा प्रपत्र शुल्क (18% GST सहित)	प्रतिभूति राशि (2 प्रतिशत)	निविदा फार्म बेचने की दिनांक व समय	निविदा कार्यालय मे जमा कराने की दिनांक व समय	निविदा खोले जाने की दिनांक व समय
1	अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025 के प्रचार-प्रसार हेतु सामग्री मुद्रण का कार्य	300000/- रूपये	200+36= 236/-	6000/-	11 जून 2025 से 17 जून 2025 को सांय 06.00 बजे तक	18 जून 2025 को सुबह 10.00 बजे	18 जून 2025 को दोपहर 01.00 बजे

निविदा आमंत्रण की शर्ते-

निविदा प्रपत्र कार्यालय समय में कार्यालय से प्राप्त कर सकते है या www.sppp.rajasthan.gov.in पोर्टल पर जाकर डाउनलोड कर सकते है।
निर्धारित समय के पश्चात प्राप्त कोई भी निविदा स्वीकार नही कि जायेगी तथा निविदा या उसके किसी भाग को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरकर्ता के पास सुरक्षित रहेगा एंव सशर्त निविदा स्वीकार नही की जायेगी ।
प्राप्त निविदाओं को निर्धारित दिनांक व समय पर उपापन समिति एवं उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोला जायेगा। अपरिहार्य कारणों से निविदा उस दिन नही खोली जाने पर उसी समय उपस्थित निविदादाताओं को सूचित कर दिया जायेगा ।
सामान्य वित व लेखा नियम / राजस्थान लोक उपापन में पारदर्शिता अधिनियम 2012 या नियम 2013 की समस्त शर्तें व राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर जारी समस्त निर्देश मान्य होगें ।

उपनिदेशक
आयुर्वेद विभाग जिला चूरू

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, गुरूवार
12 जून, 2025

राजेश पायलट को किया याद

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। पूर्व केंद्रीय मंत्री किसान मसीहा दिग्गज किसान नेता रहे राजेश पायलटकी 25 वी पुण्यतिथि पर बुधवार को गाव सिरियासर में कांग्रेस मण्डल अध्यक्ष समसाद खान की अध्यक्षता में पुष्पांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर जरूरतमंद लोगों को ज्यूस वितरण किया गया। ज्ञात रहे मेहनतकश मजदूर भाईयों संग मिलकर राजेश पायलट को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मण्डल अध्यक्ष खान ने उपस्थित माता बहिनों व मजदूर साथियों के समक्ष पायलट के जीवनकाल के दौरान किए मजदूर व किसान हितों के बारे में बताया कि आप सदैव किसान हितैषी रहें। भारतीय वायुसेना से लेकर बतौर जनप्रतिनिधि आप का जीवन हमारे लिए प्रेरणादायक रहेगा और प्रेरणा दिवस के रूप में याद किया जाएगा। इस दौरान बहादुर सिंह, जगदीश प्रसाद, फूलाराम, सुमन देवी, कमला देवी, किरण देवी, मंजू देवी, संगीता देवी सहित कई लोग उपस्थित रहे।

पौधरोपण कर किया श्रमदान

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। पंचायत समिति मंडावा की ग्राम पंचायत पिलानी खुर्द में जल ग्रहण विकास व भू संरक्षण विभाग और पंचायत समिति के संयुक्त तत्वाधान में गोष्ठी व पौधरोपण और श्रमदान कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में विकास अधिकारी लक्ष्मी नारायण मीणा, अधिशासी अभियंता सुभाष चंद्र, सहायक अभियंता प्रवीण मोटसरा, सरपंच प्रतिनिधि सुभाष चंद्र, सहायक विकास अधिकारी राकेश जानू , दिलीप बुडानिया, शिवकुमार ढाका, मामराज, उपसरपंच महेश कुमार, ग्राम विकास अधिकारी मोहित, विकास भालोठिया, सुनील कुमार शर्मा व नागरिकों की ओर से ग्राम पिलानी खुर्द में "वंदे गंगा, जल संरक्षण जन अभियान" के तहत पौधरोपण कार्यक्रम गिलानी जोहडी में 11 जून को संपादित किया गया। इस अवसर पर विकास अधिकारी ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि पानी बहुत अनमोल है, जिसका संरक्षण किया जाना अति आवश्यक है, राज्य सरकार के अभियान की मंशा के अनुरूप सभी नागरिकों को इस जन अभियान में भाग लेकर जन संरक्षण का कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर उपस्थित लोगों की ओर से गिलानी जोहड़ में पौधरोपण व श्रमदान भी किया गया।

प्रतिभाशाली कन्याओं ने किया लाइब्रेरी का शुभारम्भ

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। ढिगाल तिराहे के समीप फ्लाई विंग्स कॉम्पीटिशन गर्ल्स लाइब्रेरी का जिया व खुशी काला ने फीता काटकर शुभारम्भ किया। निदेशक शिवकुमार काला ने बताया कि प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए लाइब्रेरी में विधार्थी रजिस्ट्रेशन करवा अध्ययन कर सकेंगे। कार्यक्रम में इंजीनियर नवीन काला, पालिकाध्यक्ष नरेश सोनी, मेघवाल समाज संघ के संरक्षक बलबीर सिंह काला,भीम आर्मी के जिला अध्यक्ष विकास आल्हा, एडवोकेट सुनिल सेवदा, सांवरमल धानिया, दिनेश काला, नथमल चोपड़ा,मदन खोवाल,जुगल चंदेलिया, प्रिंसिपल लोकेश मीणा, विष्णुकांत शर्मा, चन्द्रभान आर्य, अनिल राठी, अभिषेक मंड्रेला, रामप्रसाद महिचा,रामेश्वर निर्मल ओमप्रकाश काला खेमराज काला, महेन्द्र बाडेटिया, लच्छु बोयल, कमल चन्देलिया सहित कई लोग उपस्थित रहे।

जिला स्तरीय जनसुनवाई व समाधान शिविर 19 जून को

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा की अध्यक्षता में 19 जून को सवेरे 11 बजे ?पुराने कलक्ट्रेट परिसर स्थित जन सेवा केन्द्र में जिला स्तरीय जनसुनवाई व समाधान शिविर आयोजित किया जाएगा। एडीएम ?अर्पिता सोनी ने बताया कि जिला स्तरीय जनसुनवाई में जिला कलक्टर जिलेभर से आमजन के अभाव अभियोग सुनेंगे।

झुंझुनूं में शराब ठेकेदार यूनियन का प्रदर्शन

कोरोना पेनल्टी माफ करने, समय बढ़ाने और पुलिस हस्तक्षेप खत्म करने की मांग

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं (निस)। शराब ठेकेदारों ने आबकारी नीति के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। लिकर कॉन्ट्रेक्टर यूनियन के प्रदेशव्यापी आह्वान पर झुंझुनूं जिले के आबकारी कार्यालय के बाहर जोरदार प्रदर्शन हुआ। जिले के अलग-अलग इलाकों से पहुंचे सैकड़ों शराब ठेकेदारों ने नारेबाजी कर विरोध दर्ज कराया और मुख्यमंत्री के नाम आबकारी अधिकारी को ज्ञापन सौंपा।

तीन मांगों पर की चर्चा

प्रदर्शन का नेतृत्व यूनियन के संभाग अध्यक्ष विजेंद्र मील और जिलाध्यक्ष रोहिताश फांडी ने किया। प्रदर्शन में तीन प्रमुख मांगों को रखा गया, जिनमें कोरोना काल की बकाया पेनल्टियों को समाप्त करना, शराब दुकानों का समय रात 11 बजे तक निर्धारित करना और दुकानों पर पुलिस के अनावश्यक हस्तक्षेप को समाप्त करना शामिल है। संभाग अध्यक्ष विजेंद्र मील ने कहा कि क्लस्टर प्रणाली ने छोटे व्यापारियों की रीढ़ तोड़ दी है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर सरकार ने यूनियन की मांगों को जल्द नहीं माना तो आने वाले दिनों में पूरे प्रदेश में उग्र आंदोलन किया जाएगा। जिलाध्यक्ष रोहिताश फांडी ने कहा कि शराब व्यवसायियों की समस्याओं को लेकर सरकार ने अब तक कोई ठोस समाधान नहीं निकाला है। प्रदर्शन के दौरान शराब ठेकेदारों ने पुतला दहन कर अपना रोष जताया और सरकार की नई आबकारी नीति को व्यापार विरोधी बताया।

छोटे ठेकेदारों को भारी नुकसान

यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष पंकज धनखड़ ने प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि नई आबकारी नीति ने शराब कारोबार से जुड़े लोगों को आर्थिक संकट में डाल दिया है। खासकर क्लस्टर प्रणाली से छोटे ठेकेदारों को भारी नुकसान हो रहा है। उन्होंने कहा कि कोरोना काल के दौरान सरकार की ओर से लगाए गए जुर्माने अब भी वसूले जा रहे हैं, जबकि उस समय ठेके समय पर नहीं खुल सके थे और व्यापार नहीं हो पाया था। ऐसे में उन पेनल्टियों को माफ किया जाना चाहिए। धनखड़ ने संचालन रात 11 बजे तक करने की मांग की, ताकि व्यापार सामान्य हो सके और नुकसान की भरपाई हो।

मुख्य ब्लॉक शिक्षा कार्यालय में स्थापित नवीन सुविधाओं व साज सज्जा का लोकार्पण

जयपुर टाइम्स

मंडावा(निस)। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय मंडावा कार्यालय स्टाफ व भामाशाह के सहयोग से स्थापित नवीन सुविधाओं व साज सज्जा का लोकार्पण कार्यक्रम सीबीईओ अशोक शर्मा, नायब तहसीलदार मुकेश सिहाग के आतिथ्य में आयोजित किया गया। इस अवसर पर ब्लॉक मंडावा के राजकीय विद्यालयों की बोर्ड कक्षाओं की टॉपर रही बालिका अनीता पुत्री बनवारी लाल कक्षा 12, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भारू की ओर से फीता काट कर लोकार्पण किया गया। राज्य सरकार की बालिका शिक्षक प्रोत्साहन ओर बढ़ाव देने के विशेष कार्यक्रम के तहत बालिका से लोकार्पण करवा कर बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने का संदेश दिया गया।इस अवसर पर टॉपर बालिका का सीबीईओ अशोक कुमार शर्मा की ओर से साफा पहनाकर, मेडल, प्रतीक चिन्ह व पेन डायरी भेंट कर सम्मान किया गया। विशेष सम्मान के तहत टॉपर बालिका को मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी की कुर्सी पर बैठाकर एक दिन का चार्ज सौंपा गया। इस अवसर पर कार्यालय को एसी प्रदान करने वाले भामाशाह महावीर सिंह शेखावत एवं विश्वनाथ शर्मा, उमावि भारू के प्राचार्य राकेश कुमार ढाका, टॉपर बालिका के अभिभावकों का सीबीईओ शर्मा ने सम्मान किया गया। इस अवसर पर एसीबीईओ दामोदर प्रसाद जांगिड़, कुलदीप पूनिया एसीबीईओ नवलगढ ब्लॉक संदर्भ व्यक्ति उत्तम दाधीच, जूनियर अकाउंटेंट शीतल शर्मा, लोकेश कुमार, प्रधानाचार्य जवाहर लाल काला, महिपाल सिंह, प्रशासनिक अधिकारी रमेश कुमार, आनंद कुमार, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी संजीव कुमार जांगिड़, ब्लॉक कोऑर्डिनेटर साक्षरता मूल सिंह शेखावत, खेमचंद, राजेश दुलार, हेमंत निर्मल, धर्मेंद्र सिंह, सहायक कर्मचारी मदनलाल आदि उपस्थित रहे।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में भारतीय भाषा ग्रीष्मकालीन शिविर शुरू

जयपुर टाइम्स

मंडावा(निस)। डेडराज ढांढणियां राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मंडावा में बुधवार को राज्य सरकार के शिक्षा विभाग का विधालय में अध्यनरत छात्र - छात्राओं की भागीदारी के संबंध में सात दिवसीय भारतीय भाषा ग्रीष्मकालीन शिविर विधिवत शुरू हुआ। शिविर में अशोक कुमार शर्मा मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी-मंडावा मुख्य अतिथि रहे। विशिष्ट अतिथि कुलदीप पूनिया एसीबीईओ नवलगढ़ रहे। इस अवसर पर अशोक कुमार शर्मा सीबीईओ मंडावा एवं कुलदीप पूनिया ने शिविर में उपस्थित विधार्थियों को भारत की विभिन्न भाषाओं की जानकारी दी। इस दौरान सीबीईओ शर्मा, कुलदीप पूनिया का राजपाल सिंह श्योराण कार्यवाहक प्रधानाचार्य, संजय कुमार महला ने माल्यार्पण के द्वारा किया। शिविर में सुनीता सहायक प्रशासनिक अधिकारी, विकास कुमार कनिष्ठ लिपिक भी शामिल रहे। कार्यवाहक प्रधानाचार्य राजपाल सिंह श्योराण ने समस्त अधिकारियों व विद्यार्थियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर श्योराण ने सात दिवसीय शिविर के विधिवत शुरुआत की घोषणा करते हुए बताया सात दिवसीय अभियान राजस्थान सरकार की ओर से शुरू की गई विधार्थियों के चहुमुखी विकास की बहुत शानदार योजना है। ऐसे शिविरों से विधार्थी छुट्टियों में बहुत आनंद उठाते हैं। शिविर में हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी के साथ अन्य भाषाओं की विद्यार्थियों को जानकारी दी जाएगी।

जान-बचाने को घर में घुसा, लोगों ने चोर समझकर पीटा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं (निस)। शहर के ईदगाह क्षेत्र में मंगलवार रात एक युवक के घर में घुसने की सूचना के बाद अफरा-तफरी मच गई। घटना रात करीब 10 बजे की बताई जा रही है, जब इंद्रा नगर स्थित पार्क में अपने दोस्त से मिलने आए युवक का कुछ लोगों ने पीछा किया, जिसके बाद वह जान बचाने के लिए ईदगाह के पास एक घर में घुस गया। वहां मौजूद लोगों ने उसे चोर समझकर पकड़ लिया और उसकी पिटाई कर दी।

युवक शांतिभंग की धारा में गिरफ्तार

घटना की जानकारी मिलने पर कोतवाली थाना पुलिस मौके पर पहुंची और युवक को भीड़ से छुड़ाकर थाने ले गई। पुलिस ने युवक को शांतिभंग की धारा में गिरफ्तार कर लिया है। कोतवाली थाने के एएसआई ओमप्रकाश भाम्बू ने बताया कि उन्हें टेलीफोन के जरिए सूचना मिली कि एक अनजान युवक किसी के घर में घुस गया है। जब टीम मौके पर पहुंची तो युवक को भीड़ पीट रही थी, उसे तत्काल बचाकर थाने लाया गया और पूछताछ की गई। गिरफ्तार किया गया युवक झुंझुनूं के मोड़ा पहाड़ के पास स्थित एक बर्फ फैक्ट्री में पिछले 10 वर्षों से काम कर रहा है। युवक का कहना है कि वह इंद्रा नगर के पार्क में अपने दोस्त से मिलने आया था। उसी दौरान दो से तीन लोगों ने उसका पीछा करना शुरू कर दिया, जिससे डरकर वह जान बचाने के लिए एक घर में घुस गया। लेकिन स्थानीय लोगों ने उसे चोर समझ लिया और मारपीट शुरू कर दी। घटना के बाद इलाके में भारी भीड़ जमा हो गई थी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रण में लिया। पुलिस ने युवक को हिरासत में लेकर शांति भंग में गिरफ्तार किया है।

हवेली पर अवैध कब्जे के आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। विप्र समाज संस्थान, मण्डावा के प्रमुख श्रीराम शर्मा की अगुवाई में बुधवार को मण्डावा थानाप्रभारी राम निवास को ज्ञापन सौपकर मण्डावा नगर पालिका क्षेत्र के वार्ड पांच स्थित थलिया हवेली पर अवेध कब्जे के प्रयास के सम्बन्ध में ज्ञापन दिया गया है। ज्ञापन में आग्रह किया गया है कि वार्ड पांच में सर्राफ बगीची के पास जयदेव कुदंमल थलिया हवेली स्थित हैं जिसमें वर्तमान में गीता देवी, कांता देवी, अशोक कुमार, जगदीश, परमेश्वर लाल, पवन कुमार परिवार सहित पैतृक रूप से पीढ़ियों से निवास करते है । गत 8 जून को भूमाफिया मुरारीलाल सैनी, सुमेर सैनी, व राजेन्द्र जाट सहित अन्य व्यक्तियों की ओर से अवैध रूप से कब्ज़ा करने का प्रयास किया गया जिसमें मण्डावा थाना पुलिस की ओर से तुरन्त कार्यवाही कर सुमेर सैनी व अन्य एक व्यक्ति को पुलिस की ओर से मौके पर से गिरफ्तार भी किया गया व अन्य व्यक्ति वहां से भाग गए। ज्ञापन में उल्लेख किया गया कि इस तरह की घटना होना दुर्भाग्यपूर्ण है, शीघ्र ही उक्त असामाजिक तत्वो पर सख्त कार्यवाही कर पीडित परिवार की जान - माल की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है। ज्ञापन में बलदेव थलिया, महेश शर्मा, पीताम्बर मिश्रा, सुनील जोशी, सज्जनलाल शर्मा, किशोर, बाल किशन, विष्णु, मोतीलाल जोशी, विनोद कुमार, बनवारी, पुष्कर, राजेन्द्र, अनिल, राजीव व कमलेश सहित अनेक विप्र बंन्धुओं के हस्ताक्षर है।

जिला जन अभियोग व सतर्कता समिति की 19 जून को

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा की अध्यक्षता में 19 जून को सवेरे 10.30 बजे ?पुराने कलक्ट्रेट परिसर स्थित जन सेवा केन्द्र में चूरू जिला जन अभियोग व सतर्कता समिति की बैठक आयोजित की जाएगी।
एडीएम ?अर्पिता सोनी ने बताया कि बैठक में जिला जन अभियोग व सतर्कता समिति में विचराधीन प्रकरणों पर चर्चा की जाएगी। उन्होंने बैठक को लेकर संबंधित अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए हैं।

कैम्पर सवार बदमाशों ने कुल्हाड़ी से किया जानलेवा हमला

3 युवकों को घेरकर किया अटैक, 1 की हालत गंभीर

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं के गुढ़ागौड़जी थाना इलाके में मंगलवार रात पुरानी रंजिश के चलते कैम्पर सवार बदमाशों ने कार सवार 3 युवकों पर कुल्हाड़ी से जानलेवा हमला कर दिया। यह घटना गुढ़ा से भोड़की के बीच हुई, जिसमें 3 युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद सीकर रेफर किया गया है। पुलिस के अनुसार हमले में घायल हुए युवकों की पहचान भोड़की निवासी आशीष पुत्र कमल, अक्षत पुत्र विजेंद्र और धमोरा निवासी रोहित उर्फ जॉनी के रूप में हुई है। इनमें आशीष को सबसे ज्यादा गंभीर चोटें आई हैं। उसके हाथ और पैर पर कुल्हाड़ी से किए गए, जिससे वो गंभीर घायल हो गया। घटना की सूचना मिलते ही गुढ़ागौड़जी पुलिस ने बदमाशों की धरपकड़ के लिए इलाके में सर्च ऑपरेशन चलाया गया। कई संदिग्ध ठिकानों पर दबिश दी। दो हिस्ट्रीशीटरों की रंजिश बना हमले की वजह पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि यह हमला गुढ़ागौड़जी थाने के 2 हिस्ट्रीशीटरों रोहित महला और विकास फौजी की पुरानी आपसी रंजिश का परिणाम है। जानकारी के अनुसार हिस्ट्रीशीटर विकास फौजी के साथ तीनों घायल युवक आशीष, अक्षत और जॉनी मंगलवार रात को भोड़की से गुढ़ा की ओर जा रहे रहे। तभी रास्ते में हिस्ट्रीशीटर रोहित महला अपने साथियों के साथ एक कैम्पर गाड़ी में आया और उनकी कार को रोककर हमला बोल दिया। स्थानीय लोगों के अनुसार यह रंजिश काफी समय से चली आ रही थी और पहले भी दोनों पक्षों के बीच कहासुनी और छोटे-मोटे झगड़े हो चुके हैं। मगर मंगलवार को यह रंजिश हिंसक रूप में सामने आई। बदमाशों ने कार को घेरकर कुल्हाड़ियों और अन्य धारदार हथियारों से हमला किया। इस हमले में तीनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। राहगीरों और ग्रामीणों की मदद से उन्हें तुरंत गुढ़ागौड़जी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) लाया गया, जहां से प्राथमिक इलाज के बाद उन्हें सीकर रेफर कर दिया गया।

छुट्टी पर घर आए फौजी पर किया हमला

घटना में घायल आशीष भारतीय सेना में कार्यरत है और वर्तमान में 15 दिन की छुट्टी पर घर आया हुआ था। उसकी तैनाती अमरसर में है। वहीं अक्षत 6 महीने पहले सेना से रिटायर हुआ है। तीसरे घायल रोहित उर्फ जॉनी है। इस हमले में शामिल विकास फौजी भी पूर्व सैनिक है। गुढ़ागौड़जी थानाधिकारी राममनोहर ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल भिजवाया गया। बदमाशों की पहचान हो चुकी है और उनकी तलाश में पुलिस ने अलग-अलग जगहों पर दबिश दी है। हालांकि, अब तक कोई लिखित रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई गई है। पुलिस का कहना है कि पीड़ितों और उनके परिजनों की ओर से रिपोर्ट मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, गुरूवार
12 जून, 2025

राजेश पायलट को दी श्रद्धांजलि

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। पूर्व केंद्रीय मंत्री राजेश पायलट की पुण्य तिथि पर राष्ट्रीय जाट महासभा के कार्यालय में श्रद्धांजलि दी गई। महासभा के प्रदेश अध्यक्ष धर्मेंद्र किलक ने कहा कि राजेश पायलट ने जीवन भर किसानों के लिए संघर्ष किया और वे किसानों के मसीहा थे। कार्यक्रम में राजेश पायलट अमर रहे के नारे लगाए गए। इस अवसर पर महावीर पोसवाल, नवीन डूडी, हनुमान किलका, तरुण शर्मा, विजय मिश्रा, मुकेश चौधरी, अशोक किलका, भवानी सिंह, रितेश गुर्जर, तरुपा शर्मा, सुरेंद्र जोशी, राजकुमार दायमा, भरत सामरिया, बादल सांखला, विरु सामरिया सहित अनेक लोगों ने राजेश पायलट ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी प्रकार पूर्व केंद्रीय मंत्री व किसानों के मसीहा राजेश पायलट की 25 वीं पुण्यतिथि पर हनुमान धोरा स्थित देवनारायण भगवान मंदिर में श्रद्धा पूर्वक मनाई गई। कार्यक्रम में समाज के लोगों ने स्व. राजेश पायलट के चित्र पर पुष्पांजलि करके और 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर रामनिवास गुर्जर, नरेन्द्र गुर्जर, सुनील भडाणा, सांवरमल हाकला, किशोर डोई, मनोज बोकण, देवी लाल खटाना, रविकांत लीलू, हेमंत सराधना, कैलाश छावडी, निशांत भडाणा, उमेश भडाणा, योगेश बोकण, सुशील लीलू, अजय सराधना सहित लोग उपस्थित रहे।

चलकोई टोल मुक्त करने की मांग, ग्रामीणों ने एसडीएम को ज्ञापन दिया

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। चूरू जिले के गाँव चलकोई टोल के आसपास सभी गाँवों को टोल मुक्त करने की मांग को लेकर टोल के आसपास के गाँव के ग्रामीणों ने तारानगर एसडीएम राजेंद्र कुमार को ज्ञापन दिया। ग्रामीणों ने ज्ञापन के माध्यम से बताया कि तारानगर चूरू सडक मार्ग पर चलकोई के पास टोल बूथ लगाया गया हैं। उक्त टोल के गाँवो के आस-पास के गाँवो के लोगो पर खेत व रिश्तेदारिया होने के कारण क्षेत्र के लोगो का नियमित आगमन रहता हैं इसलिए चलकोई टोल बूथ के आस-पास के 15 किमी के वाहनों को टोल न देकर मुक्त किया जाये ऐसा नही करने पर चलकोई टोल पर अनिश्चित कालीन धरना शुरू कर टोल बन्द किया जायेगा। ज्ञापन देने वालों में शीशराम, मोहरसिंह महला, गोपीराम, सुभाष कस्वां, जयचंद मीणा, नरेन्द्र कुमार, जवाहर लाल कस्वां, सुगनाराम, हीरालाल, विनोद कुमार सहित काफी ग्रामीण मौजूद रहे।

1236 दिनों से जिले की मांग को लेकर धरना जारी

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। जनहित संघर्ष मोर्चा की ओर से जिले की मांग को लेकर लगातार 1236 दिनों से धरना दिया जा रहा है। उपखंड कार्यालय के सामने यह धरना जारी है। धरने पर बुधवार को पूनमचंद मेघवाल, एडवोकेट गंगाधर मूंड, रोशन रंगरेज, जितेंद्र भार्गव, इब्राहिम खां, पवन पारीक, साबिर अली चौहान, हीरालाल बुगालिया, जगदीश झिकनाड़िया, राधेश्याम, नगेंद्र रणवा, खड़कदास स्वामी आदि शामिल हुए और सुजानगढ़ को जिला बनाने की मांग को लेकर नारेबाजी की।

सुजला जिले की मांग, मुख्यमन्त्री के नाम दिया ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। लाडनूं बस स्टैंड पर सुजला महा सत्याग्रह के संयोजक श्रीराम भामा के आह्वान पर अनेक लोग इकट्ठा हुए और एडीएम कार्यालय तक जय सुजला मार्च किया। श्रीराम भामा, गोपाल मोयल, समीर खान खोखर, अंजू मूंदड़ा, विकलांग कल्याण समिति के छोटू लाल प्रजापत, अनिल जैन, पुरुषोत्तम पारीक, फुसदास स्वामी, राजेंद्र बेदी, नेमीचंद, पवन भोजक, महावीर प्रसाद पारीक, तिलोक चन्द आदि मार्च में शामिल हुए। अतिरिक्त जिला कलेक्टर मंगलाराम पुनिया को मुख्यमंत्री के नाम 6 सूत्री ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में लाडनू बस स्टेंड की समस्याएं दूर करने, सुजला जिला बनाने, बस स्टैंडों की परेशानियों को दूर करने, बाजार में जगह जगह फ्री पार्किंग पॉइंट बनाने की मांगे की गई हैं।

राजेश पायलट की 25 वी पुण्य तिथि पर दी श्रद्धांजलि

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष रफीक मंडेलिया के निर्देशानुसार पूर्व केंद्रीय मंत्री राजेश पायलट की 25वी पुण्यतिथि पर बुधवार को सुबह 11 बजे शहर व देहात ब्लॉक कांग्रेस कार्यालय मंडेलिया हाउस चूरू में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी सचिव रियाजत खान ने कहा कि राजेश पायलट किसानों के लोकप्रिय नेता थे। देश में उनकी अलग ही पहचान थी। पंचायत समिति प्रतिपक्ष नेता धर्मेन्द्र बुडानिया ने राजेश पायलट को किसानो और गरीबो का हितैषी बताया। उन्होने कहा कि वर्तमान समय में पायलट की नीतियों और विचारों को अपनाना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। वरिष्ठ कांग्रेस नेता मोहम्मद हुसैन निर्वाण ने भरतपुर के सांसद के रूप में राजेश पायलट के महत्वपूर्ण योगदान को बताया। नगरपरिषद पूर्व उपसभापति प्रतिनिधि रमजान खान ने राजेश पायलट के सिद्धान्तों को आत्मसात करने का आह्वान किया। रामेश्वर प्रजापति ने राजेश पायलट की पुण्यतिथि पर पौधरोपण अभियान के अन्तर्गत बीज वितरण किए। इस दौरान चूरू शहर ब्लॉक अध्यक्ष असलम खोखर, देहात ब्लॉक अध्यक्ष किशोर धान्धू, अबरार खां, अली मोहम्मद भाटी, रामचन्द्र सुण्डा, असलम खां मोयल, डूंगरसिंह राठौड, संजय भाटी, बजरंग बजाड, अजीज दिलावरखानी, घनश्याम अलवरिया, बाबू मंत्री, रामेश्वर नायक, शाहरूख खान, कृष्ण सुन्डा, समीउल्लाह, श्रवण बसेर, नवाब खां, हेमन्त सिहाग, अनीस खां, राजेश फौजी, इस्माईल भाटी, महबूब खां, प्रेम कुमार, सलीम खां, अरमान खान आदि मौजूद रहे।

वन्दे गंगा- जल संरक्षण जन अभियान' अंतर्गत साण्डवा में किया पौधरोपण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिले में वंदे गंगा - जल संरक्षण जन अभियान में विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जा रही है। अभियान अंतर्गत बुधवार को जिले के बीदासर उपखंड की ग्राम पंचायत सांडवा स्थित नर्सरी और राजकीय कन्या महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में पौधरोपण कर पक्षियों के लिए परिंडे लगाए गए। कार्यक्रम में उपखंड अधिकारी अमीलाल यादव, विकास अधिकारी राजूराम, क्षेत्रीय वन अधिकारी ओकेश यादव, पंचायत समिति सदस्य विक्रम सिंह, कृषि मंडी सुजानगढ़ क्रय विक्रय सहकारी समिति अध्यक्ष नरपत गोदारा भी उपस्थित रहे। उपखंड अधिकारी यादव ने उपस्थितों को तुलसी और पीपल के 100 पौधे वितरित किए और जल संरक्षण का संकल्प दिलाया। उन्होंने मानूसन के दौरान अधिकाधिक वर्षा जल संरक्षण और पौधरोपण का आह्वान किया। इसी क्रम में मंगलवार को ग्राम पंचायत रेड़ा के ग्राम सोनियासर उदयकरणावतान व सोनियासर सुखराम में जल ग्रहण विकास व भू संरक्षण विभाग की ओर से ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम में चरागाह विकास कार्य का लोकार्पण किया गया व साथ ही में चरागाह में पौधारोपण के लिए अग्रिम मृदा कार्य, श्रमदान कार्य, जल सरंक्षण शपथ आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसी के साथ ग्राम पंचायत तैहनदेसर में जल संरक्षण जन जागरूकता रैली व रात्रि चौपाल कार्यक्रम आयोजित कर उपस्थित लोगों को प्रतिबंधित प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने, पानी का सदुपयोग करने व अधिकाधिक पेड़-पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया गया।

जल संरक्षण के बारे में ग्रामीणों को दी जानकारी

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत ब्लॉक सुजानगढ़ के गांव बाघसरा आथूणा में जल ग्रहण विकास व भू संरक्षण विभाग की ओर से ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में तेजाजी मंदिर के प्रांगण में निर्मित सार्वजनिक कुंड का लोकार्पण किया गया। इसके बाद वहां उपस्थित लोगों ने कलश यात्रा निकाली। गांव तेलाप में पौधारोपण, पाबूजी मंदिर के प्रांगण में पौधारोपण किया गया। उपस्थित जन समुदाय ने पीपल के पेड़ की पूजा करते हुए एक अच्छी कलश यात्रा निकाली। साथ ही पास की श्रीकृष्ण गौशाला मैं गायों को गुड़ खिलाया गया। इस कार्यक्रम में अतिरिक्त कलेक्टर सुजानगढ़ मंगलाराम पुनिया, उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश वर्मा ने लोगों को जल संरक्षण के बारे में जाागृत किया। जलग्रहण विकास के अधिशासी अभियंता की ओर से जनसभा समुदाय को जन अभियान संकल्प स्वरूप शपथ दिलाई गई। मिट्टी और पानी के संचय के बारे में तकनीक से अवगत कराया गया। प्रशासक केसरा राम गोदारा की अध्यक्षता में रात्रि चौपाल आयोजित की गई। जिसमें मिट्टी पानी और इनको संरक्षित करने की तकनीको के बारे में बताया गया।

वन्दे गंगा जल संरक्षण अभियान के तहत कार्यक्रम आयोजित

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। वन विभाग के सोजन्य से बुधवार को वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत तारानगर क्षेत्रीय वन अधिकारी के अंतर्गत आने वाले कार्यालय परिसर, लवकुल वाटिका श्याम पांडिया और भालेरी नर्सरी में क्षेत्रीय वन अधिकारी सुरेन्द्र सिँह की अध्यक्षता में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। तारानगर व भालेरी नर्सरी परिसर में साफ सफाई, वनभूमि तारानगर व श्याम पांडिया में अमृत सरोवर में कचरा निकालकर सफाई कार्य और कार्यक्रम में मौजूद आमजन को नि:शुल्क तुलसी के पौधे वितरित किए गए। क्षेत्रीय वन अधिकारी सुरेन्द्र सिंह ने आमजन को संबोधित करते हुए बताया कि पृथ्वी का सिंगार पेड़ पौधे है और हम सब को पृथ्वी पर ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधे लगाकर पेड़ पौधों का संरक्षण करने का संकल्प लेना होगा जिससे हम मानव जाति पृथ्वी को स्वर्ग बना सकते हैं और हम अपना फर्ज निभा कर और आने वाली पीढ़ी को खुशहाल जीवन दे सकते हैं। नर्सरी में विशेष स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। साथ ही उपस्थित आमजन को पेड़ पोधों की प्रजातियों व महत्व के बारे में जानकारी दी गई। इसके उपरांत पर्यावरण का महत्व बताते हुए पौधे लगाकर पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए महत्वपूर्ण बाते बताई गई। ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधे लगाकर इनका संरक्षण करने व पोलीथिन का प्रयोग बंद करने की प्रतिज्ञा ली गई। उपस्थित जनो का सधन्यवाद करते हुए जलपान करवाकर कार्यक्रम का समापन किया गया। इस मोके पर कार्यक्रम में क्षेत्रीय वन अधिकारी सुरेन्द्र सिंह, सहायक वनपाल राजेन्द्रसिंह, बाबूलाल, सुनिल बागड़ी, अनीता मीणा, सुनीता पिंकेश कंवर, वनरक्षक, टेक्निशियन रामसिंह, महेंद्रसिंह, किशनलाल, दुर्गादत सहित आम नागरिक उपस्थित रहे।

युवाओं ने किया रक्तदान

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। सुजानगढ़ के विभिन्न अस्पतालो में भर्ती अलग-अलग मरीजों के लिए टीम हारे का सहारा संयोजक श्याम स्वर्णकार और चंद्र प्रकाश की अपील पर ए पॉजिटिव ब्लड ग्रुप, जो कि ब्लड बैंक मे भी उपलब्ध नहीं था, उसके 5 रक्तदाताओं प्रशांत पारीक, राहुल चौहान, किशन बिजारणिया, दिव्य जैन, संजय सोनी ने सुजानगढ़ ब्लड बैंक पहुंच कर रक्तदान किया। वही राहुल सांखला, बनवारी रोलन ने रोडू गांव से आकर स्वर्णकार की अपील पर अनजान मरीजों के लिए स्वेच्छा से रक्तदान किया। स्वर्णकार ने रक्तदान करने मे सक्षम सभी से जरुरत मंदो के लिए रक्तदान की अपील की है।

रेल की चपेट में आने से महिला की मौत

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। राजलदेसर आउटर सिग्नल के पास ट्रेन से गिरने से एक महिला की मौत हो गई। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। जीआरपी थाने को सूचना दी। पुलिस शव को लेकर राजकीय चिकित्सालय लेकर पहुंची। मृतक की पहचान सुमित्रा पत्नी लालचन्द उम्र 30 साल निवासी सुडसर के रूप में हुई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कर शव को परिजनों को सुपुर्द कर दिया।

अग्रसेन नगर में पानी की किल्लत, ज्ञापन सौंपा

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। स्थानीय अग्रसेन नगर में पीने के पानी की किल्लत को लेकर बुधवार को कॉलोनी वासियों ने समिति के अध्यक्ष वैध बनवारी लाल शर्मा के नेतृत्व में जलदाय विभाग के अधीक्षण अभियंता को ज्ञापन दिया गया। ज्ञापन मे लिखा है कि लम्बे समय से कॉलोनी में पानी की समस्या है खारा पानी आता है वो भी बहुत कम आता है मीठा पानी कई दिनों से नही आ रहा है। पानी की टंकी की सफाई नही की गई हैं बावजूद टंकी पर सफाई करने की डेट अंकित है जो गलत है। उन्होंने लीकेज को बंद करने, मीठा पानी बराबर खोलने की मांग की है। ज्ञापन देने वालों में विमल भटनागर, हुकम चंद गौड़, केप्टन के के शर्मा, विक्रम सिंह शेखावत, सोमदत शर्मा, सज्जन लाटा सहित कॉलोनी के अनेक लोग उपस्थित रहे

बेटियों यों को दी कानूनी जानकारी

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। मुख्यालय स्थित मदरसा इस्लामिया नुरुल उलूम छिम्पान वार्ड नंबर 8 में कालिका टीम प्रभारी सरिता हैड कांस्टेबल की ओर से लड़कियों को कानून की जानकारी दी गई व आत्मरक्षा के गुर सिखाए गए व शिक्षा के प्रति जागरूक होकर समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने पर जोर दिया गया। इस अवसर पर शहर ब्लॉक अध्यक्ष असलम खोखर ने कहा लड़कियाँ हर मैदान में आगे आगे बढ़ रही हैं, अपने अपने घर वालों का नाम रोशन कर रही हैं। निवर्तमान पार्षद अज़ीज़ खान ने कहा कि लड़कियां जब पढ़ती है तब दो घरों को रोशन करती हैं, दो पीढ़ियों को आगे बढ़ाती है। रॉयल विकलांग संस्थान के अध्यक्ष अख्तर खान ने शिक्षा को अपनी ज़िंदगी में अपनाना।

राहगीरों को पिलाया शरबत

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। शहर के ओम कॉलोनी निवासी राकेश शर्मा ने हर वर्ष की भांति बुधवार को भी भीषण गर्मी को देखते हुए कलेक्ट्रेट सर्किल के पास राहगीरों को ठंडा शरबत पिलाया गया। हर वर्ष यह कार्यक्रम धर्म स्तूप के पास किया जाता है, लेकिन इस बार आवागमन कम होने के कारण यह कार्यक्रम कलेक्ट्रेट सर्किल के पास किया गया। यह कार्यक्रम लगातार पांचवीं बार किया गया है। इस अवसर पर सूर्यप्रकाश, विशाल, मांगीलाल, हर्ष, पंकज, शिवम, भावेश, आदि ने कार्यक्रम में सहयोगी भूमिका निभाई।

आम रास्ते अवरुद्ध, महर्षि ने दिए अधिकारियों को निर्देश

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे मे रेल्वे की ओर से दीवार बनाई जा रही है। जिससे आमजन के रास्ते अवरूद्ध और कुछ घरों रास्ते बन्द हो रहे हैं। गन्दे पानी निकासी भी अवरूद्ध होगा। जिसकी समस्या पर पूर्व विधायक अभिनेष महर्षि मौके पर पहुंचे और आमजन से समस्या सुनी। उन्होंने कहा कि रेलवे के उच्च अधिकारियों से वार्ता कर समस्या को दुरस्त करवाने का प्रयास किया जाएगा। आमजन की नगरपालिका से सम्बन्धित सफाई व्यवस्था, मानसून में नाला नाली सफाई और कस्बे के मुख्य मार्गों पर टूटे क्रॉस नालियां की शिकायत की। जिस पर पूर्व विधायक अभिनेष महर्षि ने नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी, कनिष्ठ अभियंता को तीन दिन समस्या दुरस्त करवाने को कहा। महर्षि ने कहा कि तीन दिन बाद मैं पुन: कस्बे का मौका निरीक्षण करूंगा तब तक नाले नाली सफाई, कस्बे की सफाई व्यवस्था दुरूस्त करने, क्रॉस नाले ठीक मिलने चाहिए।

ट्रूनॉट मशीनों के लैब टेक्निशियन को दिया टीबी जांच का प्रशिक्षण

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। ट्रूनॉट मशीनों पर टीबी रोग की जांच की बेहतर और त्रुटी में सुधार के सिलसिले में एकदिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। जिला क्षय निवारण केन्द्र रतनगढ़ में आयोजित कार्यशाला में ट्रूनॉट मशीनों के जरिए टीबी रोग की जांच करने वाले लैब टेक्निशियन व लैब सहायको को प्रशिक्षण दिया गया ताकि इससे जांच में सुधार हो सकें। मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज शर्मा ने टीबी मरीजों की बलगम की जांच माईक्रोस्कॉपी के बजाय सीबीनॉट व ट्रूनॉट मशीनों से करने के लिए कहा गया। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. वेद प्रकाश ने बताया कि प्रशिक्षण का उद्देश्य आगामी समय में इन्टेंसीफाईड टीबी मुक्त भारत अभियान का चलाया जाएगा जिसमें जिले में संभावित टीबी रोगियों की जांच की जाएगी साथ ही ट्रूनॉट मशीन जांच में आ रही त्रुटियो में सुधार करने के बारे में समझाना था। मोलबिया कम्पनी के इंजीनियर आशिष ने जांच में आ रही समस्याओं के कारण व सुधार के सिलसिले में विस्तार से बताया। साथ ही मशीन पर जांच करने का डेमोस्ट्रशन भी किया। मशीनों की नियमित रूप से केलिब्रेशन क्लीनिंग के बारे में भी जानकारी दी। डीआरटीबी कॉडिनेटर दारासिंह ने सैंपल कलेक्शन, सैंपल प्रोसिजर लेबलिंग व मासिक रिपोर्टिंग आदि के बारे में भी बताया।

राजस्थान जयपुर टाइम्स

जयपुर, गुरूवार
12 जून, 2025

शहीद भंवरलाल सारण का लूणासर गांव में सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार

बेटी ने दी शहीद पिता के पार्थिव शरीर को मुखाग्नि

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। जम्मू- कश्मीर के गुलमर्ग में रविवार ओर सोमवार की मध्य रात्रि को सिर में गोली लगने से सरदारशहर के लुणासर गांव के आर्मी के जवान 32 वर्षीय भंवरलाल सारण शहीद हो गए। मंगलवार रात्रि को शहीद भंवरलाल सारण के पार्थिव शरीर को सरदारशहर लाया गया। बुधवार सुबह शहर के तिरंगा स्टेडियम से तिरंगा यात्रा के रूप में रवाना होकर पार्थिव शरीर शहीद के पैतृक गांव लूणासर गांव पहुंचा। जहां पर सैन्य सम्मान के साथ शहीद भंवरलाल सारण की पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार किया गया। पार्थिव शरीर जैसे ही भंवरलाल सारण के घर पहुंच वैसे ही शहीद के घर में मौजूद 30 वर्षीय पत्नी तारामणी, पिता 70 वर्षीय उमाराम, 5 साल की बेटी रितिका और भाई मुकेश सहित परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। गांव के लोग परिजनों को ढांढ़स बंधाने में लगे हुए रहे। ग्रामीणों ने बताया कि बताया की भंवरलाल की मां सुखी देवी की मृत्यु करीब 8 साल पहले बीमारी के कारण हो गई थी। सन 2014 में भंवरलाल की शादी सरदारशहर के मालसर गांव की तारामणी से हुई थी। उनकी एक 5 वर्षीय बेटी रितिका है। जवान भंवरलाल तीन महीने पहले घर पर छुट्टियां बीताकर वापस ड्यूटी पर गए थे। घटना से दो दिन पहले 6 जून को बेटी रितिका से फोन पर बात हुई थी। उन्होंने कहा था कि बेटी खूब पढ़ाई करना तुझे आर्मी में बड़ा अफसर बनना है। भंवरलाल सारण 2015 में भारतीय सेना में भर्ती हुए थे। वर्तमान में वह नवी बटालियन डी राजपूताना बटालियन में जम्मू कश्मीर के गुलमार्ग सेक्टर में तैनात थे। शहीद भंवरलाल सारण का गांव की शमशान भूमि में सैन्य सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। इस अवसर पर सेना के जवानों ने गार्ड ऑफ ऑनर देकर शहीद भंवरलाल सारण को सलामी दी। इस अवसर पर सरदारशहर एसडीएम दिव्या चौधरी, भानीपुरा थाना अधिकारी रायसिंह सुथार, पंचायत समिति प्रधान प्रतिनिधि मधुसूदन राजपुरोहित, सभापति राजकरण चौधरी सहित जनप्रतिनिधियों ने शहीद भंवरलाल सारण के पार्थिव शरीर पर पुष्प चक्र अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। अंत में शाहिद भंवरलाल सारण की पुत्री 5 वर्षीय रितिक ने अपने पिता को मुखाग्नि दी। इस अवसर पर मौके पर मौजूद करीब 5 हजार लोगों ने एक साथ शहीद भंवरलाल सारण अमर रहे के नारे लगाए और शहीद भंवरलाल सारण पंचतत्व में विलीन हो गए हैं।

बाघसरा आथुणा में सार्वजनिक कुण्ड का किया लोकार्पण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। 'वन्दे गंगा- जल संरक्षण जन अभियान' के तहत जिले के सुजानगढ़ ब्लॉक में जलग्रहण विकास व भू-संरक्षण विभाग की ओर से बाघसरा आथुणा के तेजाजी मंदिर प्रांगण में निर्मित सार्वजनिक कुण्ड का लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर ग्रामीणों ने कलश यात्रा निकाली। इसके साथ ही नजदीकी गांव तेलाप में पाबूजी मंदिर परिसर में पौधरोपण, कलश यात्रा व पीपल पूजन किया गया। कार्यक्रम में एडीएम मंगलाराम पूनिया ने ग्रामीणों को 'वंदे गंगा- जल संरक्षण जन अभियान' की जानकारी देते हुए कहा कि जल संरचनाओं का संरक्षण व संवर्धन करें। पारंपरिक जल संरचनाओं के पानी का संरक्षण कर पौधरोपण व पशुधन के पीने के लिए पानी का उपयोग करें। एसडीएम ओमप्रकाश वर्मा ने कहा कि जल संरक्षण वर्तमान की आवश्यकता है। हमें जल संरचनाओं को संरक्षित करने के लिए संकल्पित रहना होगा। जलग्रहण विकास व भू-संरक्षण अधिशाषी अभियंता ने उपस्थितों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई।

गोपालपुरा में ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम, डूंगर बालाजी लवकुश वाटिका में जलस्त्रोतों की सफाई

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। 'वन्दे गंगा - जल संरक्षण जन अभियान' अंतर्गत बुधवार को जिले के सुजानगढ़ ब्लॉक के गोपालपुरा गांव (डूंगर बालाजी) स्थित लवकुश वाटिका में ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान संभागीय मुख्य वन संरक्षक अजमेर व चूरू वन विभाग जिला प्रभारी ख्याति माथुर, डीसीएफ वीरेंद्र सिंह, एसीएफ महेंद्र लेखाला, रेंजर ओकेश यादव, उमेश बागोतिया आदि की उपस्थिति में लवकुश वाटिका स्थित जल स्त्रोतों की सफाई की गई। इसके पश्चात परिसर में पीपल एवं बरगद के पौधे लगाए। जिला प्रभारी माथुर ने उपस्थितों को तुलसी व पीपल के वितरित किए और जल संरक्षण का संकल्प दिलाया। उन्होंने मानसून के दौरान अधिकाधिक जल संरक्षण व पौधरोपण करने का संकल्प दिलाया। तत्पश्चात वाटिका में पक्षियों के लिए परिंडे लगाए।

छापर व सालासर रोड़ पर सौंदर्यीकरण कार्य शुरू

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़.(नि.सं.)। स्थानीय छापर रोड के सौंदर्यीकरण के कार्य को शुरू कर दिया गया है। जिसके तहत डिवाईडर युक्त रोड पर रोड लाईट्स लगाने का कार्य आरंभ किया गया है। सभापति निलोफर गौरी ने बताया कि सालासर रोड पर भी डिवाईडर पर लाईटिंग करवाई जाएगी। शुभारंभ के दौरान सभापति निलोफर गौरी, पार्षद प्रतिनिधि अमजद खान, आसिफ नसवान आदि मौजूद रहे। सहायक अभियंता विक्रम जोरवाल को कार्य गुणवत्ता पूर्वक करवाने और विद्युत पोलों के बीच तकनीकी दूरी की निर्धारित सीमा रखने के निर्देश सभापति की ओर से दिए गए। सभापति ने बताया कि कहा कि आम जन भावना बहुत समय से बनी थी कि शहर के मुख्य मार्गो पर सही रोशनी व्यवस्था नहीं है, इसके लिए डिवाइडर पर स्ट्रीट लाइटिंग का कार्य जनहित में होना चाहिए। इसी को मध्यनजर रखते हुए आबकारी थाने से प्रवेश द्वार तक और सालासर रोड पर चुंगी नाका चौराहे से प्रवेश द्वार तक यह कार्य किया जाएगा।

जिला चिकित्सालय में चिकित्सकों एवं स्टॉफ ने किया श्रमदान

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं.) यहाँ के राजकीय बीडीएम जिला चिकित्सालय में जिला कलक्टर कल्पना अग्रवाल के निर्देशानुसार पीएमओ डॉ. चैतन्य रावत के निर्देशन में वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान पखवाड़ा के मध्यनजर चिकित्सा संस्थान परिसर में स्टॉफ सदस्यों द्वारा श्रमदान किया गया। जिसके अन्तर्गत चिकित्सालय के पार्क, दोनों तरफ के रास्तों एवं छत की साफ-सफाई की गई। जिसमें समस्त चिकित्सक, नर्सिंग अधिकारी, लैब स्टॉफ, एक्स-रे स्टॉफ, हैल्पर, सफाईकर्मी, एमएनडीवाई स्टॉफ, फार्मासिस्ट, कम्प्यूटर ऑपरेटर समेत सभी ने श्रमदान किया। इस मौके पर पीएमओ डॉ. चैतन्य रावत ने कहा कि साफ-सफाई अभियान प्रत्येक माह में एक बार आवश्यक रूप से किया जावेगा, जिससे चिकित्सालय परिसर में स्वच्छता बनी रहेगी एवं मरीजों को संक्रमण का खतरा नहीं रहेगा। नर्सिंग अधीक्षक ने कहा कि चिकित्सालय में आने वाले मरीजों एवं उनके परिजनों को भी साफ-सफाई हेतु जागरूक किया जावेगा।

महर्षि ने मुख्य गैनाणी एवम नालों की सफाई व्यवस्था का किया निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। पूर्व विधायक अभिनेश महर्षि ने मंगलवार को शहर की मुख्य गैनाणी की साफ़ सफाई व नालों की सफाई व्यवस्था का निरीक्षण कर आगामी मानसून में होने वाली बरसाती पानी की निकासी व्यवस्था को दुरस्त करने के अधिकारीयों को निर्देश दिए। महर्षि ने कहा कि गैनाणी व नालो की साफ़ सफाई की व्यवस्था निरन्तर चल रही है आगामी तीन-चार दिनों में पूरी होने की संभावना है। बरसाती पानी की ड्रेनेज के लिए नए हाई पॉवर की मोटर के पंप सेट तैयार हो गए है। जिससे बरसाती पानी की निकासी का कार्य और अधिक गतिशील होगा। महर्षि ने पानी निकासी के ड्रेनेज पंप सेट को शुरू करवाकर पानी निकासी व्यवस्था की प्रगति का निरीक्षण भी किया। गौरतलब है कि पूर्व विधायक महर्षि ने पिछले कार्यकाल में ड्रेनेज के लिए 35 करोड़ रुपए पास करवाए थे, वह कार्य तेज गति से प्रगति पर है। आने वाले मानसून पर शहरवासियों को मुख्य बाजार में बरसाती पानी निकासी व्यस्था में काफी राहत मिलने वाली है। इस दौरान निरीक्षण में महर्षि के साथ रुडिप के अधिकारी, नगरपालिका ईओ सहित अन्य अधिकारी, भाजपा नेता अर्जुन सिंह फ्रांसा, दीनदयाल पारीक, रामगोपाल चौधरी,ओम महर्षि, प्रवीण शर्मा, बलवीर स्वामी सहित कई भाजपा कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

अतिरिक्त निदेशक डॉ. रामावत ने किया योग के पूर्वाभ्यास का निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला प्रशासन और आयुर्वेद विभाग की ओर से 21 जून को होने वाले अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियों को लेकर जिले में अनेक स्थानों पर योग का पूर्व अभ्यास करवाया जा रहा है। कार्यक्रम को लेकर बुधवार को आयुर्वेद विभाग बीकानेर संभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. घनश्याम रामावत ने योग के पूर्वाभ्यास का निरीक्षण किया। इस दौरान आपणी पाठशाला योग शिविर में अतिरिक्त निदेशक डॉ. घनश्याम रामावत ने स्वयं भी योग किया। सहायक निदेशक डॉ. मनीष शर्मा ने बताया कि रामावत ने योग व प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र चूरू, आपणी पाठशाला व अग्रसेन नगर पार्क में योग शिविर का निरीक्षण किया और आमजन से अधिक से अधिक संख्या में योग दिवस में शामिल होने का आह्वान किया। इस दौरान उप निदेशक डॉ. सत्यवीर सिंह, डॉ. रामकृष्ण शर्मा, डॉ. संतरा जाट, वरिष्ठ सहायक आशीष भाटी सहित विभाग के अधिकारी- कर्मचारी उपस्थित रहे।

संकट मोचक की प्राण प्रतिष्ठापन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। नवलगढ़ क्षेत्र के गावं नवलडी में बुधवार को नौलखा बालाजी मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम संतो के सानिध्य में संपन्न हुआ। गणेश सर्व दर्शन अखाड़ा अध्यक्ष ब्रह्मचारी गणेश चैतन्य महाराज के सानिध्य में नवलडी ग्राम में बालाजी महाराज व भगवान श्री गणेश जी महाराज, जगदंबा माता पार्वती, कार्तिकेय सहित शिव परिवार की नवनिर्मित मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा की गई। तीन दिवसीय मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पूजन के प्रमुख आचार्य बंटी महाराज हनुमान पंडित की ओर से मूर्तियों का रात्रि सयन व अभिषेक षोडशोपचार विधिपूर्वक संपन्न कराया गया। मुख्य यजमान योगेश जांगिड़ एवं डॉक्टर विनोद की ओर से यज्ञ विधि व पुष्प वर्षा के साथ मंदिर की चारों ओर फेरी करके संतों के सानिध्य मे मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई। भक्तों ने यज्ञ में आहुतियां दी व बालाजी महाराज का जयकारा लगाते हुए पुष्प वर्षा के साथ बालाजी महाराज से सभी के लिए शुभकामना की प्रार्थना की। बालाजी महाराज की मूर्ति का नाम नौलखा बालाजी रखा गया, और प्रार्थना की गई। प्राकृतिक आपदाएं नहीं आए अच्छी बारिश हो फसल अच्छी हो सबका भला हो। कार्यक्रम में उपस्थित मातृशक्ति की ओर से बालाजी महाराज के रात्रि जागरण के साथ खूब भजन गाकर बालाजी महाराज को रिझाया। ब्रह्मानंद नारनौलिया विनोद डॉक्टर, योगेश जांगीड़, राधेश्याम, बिशनाराम, विद्याधर, मुकेश डॉक्टर, मुखराम, राजेन्द्र, श्रीराम, बनवारी लाल, बाबूलाल, रणजीत, विजयपाल, संतकुमार, विनोद कार्यक्रम में मौजूद रहे।

झुंझुनूं में सेना के हवलदार की पीट-पीटकर हत्या

ड्यूटी पर जाने के लिए घर से निकले थे; 2 युवकों ने किडनैप कर बेहरमी से पीटा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं में सेना के हवलदार की पीट-पीटकर हत्या का मामला सामने आया है। हवलदार विक्रम सिंह (40) छुट्टी पर घर आए हुए थे। मंगलवार रात को वह ड्यूटी जॉइन करने के लिए जा रहे थे। घर से निकलने के बाद रास्ते में 2 युवकों ने उनका किडनैप कर लिया। दोनों युवक हवलदार को स्कॉर्पियो में डालकर अपने घर ले गए और बेरहमी से मारपीट की। इसके बाद हवलदार को गंभीर हालत में घर के बाहर पटक दिया। जवान को अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मामला सूरजगढ़ थाना क्षेत्र के पलोता का बास गांव का है। थानाधिकारी ने बताया कि मृतक के भाई विनोद कुमार ने रिपोर्ट दी है, जिसमें बताया- विक्रम सिंह पुत्र जगमाल सिंह निवासी पालोता का बास, 18 राज राइफल्स में हवलदार पद पर तैनात थे और वर्तमान में उनकी पोस्टिंग पंजाब के अबोहर में थी। भाई ने बताया कि विक्रम सिंह 7 जून को छुट्टी पर गांव आए थे। 10 जून को वह ड्यूटी पर जाने के लिए घर से निकले थे। रास्ते में स्कॉर्पियो सवार गांव के ही दो युवकों ने उन्हें जबरन गाड़ी में बैठाया और खुद के घर ले जाकर बेरहमी से मारपीट की। रात करीब 9 बजे हमें घटना की जानकारी मिली तो हम मौके पर पहुंचे। आरोपियों ने विक्रम सिंह को गंभीर हालत में घर से बाहर लाकर पटक दिया। थानाधिकारी हेमराज मीणा ने बताया कि परिजनों की शिकायत पर हत्या का मामला दर्ज कर लिया है और दो युवकों को डिटेन कर उनसे पूछताछ की जा रही है। हत्याकांड को लेकर आरोपियों की मोबाइल लोकेशन, कॉल डिटेल्स और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सबूत भी खंगाले जा रहे हैं। जानकारी के अनुसार हवलदार विक्रम सिंह 1 साल बाद रिटायर होने वाले थे।

वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत आयोजित हुये ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम

किया श्रमदान और पौधारोपण, जल संरक्षण के लिये किया प्रेरित

कोटपूतली(निसं.) वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के अंतर्गत जल संचयन व पर्यावरण संरक्षण हेतु आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में मंगलवार को जलग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग द्वारा पंचायत समिति कोटपूतली, बानसूर, बहरोड़, नीमराणा में अवलोकन एवं लोकार्पण समारोह आयोजित किये गये। साथ ही एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण भी किया गया।

ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम आयोजित, विभिन्न कार्यों का हुआ लोकार्पण- वॉटरशेड विभाग के अधीक्षण अभियंता हरिमोहन बैरवा ने बताया कि जिले में विभिन्न ब्लॉक पर कार्यक्रमों का आयोजन कर विभिन्न कार्यों का लोकार्पण किया गया। ब्लॉक कोटपूतली में अमृत सरोवर रपटा के पास का लोकार्पण प्रधान नेहा रावत, सरपंच देवकरण मान एवं पचायत समिति सदस्य सजंय आर्य द्वारा फीता काटकर किया गया। पंचायत समिति बानसूर की ग्राम पंचायत सबलपुरा के ग्राम मंगलवा में ब्लॉक स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें ग्रामीणों को वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के बारे में अवगत कराया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान के अर्न्तगत निर्मित खेल मैदान के पास एनीकट निर्माण का लोकार्पण सरपंच ग्राम पंचायत सबलपुरा एवं रामपुर द्वारा फीता काटकर किया गया। इस एनिकट की क्षमता 15 टीसीएम है और वर्षा जल एकत्रित होने से आसपास के गाँवो में में जलस्तर बढ़ेगा और कृषि एवं पशुओं को पीने के लिए पानी उपलब्ध होगा। एसडीएम बानसूर एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों द्वारा ग्रामीणों के साथ मिलकर गुगा बाबा जोहड़ में श्रमदान किया गया। साथ ही एसडीएम, सरपंचों, सहायक अभियंता जलग्रहण विकास एवं भू संरक्षण बानसूर द्वारा एक पेड़ माँ के नाम अभियान के अर्न्तगत वृक्षारोपण किया गया। इस दौरान एसडीएम अनुराग हरित, सरपंच सबलपुरा विजेन्द्र यादव, सरपंच रामपुर मुकेश जिलोवा, सहायक अभियंता जलग्रहण विकास एवं भू संरक्षण उपेन्द्र कुमार एवं ग्रामीण मौजूद रहे। ब्लॉक बहरोड़ के ग्राम पंचायत ढूंढारिया के ग्राम चांदी चाना में तलाई निर्माण, हींगवाली माता के पास कार्य का लोकार्पण किया गया। ब्लॉक नीमराणा में ग्राम पंचायत नंगली बलाई में रिचार्ज शाफ्ट रोलिया जोहड कार्य का लोकार्पण प्रधान संतोष बलवान यादव द्वारा किया गया। कार्यक्रमों में एसडीएम, विकास अधिकारी एवं ब्लॉक स्तर के सभी कर्मचारी उपस्थित हुये। सभी ने श्रमदान कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम स्थल पर एक पेड माँ के नाम अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण भी किया गया। अधीक्षण अभियंता ने ब्लॉक नीमराणा में जनसमूह को संबोधित करते हुये कहा कि राज्य में वर्षा की मात्रा सीमित है तथा भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन हो रहा है, ऐसे में जल संरक्षण हेतु अमृत सरोवर जैसे प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने बताया कि अभियान के तहत जिले में जोहड निर्माण, एमपीटी, एनिकट पौधारोपण तथा अन्य जल संरक्षण कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने बताया कि 5 से 20 जून तक चलने वाले इस अभियान का जिले में शानदार आगाज हुआ है और जिला प्रदेशभर में अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।